RNI: UPHIN/2015/60902

राजधानी से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

www.theachivertimes.com

डाक पंजीयन संख्या

एस.एस.पी.एल.डब्लू/एन

पी.439/2015-2017

वर्ष : 9 अंक : 266

पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रुपया

लखनऊ, शनिवार, 20 जनवरी, 2024

द अचीवर टाइम्स

भगवान राम को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बनाएगा रेलवे

8300 स्टेशनों में जलेंगे दीये LED पर दिखेगी लाइव प्राण प्रतिष्ठा

एजेंसी

नई दिल्ली। रेलवे ने अयोध्या के प्रति सनातन लगाव के सहारे भारतीय संस्कृति को उभार देने के साथ-साथ भगवान श्रीराम को राष्ट्रीय एकता का भी प्रतीक बनाने-बताने की पहल की है। पांच सौ वर्ष की लंबी प्रतीक्षा और संघर्ष के बाद श्रीराम लला के विराजमान होने की खुशी में देश के सभी 8300 रेलवे स्टेशनों में दीये जलाए जाएंगे और उन्हें रंग-बिरंगी रोशनी से सजाया जाएगा। 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा के दिन छोटे-बड़े सभी रेलवे स्टेशनों और हाल्टों पर नौ हजार एलईडी स्क्रीन के माध्यम से समारोह का सुबह आठ बजे से सीधा प्रसारण होगा, जो समारोह की समाप्ति के बाद भी पूरे दिन जारी रहेगा। बड़े स्टेशनों में एक से ज्यादा एलईडी स्क्रीन लगाई जाएगी। रेलवे अपने अभियान को 22 जनवरी के बाद भी जारी रखेगा। अयोध्या दर्शन के नाम पर अगले दो महीने तक आस्था ट्रेनें चलाई जाएंगी,

- 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा के दिन छोटे-बड़े सभी रेलवे स्टेशनों और हाल्टों पर नौ हजार एलईडी स्क्रीन के माध्यम से समारोह का सुबह आठ बजे से सीधा प्रसारण होगा जो समारोह की समाप्ति के बाद भी पूरे दिन जारी रहेगा। बड़े स्टेशनों में एक से ज्यादा एलईडी स्क्रीन लगाई जाएगी। रेलवे अपने अभियान को 22 जनवरी के बाद भी जारी रखेगा।
- भगवान राम को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बनाएगा रेलवे, 8300 स्टेशनों में जलेंगे दीये; स्क्रीन पर दिखेगी लाइव प्राण प्रतिष्ठा
- श्रद्धालुओं की उपलब्धता के आधार पर ट्रेनों की संख्या निर्धारित

जो देशभर के सभी जिलों से होकर गुजरेंगी। तैयारी है कि कोई भी शहर या जिला आस्था ट्रेनों के दायरे से बाहर न रह पाए। अयोध्या के लिए सीधी रवाना होने वाली ट्रेनों का ठहराव अनावश्यक रूप से किसी अन्य स्टेशन पर नहीं होगा। आस्था ट्रेनों में 22 कोच होंगे। किंतु जरूरत के अनुसार कम या ज्यादा किया जा सकेगा। टिकट की बुकिंग आईआरसीटीसी के जरिए होगी। टिकट राउंड ट्रिप के लिए लेना होगा। मतलब वापसी की बुकिंग भी करानी होगी। सुरक्षा कारणों के चलते ट्रेन की सूचना सार्वजनिक नहीं की जाएगी। रेलवे मंत्रालय ने उन स्टेशनों को खास तौर पर सजाने का निर्देश दिया है, जिनके नाम के साथ राम शब्द जुड़ा हुआ है। देश में ऐसे स्टेशनों की कुल संख्या 354 है। इनमें से 55 ऐसे स्टेशन हैं, जिनके नाम के आगे राम शब्द लगा है। उत्तर प्रदेश के आठ, बिहार के पांच एवं झारखंड के दो समेत देशभर के 55 ऐसे स्टेशनों को चिह्नित किया जा चुका है, जिनका नाम राम से शुरू होता है। वहीं, राम के नाम से सबसे ज्यादा स्टेशन दक्षिण भारत में हैं। आंध्र प्रदेश में 55 स्टेशनों के नाम के साथ राम शब्द जुड़ा है। तमिलनाडु में ऐसे स्टेशनों की संख्या 54 है। रेलवे मंत्रालय का मानना है कि इस पहल से देश की एकता और अखंडता की भावना को मजबूती मिलेगी।

करीब एक हजार से अधिक विशेष ट्रेनें चालाएगा रेलवे

श्रद्धालुओं की उपलब्धता के आधार पर ट्रेनों की संख्या निर्धारित होगी। वैसे रेलवे ने प्रारंभिक तौर पर एक हजार विशेष ट्रेनों की तैयारी कर रखी है। सभी 18 रेलवे जोनों को तैयार रखने का निर्देश दिया गया है। जिस जिले या शहर में ज्यादा श्रद्धालु टिकट बुक कराएंगे, वहां से पूरी ट्रेन खुलेगी। जहां श्रद्धालुओं की संख्या कम होगी वहां से गुजरने वाली ट्रेनों में अतिरिक्त बोगियां लगाई जाएंगी। किस जिले से कौन सी ट्रेन कब गुजरेगी, इसके निर्धारण की जिम्मेवारी गृह मंत्रालय को दी गई है।

हिना अरमान ने बनाई विश्व की सबसे लंबी बांसुरी जाएगी अयोध्या

एजेंसी

पीलीभीत। श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में अपने-अपने जिले की प्रसिद्ध वस्तुओं को अयोध्या भेजा जा रहा है। इसी क्रम में पीलीभीत से 21.6 फीट लंबी बांसुरी को अयोध्या भेजा जाएगा। बांसुरी को वहां के संग्राहलय में रखा जाएगा। इस बांसुरी को शहर के मशहूर कारीगर मरहूम नवाब अहमद की पत्नी हिना परवीन और उनके पुत्र अरमान नबी व उनके चाचा शमशाद ने साथियों के साथ तैयार किया है।

हिना परवीन ने बताया कि यह बांस कई वर्षों से किसी ऐतिहासिक क्षण के लिए रखा था, अयोध्या धाम में प्रभु रामलला प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव होने जा रहा है। इसके बाद 10 दिनों में भव्य बांसुरी को संगठन को सौंप दिया। शुक्रवार के कार्यक्रम में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ब्रज प्रांत के प्रांत प्रचारक हरीश रौतेला ने इस बांसुरी का पूजन किया। 26 जनवरी को यह बांसुरी अयोध्या धाम भेजी जाएगी। जहां इसे संग्राहलय में रखी जाएगी। इस मौके पर विभाग संघचालक ओमप्रकाश गंगवार, प्रांत घोष प्रमुख ललित कुमार, विभाग

प्रचारक धर्मेंद्र भारत, विभाग कार्यवाह मिथलेश कुमार, सह विभाग कार्यवाह भद्रपाल गंगवार के अलावा पूर्व सांसद बलराज पासी, जिला अध्यक्ष संजीव प्रताप सिंह, बरखेड़ा विधायक स्वामी प्रवक्तानंद, पूरनपुर विधायक बाबू राम पासवान, बीसलपुर विधायक विवेक वर्मा, पूर्व विधायक किशन लाल राजपूत, जिला पंचायत अध्यक्ष पति गुरुभाग सिंह,नगर पालिका अध्यक्ष आस्था अग्रवाल, ब्लॉक प्रमुख अमरिया निशांत सिंह,ब्लॉक प्रमुख सभ्यता वर्मा, स्वतंत्र देवल तमाम लोग मौजूद रहे। पीलीभीत के लाल रोड निवासी अरमान ने बताया कि 2021 में उन्होंने 16 फीट की बांसुरी बनाई थी। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड में रिकॉर्ड दर्ज है। यह सबसे लंबी बांसुरी थी। अब यह 21.6 फीट की बांसुरी बनाई है जो विश्व की सबसे लंबी बांसुरी होगी। मुस्लिम परिवार की तरफ से बनाई गई बांसुरी कुछ अलग ही है। अरमान बताते हैं कि बांसुरी बनाना उनका खानदानी काम है। असम के जिस बांस से यह बांसुरी बनाई गई है वह करीब 20 साल पहले से रखा था। इस बांस को किसी विशेष प्रयोजन के लिए रखा था। 2021 में जब सबसे लंबी बांसुरी बनाई तब इसका प्रयोग करने जा रहे थे लेकिन दूसरा बांस मिल गया तो उससे बना दी। सोचा भी नहीं था कि भगवान राम की नगरी के लिए इस बांस का प्रयोग होगा। बांस की खासियत यह है कि इसका व्यास यानी गोलाई 3.5 इंच है। इतनी गोलाई के बांस अब नहीं आते। बांसुरी बनाने में 10 दिन लग गए। बांसुरी की खासियत यह है कि दोनों तरफ से यह बज सकती है। दोनों तरफ से सातों सुर इसमें डाले गए हैं। बनाने में करीब 70-80 हजार रुपये का खर्च आया। हैंड वर्क किया गया है। सोशल मीडिया पर हिना व उनके बेटे अरमान द्वार तैयार की गई बांसुरी काफी तेजी से वायरल हो रही है। इस बांसुरी को ट्रक से अयोध्या भेजा जाएगा।

एक नज़र

बाट जोहते-जोहते थक रहे मुसाफिर

कोहरे के कारण 220 फ्लाइट और 68 ट्रेनें प्रभावित

नई दिल्ली। कोहरे और कम दृश्यता के चलते रेल यात्रियों की परेशानी शुक्रवार को भी हुई। दिल्ली के विभिन्न स्टेशनों पर पहुंचने वाली 68 ट्रेनें कोहरे से प्रभावित हुई हैं। नई दिल्ली-दरभंगा बिहार संपर्क क्रांति एक्सप्रेस गुरुवार दोपहर एक बजे की जगह 21.30 घंटे की देरी से शुक्रवार सुबह 10.30 बजे चली। वहीं गुरुवार को शाम चार बजे चलने वाली नई दिल्ली-हैदराबाद तेलंगाना एक्सप्रेस 17 घंटे की देरी से शुक्रवार को सुबह नौ बजे रवाना हुई। बनारस वंदे भारत एक्सप्रेस (22415/22416) शुक्रवार को निरस्त कर दी गई।

हैदराबाद-नई दिल्ली तेलंगाना एक्सप्रेस-9.40 घंटे, खजुराहो-कुरुक्षेत्र गीता जयंती एक्सप्रेस-साढ़े नौ घंटे, योग नगरी ऋषिकेश-पुरी कलिंग उत्कल एक्सप्रेस-सात घंटे, पुरी-नई दिल्ली पुरुषोत्तम एक्सप्रेस-पौने सात घंटे, रानी कमलापति-हजरत निजामुद्दीन भोपाल एक्सप्रेस-छह घंटे, बरौनी-नई दिल्ली हमसफर एक्सप्रेस क्लोन-पौने छह घंटे, दरभंगा-नई दिल्ली हमसफर क्लोन एक्सप्रेस-साढ़े पांच घंटे, कामाख्या-पुरानी दिल्ली ब्रह्मपुत्र मेल-साढ़े पांच घंटे, रायगढ़-हजरत निजामुद्दीन गोंडवाना एक्सप्रेस-सवा पांच घंटे, यशवंतपुर-हजरत निजामुद्दीन संपर्क क्रांति एक्सप्रेस-पौने पांच घंटे, विशाखापट्टनम-नई दिल्ली एपी एक्सप्रेस-साढ़े चार घंटे, जयनगर-नई दिल्ली स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस-साढ़े चार घंटे, दुर्ग-हजरत निजामुद्दीन छत्तीसगढ़ संपर्क क्रांति एक्सप्रेस-पौने चार घंटे, हावड़ा-नई दिल्ली पूर्वा एक्सप्रेस-साढ़े तीन घंटे, बेंगलुरु सिटी-हजरत निजामुद्दीन राजधानी-साढ़े तीन घंटे की देरी से दिल्ली पहुंची। इसके अलवार कई अन्य ट्रेनें भी कोहरे के कारण प्रभवित हुई हैं।

आज होगी ज्ञानवापी के सील वजूखाने की सफाई

सुप्रीम कोर्ट के आदेश से जिलाधिकारी की देखरेख में होगा काम

एजेंसी

वाराणसी। सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर ज्ञानवापी परिसर स्थित सील वजूखाने की सफाई जिलाधिकारी एस. राजलिंगम की देखरेख में शनिवार की सुबह नौ बजे से शुरू होगी। वजूखाने से मृत मछलियों को बाहर निकाला जाएगा। जिंदा मछलियां अंजुमन इंतेजामिया मसाजिद कमेटी के संयुक्त सचिव एसएम यासीन को सौंप दी जाएंगी। वजूखाने की सफाई के लिए नगर निगम ने 18 सफाईकर्मियों की टीम गठित की है। यह टीम मजिस्ट्रेट की निगरानी में वजूखाने की सफाई करेगी। जिला प्रशासन का कहना है कि वजूखाने की सफाई का काम दो से ढाई घंटे में पूरा कर लिया जाएगा। पंप लगाकर वजूखाने का पूरा पानी निकाला जाएगा। उसकी काई और गंदगी को साफ कर उसमें चूने का छिड़काव किया जाएगा। सफाई के दौरान सील वजूखाने स्थित शिवलिंग जैसी आकृति (हिंदू पक्ष के दावे के अनुसार) को कोई नुकसान न पहुंचे और किसी की धार्मिक भावनाएं आहत न होने पाएं, इसका पूरा ध्यान रखा जाएगा। सील वजूखाने की सफाई के दौरान मां श्रृंगार गौरी केस के वादी पक्ष और मसाजिद कमेटी के दो-दो प्रतिनिधि मौजूद रहेंगे। श्री काशी विश्वनाथ धाम के गेट नंबर चार के बाहर सुरक्षा व यातायात व्यवस्था के मद्देनजर स्थानीय पुलिस, ट्रैफिक पुलिस और पीएसी के जवान तैनात रहेंगे।

पीएम मोदी के कार्यकाल में पूर्वोत्तर की हिंसक घटनाएं 73 फीसदी घटीं: अमित शाह

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने के बाद पूर्वोत्तर भारत में हिंसा की घटनाओं में 73 फीसदी की कमी आई है। पूर्वोत्तर परिषद के 71वें पूर्ण सत्र में गृह मंत्री शाह ने कहा, 2004 से 2014 के दौरान 11 हजार से अधिक हिंसा की घटनाएं रिपोर्ट की गई। उन्होंने कहा कि 2014 में पीएम मोदी के सत्ता में आने के बाद हिंसक घटनाओं में 73 फीसदी गिरावट दर्ज की गई है। उन्होंने शिलांग में उत्तर पूर्वी परिषद के 71वें पूर्ण सत्र में दावा किया कि 2014 से 2023 के बीच 3114 हिंसक घटनाओं की रिपोर्ट दर्ज की गई।शाह ने कहा कि पूर्वोत्तर में 2004 से 2014 के दौरान 11,121 हिंसक घटनाएं हुईं। सुरक्षाबलों की मौतें 71 प्रतिशत घटकर 458 से 132 हो गई। आम नागरिकों की मौत के मामलों में 86 प्रतिशत गिरावट आई। उग्रवाद की घटनाएं भी उल्लेखनीय रूप से कम हुई हैं।

राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता बहाल करने के खिलाफ दायर याचिका खारिज

याचिकाकर्ता पर कोर्ट ने एक लाख रुपये का लगाया जुर्माना

एजेंसी

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने ''निरर्थक याचिकाएं दाखिल करने को लेकर कड़ा रुख अपनाते हुए कांग्रेस नेता राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता बहाल करने वाली अधिसूचना को रद्द करने के अनुरोध संबंधी याचिका शुक्रवार को खारिज कर दी और याचिकाकर्ता पर एक लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया। उच्चतम न्यायालय ने 'मोदी उपनाम को लेकर की गई टिप्पणी के संबंध में 2019 में राहुल गांधी के खिलाफ दर्ज आपराधिक मानहानि मामले में चार अगस्त, 2023 को उनकी दोषसिद्धि पर रोक लगा दी थी।

लखनऊ निवासी अशोक पांडे द्वारा दाखिल याचिका न्यायमूर्ति बी. आर. गवई और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ के समक्ष सुनवाई के लिए आई। पीठ ने इस बात पर गौर किया कि मामले की सुनवाई के लिए दो बार बुलाये जाने के बावजूद पांडे उसके समक्ष पेश नहीं हुए। इसने याचिकाकर्ता द्वारा दायर अलग-अलग याचिकाओं पर अदालत द्वारा सुनाए गए दो पिछले आदेशों का भी हवाला दिया। पीठ ने कहा कि उच्चतम न्यायालय ने पिछली याचिकाओं को क्रमशः पांच लाख रुपये और एक लाख रुपये का जुर्माना लगाकर खारिज कर दिया था। पीठ ने याचिका को खारिज करते हुए कहा, ''ऐसी निरर्थक याचिकाएं दायर करने से न केवल अदालत का बल्कि, पूरी रजिस्ट्री का कीमती समय बर्बाद होता है।

राहुल गांधी को सुनाई गई थी दो साल की सजा

कांग्रेस नेता को 24 मार्च को संसद सदस्य के रूप में तब अयोग्य घोषित कर दिया गया था, जब गुजरात की एक अदालत ने उन्हें 'मोदी उपनाम के बारे में की गई टिप्पणियों के लिए दोषी ठहराया था और आपराधिक मानहानि के लिए दो साल की कैद की सजा सुनाई थी। उच्च न्यायालय ने दोषसिद्धि पर रोक लगाने की गांधी की याचिका यह कहते हुए खारिज कर दी थी कि ''राजनीति में शुचिता समय की मांग है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नेता पूर्णेश मोदी ने 13 अप्रैल 2019 को कर्नाटक के कोलार में एक चुनावी सभा में 'मोदी% उपनाम के संबंध में की गई कथित विवादित टिप्पणी को लेकर राहुल गांधी के खिलाफ आपराधिक मानहानि का मुकदमा दायर किया था. गांधी ने सभा में टिप्पणी की थी कि ''सभी चोरों का एक ही उपनाम मोदी कैसे हो सकता है?

लोकसभा अध्यक्ष सहित इन्हें बनाया था प्रतिवादी

याचिकाकर्ता ने याचिका में लोकसभा अध्यक्ष, भारत सरकार, निर्वाचन आयोग और राहुल गांधी को प्रतिवादी बनाया था। पीठ ने इस बात पर भी गौर किया कि याचिकाकर्ता द्वारा उठाया गया मुद्दा उसकी पिछली याचिका में उठाये गये मुद्दे जैसा ही था और पिछले साल अक्टूबर में एक लाख रुपये के जुर्माने के साथ इस याचिका को खारिज कर दिया गया था। अक्टूबर में खारिज की गई याचिका में याचिकाकर्ता ने राहुल गांधी की लोकसभा सदस्यता को बहाल किये जाने को चुनौती दी थी।

ईरान-पाकिस्तान के विदेश मंत्रियों की तनाव कम करने पर बनी सहमति

एजेंसी

इस्लामाबाद / तेहरान। पाकिस्तान और ईरान के बीच तनाव कम करने पर समहति बन गई है। ईरान के बलूचिस्तान में आतंकवादी ठिकानों पर हवाई हमलों के बाद दोनों देशों के बीच तनाव बढ़ गया था। संबंधों की तल्खी के बीच ईरान और पाकिस्तान के विदेश मंत्रियों ने शुक्रवार को फोन पर बातचीत की। इसके बाद दोनों देश तनाव को कम करने और आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में समन्वय को मजबूत करने पर सहमत हुए। साथ ही दोनों पक्षों ने एक-दूसरे पर सैन्य हमलों के बाद पटरी से उतरे संबंधों को सुधारने पर भी चर्चा की और मौजूदा हालात की समीक्षा की है। दोनों देशों के राजदूतों की वापसी पर भी चर्चा हुई। पाकिस्तान के विदेश कार्यालय (एफओ) ने एक बयान में कहा कि विदेश मंत्री जलील अब्बास जिलानी ने अपने ईरानी समकक्ष हुसैन अमीर-अब्दुल्लाहियन से टेलीफोन पर बात की और पारस्परिक विश्वास व सहयोग की भावना के आधार पर ईरान के साथ काम करने की देश की इच्छा जताई। बयान में कहा गया है कि पाक विदेश मंत्री ने इस बात पर जोर दिया

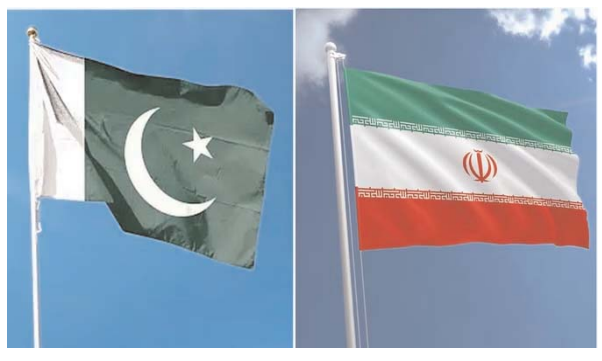

कि एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का सम्मान किया जाना चाहिए। एफओ ने कहा कि दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हुए कि आतंकवाद विरोधी अभियान और आपसी चिंता के अन्य मुद्दों पर सहयोग और समन्वय को मजबूत किया जाना चाहिए। दोनों पक्ष तनाव कम करने पर भी सहमत हुए। दोनों नेताओं ने पड़ोसियों के बीच घनिष्ठ भाईचारे के संबंधों को भी रेखांकित किया।

समाचार एजेंसी रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक दोनों देशों के मंत्रियों की बातचीत के दौरान तनाव कम करने के प्रयास करने पर जोर दिया गया। इस रिपोर्ट के मुताबिक शुक्रवार को पाकिस्तान ने तुर्किये से भी इस संबंध में बात की। पाकिस्तान ने साफ किया कि उसे ईरान के साथ तनाव बढ़ाने में कोई दिलचस्पी नहीं है। पाकिस्तान ने व्यापक सुरक्षा समीक्षा के संकेत भी दिए हैं। विदेश मंत्री जिलानी ने आपसी विश्वास और सहयोग की भावना के आधार पर काम करने की भावना से भी ईरानी समकक्ष को अवगत कराया। उन्होंने ईरान के साथ सुरक्षा मुद्दों पर घनिष्ठ सहयोग की जरूरत भी बताई।

ईरानी समकक्ष के साथ बातचीत से पहले पाकिस्तानी विदेश मंत्री जिलानी और तुर्किये के उनके समकक्ष के बीच भी फोन पर बात हुई। इस संबंध में पाकिस्तान के प्रधानमंत्री कार्यालय के सूत्र के हवाले से रॉयटर्स की रिपोर्ट में बताया गया कि तुर्किये और पाकिस्तान की बातचीत उस समय हुई जब पाकिस्तान के कार्यवाहक प्रधानमंत्री अनवर उल हक काकर ने राष्ट्रीय सुरक्षा समिति की बैठक शुरू की। इसमें देश के सभी सैन्य सेवा प्रमुख भी मौजूद रहे।

इसके बारे में पाकिस्तान के सूचना मंत्री मुर्तजा सोलांगी ने कहा, बैठक का मकसद ईरान और पाकिस्तान के बीच हालिया घटनाओं के बाद व्यापक राष्ट्रीय सुरक्षा समीक्षा की गई। हालात की गंभीरता को भांपते हुए पीएम काकर ने स्विटजरलैंड के दावोस में विश्व आर्थिक मंच की यात्रा को बीच में ही छोड़ दी। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने दोनों देशों से अधिकतम संयम बरतने की अपील की है। अमेरिका ने भी संयम बरतने का आह्वान किया है। हालांकि राष्ट्रपति जो बाइडन ने यह भी कहा कि दोनों देशों के टकराव से साफ होता है कि इस क्षेत्र में ईरान को पसंद नहीं किया जाता है। ईरान-पाकिस्तान टकराव के कारण बढ़े तनाव से जुड़ी खबरों के मुताबिक पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने बताया कि विदेश मंत्री जलील अब्बास जिलानी ने शुक्रवार को अपने ईरानी समकक्ष होसैन अमीराब्दुल्लाहियन से फोन पर बात की। इससे पहले गुरुवार को पाकिस्तान की तरफ से जवाबी हमलों के बाद ईरान ने कहा था कि उसके क्षेत्र के सीमावर्ती गांवों में चार बच्चों सहित नौ लोगों की मौत हुई है। पाकिस्तान ने कहा कि मंगलवार को हुए ईरानी हमले में दो बच्चों की मौत हो गई। ईरान के साथ बढ़ते तनाव के कारण पाकिस्तान में 8 फरवरी को होने वाले आम चुनाव प्रभावित नहीं होंगे। चुनाव आयोग के प्रवक्ता के हवाले से द न्यूज इंटरनेशनल अखबार की रिपोर्ट में कहा गया, चुनाव आयोग अभी भी निर्धारित समय पर चुनाव कराने पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। पाकिस्तान-ईरान तनाव के कारण चुनाव की तारीख की समीक्षा करने का कोई प्रस्ताव नहीं है। आयोग तैयारियों में जुटा हुआ है। सूचना मंत्री मुर्तजा सोलांगी ने भी कहा कि चुनाव समय पर होंगे और दोनों पड़ोसियों के बीच तनाव का चुनाव कार्यक्रम पर कोई असर नहीं पड़ेगा। चुनाव कराने के लिए जरूरी सुरक्षा उपायों पर सोलांगी ने कहा, सरकार शांतिपूर्ण तरीके से चुनाव कराने के लिए चुनाव आयोग को जरूरी सुरक्षा प्रदान करेगी। उन्होंने दोहराया, %अब घोषित तिथि पर आम चुनाव से पीछे हटने की कोई जरूरत नहीं है।

मनी लॉन्ड्रिंग मामले में 24 जनवरी को शरद पवार के पोते से होगी पूछताछ

एजेंसी

मुंबई। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने महाराष्ट्र में राकांपा सुप्रीमो शरद पवार के पोते विधायक रोहित पवार को समन भेजा है। एक अधिकारी ने बताया कि राज्य सहकारी बैंक में मनी लॉन्ड्रिंग के तहत पूछताछ के लिए 24 जनवरी को रोहित पवार को बुलाया गया है। पांच जनवरी को एजेंसी ने रोहित पवार की कंपनी बारामती एग्रो के बारामती, पुणे, औरंगाबाद समेत अन्य परिसरों में छापेमारी की थी। 38 वर्षीय रोहित पवार महाराष्ट्र विधानसभा में कर्जत-जामखेड सीट से पहले राकांपा विधायक हैं। वह बारामती एग्रो के सीईओ भी हैं।

रोहित पवार बारामती सांसद सुप्रिया सुले और महाराष्ट्र डिप्टी सीएम अजित पवार के भतीजे हैं। ईडी के समन पर शरद पवार ने प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि रोहित पवार की युवा संघर्ष यात्रा ने भाजपा को असुरक्षित कर दिया है। ईडी ने केरल इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट फंड बोर्ड (केआईआईएफबी) के मसाला बांड मामले में केरल के पूर्व वित्त मंत्री डॉ. थॉमस इसाक को नोटिस जारी कर सोमवार को उनके सामने पेश होने का निर्देश दिया है।

इस बीच, राकांपा अध्यक्ष शरद पवार ने शुक्रवार को विपक्षी दलों से एकजुट रहने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि 28 विपक्षी दलों के गठबंधन- ढ्ढह्लष्ठढ्ढ में शामिल दलों को केंद्र की मौजूदा भाजपा-एनडीए सरकार को सत्ता से उखाड़ फेंकने तक चैन से नहीं बैठना चाहिए। सोलापुर जिले के मंगलवेधा शहर में पवार ने आरोप लगाया कि सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) केवल चुनावों के दौरान भगवान राम को याद करती है। विपक्षी दलों को चुनाव के आखिरी दिन तक आराम से नहीं बैठना चाहिए। मौजूदा सरकार राजनीतिक विरोधियों को निशाना बनाने के लिए सत्ता का दुरुपयोग कर रही है। उन्होंने एकजुटता का संदेश देते हुए कहा, महा विकास अघाड़ी (एमवीए)में शामिल- शिवसेना (यूबीटी), राकांपा और कांग्रेस गठबंधन के लिए वाम दलों और प्रकाश अंबेडकर की वंचित बहुजन अघाड़ी (वीबीए) से भी लगातार बात कर रही है।

वोट जैसा कुछ नहीं वोट जरुर डालेंगे हम है-संदीप कुमार

25 जनवरी मतदाता दिवस के आयोजन को लेकर बैठक

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। जनपद का मतदान प्रतिशत बढ़ाने के उद्देश्य से 14वें राष्ट्रीय मतदाता दिवस 25 जनवरी 2024 को जनपद में होने वाले कार्यक्रमों की रणनीति बनाने की बैठक अपर जिला अधिकारी वित्त एवं राजस्व संदीप कुमार की अध्यक्षता में विकास विभाग सभागार में की गयी। अपर जिलाधिकारी संदीप कुमार ने कहा कि 25 जनवरी को मतदाता दिवस के अवसर पर कार्यक्रमों का बेहतर प्रचार प्रसार किया जाए। सभी विभाग आपसी समन्वय बनाकर जनसामान्य की अधिकतम सहभागिता सुनिश्चित करे। इसके लिए स्कूली बच्चों की रैली निकालने का रेहर्सल स्कूल पहले से ही कर ले। इसके अलावा कालेज तथा स्कूलों में रंगोली प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, वाद विवाद प्रतियोगिता, स्लोगन तथा हस्ताक्षर अभियान का आयोजन किया जाए साथ ही इन प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त होने वाले छात्र-छात्राओं में पुरस्कार वितरण किया जाए। प्रशासन के द्वारा बीएलओ के द्वारा बूथ स्तर पर पर मतदाता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन प्रभावी ढंग से किया जाए। साथ ही प्रथम वोटर तथा वरिष्ठ मतदाता को टारगेट करने के लिए विशेष अभियान चलाने के निर्देश दिए जिससे उनकी सहभागिता सुनिश्चित की जा सके और मतदाता जागरूकता के लिए नेहरू युवा केंद्र संगठन, एनसीसी स्काउट गाइड के वॉलिंटियर्स का सहयोग लेने को कहा तथा मतदाता दिवस की थीम वोट जैसा कुछ नहीं वोट जरुर डालेंगे हम है। मतदाता दिवस के अवसर पर मतदाताओं के द्वारा मतदाता शपथ कार्यक्रम का भी आयोजन किया जाना है। शपथ कार्यक्रम को बूथ स्तर पर बीएलओ द्वारा तथा अन्य कार्यक्रमों में नोडल अधिकारी द्वारा आयोजन किया जाना है। मतदाता जागरूकता कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिए सभी अधिकारी पहले से ही तैयारियां पूर्ण कर लें। बैठक के दौरान सहायक निर्वाचन अधिकारी श्रवण कुमार, स्कूलों के प्रधानाचार्य तथा अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

अधिकारी शासन की मंशा के अनुरूप योजनाओं का सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित करें - कपिल देव अग्रवाल, मंत्री

❖बैठक में प्रभारी मंत्री के दिए गए निर्देशों का पूर्णत- पालन किया जाएगा- डीएम, हापुड़

द अचीवर टाइम्स ब्यूरो चीफ चेतन कुमार

हापुड़। राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) व्यावसायिक शिक्षा, कौशल विकास, और उद्यमशीलता विभाग उत्तर प्रदेश एवं प्रभारी मंत्री हापुड़ कपिल देव अग्रवाल ने विकास प्राथमिकता कार्यक्रमों की कलेक्ट्रेट सभागार में समीक्षा बैठक में शासन की मंशा के अनुरूप काम करने के निर्देश दिया। मंत्री ने विकास प्राथमिकता कार्यक्रमों विद्युत आपूर्ति, प्रधानमंत्री आवास योजना, मनरेगा, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, कन्या सुमंगला योजना, जल जीवन मिशन, गौशाला, अमृत सरोवर, कौशल विकास मिशन, सामूहिक विवाह योजना, पीएम स्वा-निधि योजना, मध्यान भोजन योजना, आंगनबाड़ी तथा अन्य विकास योजनाओं का क्रियान्वयन ससमय तथा गुणवत्तापूर्ण करने के निर्देश देते हुए कहा कि पीएम सम्मान निधि योजना के तहत स्ट्रीट वेंडर को प्रथम ऋण 91व के सापेक्ष तृतीय ऋण 65व दिये गये है उन्होने तृतीय ऋण प्रतिशत बढ़ाने के निर्देश दिया और सभी योजनाओं में केवल वास्तविक पात्र लोगों को ही लाभ दिलाया जाए तथा कौशल विकास योजना के तहत जनपद में लगने वाले रोजगार मेले में जनप्रतिनिधियों की भागीदारी के लिए तीन से चार दिन पूर्व सूचित करने के निर्देश दिए साथ ही कन्या सुमंगला योजना के प्रभावी अनुसरण के लिए केवल आवेदन पत्र प्राप्त होने पर निर्भर न रहकर सर्वे करके अधिक से अधिक पात्रों को आच्छादित करने के निर्देश देते हुए कहा अमृत सरोवर योजना के तालाबों की सौंदर्यकरण के साथ उसकी उपयोगिता भी बढाने पर बल दिया जाए। मंत्री ने जल निगम के अधिकारी से पानी पाइप को डालने के पश्चात खोदी गई सड़कों को तुरंत सही करने के निर्देश दिए साथ ही जल निगम द्वारा सही कराई गई सड़कों की सूची स्थानीय जनप्रतिनिधियों को उपलब्ध कराने के सख्त निर्देश दिया कि जनपद में संचालित होने वाले गौशालाओं में ठंड के दृष्टिकोण आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित कर लिया जाये जिससे ठंड के कारण किसी भी निराश्रित पशु की मृत्यु नहीं हो अन्यथा की स्थिति में कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। सख्त निर्देश दिया की योजनाओं का क्रियान्वयन निर्धारित मानक के अनुरूप सुनिश्चित किया जाए तथा इसके लिए प्रभावी अनुसरण करने की आवश्यकता है अतः सभी अधिकारीगण योजनाओं के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर पात्रों को ही लाभ पहुंचाने का काम करें यदि किसी भी योजना में आपात्रों या मानक के प्रतिरूप क्रियान्वयन की शिकायत मिलने पर संबंधित कर्मचारियों तथा अधिकारी पर कार्यवाही करने में किसी भी प्रकार की रियायत नहीं बरती जाएगी चूकि यह सरकार भ्रष्टाचार की जीरो टॉलरेंस नीति पर चल रही है। इसके पश्चात मंत्री ने प्रेस वार्ता की। तो वही जिलाधिकारी प्रेरणा शर्मा ने कहा कि बैठक में मंत्री के दिए गए निर्देशों का पूर्णतः पालन किया जाएगा साथ ही योजनाओं के सफल क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाएगा। इस बैठक के दौरान माननीय विधायक सदर विजय पाल, माननीय विधायक गढ़ हरेंद्र सिंह तेवतिया, माननीय जिला पंचायत अध्यक्षा रेखा नागर, जिला अध्यक्ष नरेश तोमर, पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा, मुख्य विकास अधिकारी अभिषेक कुमार, तथा अन्य संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

एक नज़र

भारतीय स्टेट बैंक द्वारा अयोध्या को चार गोल्फ कार्ट की गई भेंट

लखनऊ। भारतीय स्टेट बैंक द्वारा दिनांक 19.01.2024 को लखनऊ मण्डल के मुख्य महाप्रबन्धक श्री शरद स चांडक ने दर्शनार्थियों की सुविधा के लिए श्री राम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र, अयोध्या को चार गोल्फ कार्ट भेंट की। इस कार्यक्रम में श्री राम जन्म भूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव श्री चंपत राय, मंदिर निर्माण समिति,दिल्ली के अध्यक्ष श्री नृपेन्द्र मिश्र एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति शामिल हुए।

5 दशक बाद होगा भारतवासियों का स्वप्न पूर्ण होंगे रामलला के दर्शन-संजीव सिक्का

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री संजीव सिक्का ने मेरठ हापुड़-लोकसभा क्षेत्र के ग्राम लुखराडा में दिग्विजय शर्मा के आवास पर किसान चोपाल को सम्बोधित कर ग्राम वासियों से निवेदन किया कि आने वाली 22 जनवरी एक ऐतिहासिक दिन है जो 500 वर्ष बाद रामलला महल में विराजमान होने जा रहे हैं और इस दिन को हमे ऐतिहासिक बनाना है इसके लिए आने वाली 22 जनवरी को होने जा रहे अयोध्या मे प्रभु श्री राम की प्राण-प्रतिष्ठा पर घर घर दीपक जलाकर पटाखे छोड़कर उत्सव मनाये। पूरे देश में 22 को दिवाली जैसा माहौल होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कल्याणकारी योजनाओं एवं विकसित भारत के संकल्प की परिकल्पना आज धीरे धीरे अपना स्वरूप ले रही है। इस अवसर पर कैलाश चंद, गंगा शरण शर्मा, राम अवतार शर्मा, प्रमोद, देवेंद्र कुमार, लोकेंद्र फौजी, वीर सिंह? लोधी, राजीव चौधरी व राहुल शर्मा आदि लोग उपस्थित रहे।

चंडी मंदिर में प्रभारी मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने की साफ सफाई कर पूजा अर्चना

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। सिद्ध पीठ श्री चंडी मंदिर में किया प्रभारी मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने स्वच्छता कार्यक्रम आपको बता दे शुक्रवार को पक्का बाग स्थित श्री चंडी मंदिर में सुबह प्रभारी मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने जिला अध्यक्ष नरेश तोमर व अन्य जिला पदाधिकारी के साथ स्वच्छता अभियान के तहत मंदिर प्रांगण में साफ सफाई की व पूजा अर्चना करते हुए देशवासियों के लिए सुख समृद्धि की कामना की। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह स्वच्छता कार्यक्रम 21 जनवरी तक चलने वाला है जिसके तहत आज हापुड़ में सिद्ध पीठ श्री चंडी मंदिर में उन्हें सेवा का कार्य करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ जिला अध्यक्ष नरेश तोमर ने बताया कि जिले के समस्त धार्मिक स्थलों को 22 तारीख से पहले साफ सफाई का कार्यक्रम पूर्ण हो जाएगा विधायक विजयपाल आढती ने कहा कि सभी कार्यकर्ता पदाधिकारी व जन प्रतिनिधि अपने-अपने स्तर से इस कार्यक्रम में लगे हुए हैं। इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष रेखा नागर,जिला महामंत्री श्यामेंद्र त्यागी, पुनीत गोयल, सुधीर अग्रवाल, प्रमोद जिंदल, प्रवीण सिंघल, अनिरुद्ध कस्तला, विक्रम तोमर आदि कार्यकर्ता मंदिर प्रांगण में मौजूद रहे।

रिवर रैचिंग कार्यक्रम के अन्तर्गत 2.40 लाख मत्स्य अंगुलिकाओं को गंगा नदी में छोड़ा

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। गंगा नदी के ब्रजघाट पर मत्स्य विभाग द्वारा रिवर रैचिंग कार्यक्रम के अन्तर्गत 2.40 लाख मत्स्य अंगुलिकाओं को गंगा नदी में छोड़ा गया। तो वही ऋचा चौधरी, सहायक निदेशक मत्स्य द्वारा बताया गया कि इस कार्यक्रम में बहती जलधाराओं में भारतीय मेजर कार्प मछलियों के संरक्षण एवं संतुलन बनाये रखने के साथ-साथ मछुआ समुदाय के व्यक्तियों को निरंतर पर्याप्त रोजगार के अवसर मिलते रहे इस हेतु प्रदेश के हर जनपद में चलाया जा रहा है। कार्यक्रम में मत्स्य पालक जागरूकता गोष्ठी का आयोजन भी किया गया। जिसमें उपस्थित मत्स्य पालक एवं मत्स्य आखेट से जुड़े किसानों को स्विर रैचिंग कार्यक्रम की उपयोगिता के साथ-साथ मत्स्य विभाग द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा मत्स्य विभाग में संचालित योजनाओं में बढ़ चढ़ कर हिस्सा ले व प्रतिबंधित काल में प्रजननशील मछलियों का शिकार न करें ताकि मत्स्य पालक अपनी आय में बढ़ोतरी कर सके। गोष्ठी में विधायक हरेंद्र सिंह तेवतिया गढ़मुक्तेश्वर, मुख्य विकास अधिकारी ,निषाद राज पार्टी जिला अध्यक्ष डी0पी0 निषाद,जिला रक्षा अधिकारी,अबरार माहीगीर, आसिफ माहीगीर मौजूद रहें।

राघवेन्द्र सिंह सीनीयर एडवोकेट पूर्व संसद सदस्य ने 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा पर घरों में दीपावली मनाने व दीप प्रज्वलित करने का साथ ही दीप प्रज्वलित किट बांटी गई

द अचीवर टाइम्स संवाददाता

खीरो रायबरेली। उत्तर प्रदेश के अयोध्या में राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा से पहले हर तरफ हर्ष और उल्लास का माहौल है. 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा होगी. इसकी खुशी में भगवान के भक्त 22 जनवरी को दीपोत्सव कार्यक्रम करेंगे, घरों में दीपक जलाएंगे. खीरो के मंदिरों में अभी से दीपोत्सव शुरू कर दिया गया है. मंदिरों में आरती के साथ-साथ श्रीराम नाम की धूम और दिवाली जैसा माहौल है.,श्रद्धालु मंदिरों में जाकर दीपक जला रहे हैं और उत्सव मना रहे हैं. खीरो के तालेश्वर मंदिर में राम नाम की धूम रही. बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने मंदिर परिसर में आरती के बाद दीप प्रज्वलित कर दीपावली जैसा माहौल बना दिया. लोगों ने दीप जलाकर दीपावली जैसी श्रृंखला बनाई और जयश्री राम के नारों का उद्घोष किया.इसी कणी में रायबरेली लोकसभा36 से राघवेंद्र सिंह सीनियर अधिवक्ता पूर्व संसद सदस्य पूर्व महाधिवक्ता उत्तर प्रदेश ने खीरो के तालेश्वर मंदिर में राम दीपुत्सव किट बांटकर लोगो से दीवाली मनाने का आह्वाहन किया व दीप प्रज्वलित कर कर लोगो से भी निवेदन किया कि आप लोग भी 22 जनवरी को दीप प्रज्वलित कर इस कार्यक्रम के मुख्य आयोजक रहे विवेक सिंह सचिव दीक्षा फाउंडेशन ट्रस्ट पूर्व जिला युवा मोर्चा भाजपा रायबरेली साथ ही अमित सिंह,अनूप सिंह, हिमांशु सिंह, पुत्ती सिंह रण बहादुर सिंह ,शानू पटेल, पुरवा प्रधान विदेश्वर सिंह,आदर्श सिंह, जसवंत सिंह, वीरेंद्र सिंह, लक्ष्मी शंकर त्रिवेदी, धर्मेंद्र पटेल, शिव कुमार, सूरज, शैलेन्द्र राहुल चौधरी, व सैकड़ों गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

साध्वी ऋतंभरा का हुआ भव्य स्वागत

द अचीवर टाइम्स प्रशांत अवस्थी

❖ लखनऊ के उत्तरी विधानसभा क्षेत्र में साध्वी ऋतंभरा का भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया भव्य स्वागत।
❖ बीजेपी की सक्रिय कार्यकर्ता गुड़िया निगम समेत सभी कार्यकर्ताओं ने किया भव्य स्वागत।

लखनऊ। राम आएंगे तो अंगना सजाऊंगी..... आजकल यह धुन सभी की जुबान पर है। वर्षों इंतजार के बाद अयोध्या में भगवान श्री राम का भव्य मंदिर बन रहा है जिसकी प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम 22 जनवरी को है। सभी हिंदुस्तानी इस दिन का इंतजार कर रहे हैं। श्री राम जन्मभूमि आंदोलन को निर्णायक स्वरूप देने वाली और सक्रियता से श्री राम जन्मभूमि आंदोलन में भाग लेने वाली दीदी साध्वी ऋतंभरा जी का आज लखनऊ की उत्तरी विधानसभा के विधायक डॉ0 नीरज वोरा समेत भाजपा कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया। साध्वी ऋतंभरा अयोध्या दौरे पर है। उत्तरी विधानसभा के विधायक डॉ0 नीरज बोरा के आवास से जब साध्वी ऋतंभरा अयोध्या के लिए निकली तो उत्तरी विधानसभा में जगह-जगह बीजेपी कार्यकर्ताओं ने माल्यार्पण कर उनका भव्य स्वागत किया। उत्तरी विधानसभा में बीजेपी की सक्रिय कार्यकर्ता गुड़िया निगम ने सैकड़ो महिलाओं के साथ साध्वी ऋतंभरा का फूल मालाओं के साथ स्वागत किया और अयोध्या में बन रहे राम मंदिर को लेकर उनका आभार प्रकट किया। साध्वी ऋतंभरा श्री राम जन्मभूमि आंदोलन को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है। लगातार भगवत भजन में अपना पूरा जीवन अर्पण करने वाली साध्वी ऋतंभरा आज उत्तरी विधानसभा से उत्तरी विधानसभा के विधायक डॉ0 नीरज बोरा के आवास से अयोध्या के लिए प्रस्थान किया। जहां उत्तरी विधानसभा में भाजपा कार्यकर्ताओं ने उनका भव्य स्वागत किया है जगह-जगह माला फूल से उनका स्वागत किया गया और 22 तारीख को अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा में शामिल होने के लिए उनका आभार प्रकट किया। उत्तरी विधानसभा में बीजेपी की सक्रिय कार्यकर्ता व समाजसेवी गुड़िया निगम ने अपने सैकड़ो कार्यकर्ताओं के साथ उनका सीतापुर रोड पर भाव स्वागत किया। इसके बाद साध्वी ऋतंभरा 22 तारीख को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में शामिल होने के लिए अयोध्या के लिए निकल गई।

रामलला विजय पर्व महोत्सव के छठवें दिन भजन सुनकर भक्तजन हुए भाव विभोर

द अचीवर टाइम्स

हापुड़। भारतीय ज्योतिष कर्मकांड महासभा के तत्वाधान में 14 जनवरी से शुरू हुए 22 जनवरी 2024 तक अयोध्या में भगवान श्री रामलला के गर्भगृह में विराजित होने के उपलक्ष्य में मनाये जा रहे श्री रामलला विजय पर्व महोत्सव कार्यक्रम के छठवें दिन कल शुक्रवार को नीलकंठ महादेव मंदिर, रेलवे कॉलोनी (आर पी एफ बैरक) हापुड़ में सुन्दरकाण्ड व संकीर्तन पुरे भक्तिभाव के साथ हुआ कार्यक्रम का आरम्भ महासभा विद्वान कथा व्यास पंडित शैलेन्द्र शास्त्री ने पूजन कर भगवान श्री राम कथा सुनाया गया महासभा कार्यक्रम समिति सदस्य आज के विशेष सहयोगी पंडित अजय पाण्डेय व प्रवक्ता आचार्य अजय शर्मा द्वारा कराया उसके बाद महासभा अध्यक्ष पंडित के0 सी0 पाण्डेय, मंत्री गौरव कौशिक,महामंत्री अनिशा सोनी पाण्डेय, कोषाध्यक्ष पंडित मित्र प्रसाद काफ्ले,एस्ट्रो धर्मेंद्र बंसल,पंडित लवकुश मिश्रा,पंडित अजय तिवारी, आदि विद्वानों ने हनुमान चालीसा पाठ किया महासभा उपाध्यक्ष पंडित आदित्य भारद्वाज व पंडित शिवाकांत शुक्ला ने भगवान श्री राम के जन्म व विवाह के साथ हनुमान के सुन्दर भजन गाये जिसे सुनकर भक्तजन भाव विभोर हो गए विकास शर्मा,पंडित विक्रम मिश्रापूनम त्यागी, नितीश मिश्रा,प्रियंका, अनिल त्यागी, केसर देवी, उषा, मेघवती, मधुबाला, शारदा, शीतल शर्मा नव्या रेखा मिश्रा सहित बड़ी संख्या में भक्तजन शामिल रहें कार्यक्रम के अंत में अध्यक्ष पंडित के0 सी0 पाण्डेय ने सभी का आभार प्रकट किया।

पुलिस मुठभेड़ में पच्चीस हजार का इनामिया शातिर अपराधी गिरफ्तार

सीतापुर। इंस्पेक्टर कोतवाली देहात विमल गौतम ने 25 हजार रूपए के इनामिया शातिर अपराधी को पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार किया है।एसओजी टीम एवं थाना कोतवाली देहात की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा थाना कोतवाली देहात क्षेत्रान्तर्गत गौरा अर्जुनपुर अण्डरपास के पास से मु0अ0सं0 501/2023 धारा 379/511 भादवि थाना खैराबाद में वांछित 25 हजार रूपए का इनामिया अपराधी शाकिर उर्फ टुन्डा उर्फ लूला पुत्र जंग बहादुर निवासी पनवड़िया शेखसराय थाना खैराबाद सीतापुर को पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार किया गया है।गिरफ्तार अभियुक्त के कब्जे से 01 अदद तमंचा, 02 अदद जिंदा कारतूस, 01 अदद खोखा कारतूस 315 बोर बरामद हुआ है। अभियुक्त शातिर एवं अभ्यस्त किस्म का अपराधी हैं, जिसके विरुद्ध पूर्व में करीब आधा दर्जन अभियोग गोकशी,गैंगेस्टर एक्ट व चोरी के अभियोग पंजीकृत है।

हापुड़ से चोरी की ई-रिक्शा के साथ मेरठ निवासी शातिर चोर गिरफ्तार

द अचीवर टाइम्स ब्यूरो चीफ चेतन कुमार

हापुड़। थाना हाफिजपुर पुलिस द्वारा 13/2024 को ई-रिक्शा चोरी की घटना का मुकदमा धारा 379,411 के तहत दर्ज किया गया था। जहां थाना हाफिजपुर उप निरीक्षक विजय भारद्वाज, हेड कांस्टेबल रवि तेवतिया तथा कास्टेबल अनिल कुमार द्वारा थाना हाफिजपुर पर हुआ उक्त मुकदमे का सफल अनावरण करते हुए सलाई कट के पास सेएक शातिर चोर को गिरफ्तार किया है जिसके कब्जे से चोरी की ई रिक्शा हापुड पुलिस द्वारा जनपद में अपराध की रोकथाम एवं चोरों व वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाये जा रहे अभियान के अन्तर्गत थाना हाफिजपुर पुलिस ने ई-रिक्शा चोरी की घटना का सफल अनावरण करते हुए शातिर चोर तैयब अली पुत्र अबरार अली निवासी ग्राम खजूरी अलीयारपुर थाना परीक्षितगढ़ जनपद मेरठ व हाल पता फातिमा गार्डन फतेहउल्लपुर थाना लोहिया नगर जनपद मेरठ को गिरफ्तार किया है। जिसके कब्जे से चोरी की ई-रिक्शा रजिस्टर नंबर यूपी 37 टी 9355 व घटना में प्रयुक्त स्कूटी के साथ एक अवैध चाकू बरामद किया है।

थप्पड़बाज दारोगा को पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने किया निलंबित

❖ रेस्टोरेंट संचालक के साथ आद्रता कर थप्पड़ मारते हुए वीडियो हुई थी वायरल

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। एक दरोगा को रेस्टोरेंट संचालक को थप्पड़ मारना भारी पड़ गया तो पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने थप्पड़बाज दरोगा की वीडियो सामने पर दरोगा साहब को निलंबित कर दिया और जांच सीओ को सौप दी। आपको बता दे हापुड़ नगर कोतवाली क्षेत्र के मोदीनगर रोड पर एक पिज्जा रेस्टोरेंट में दारोगा न सिर्फ रेस्टोरेंट के मालिक पर जमकर थप्पड़ बरसा रहे हैं बल्कि मिली जानकारी के अनुसार रेस्टोरेंट में बैठे लोगों के साथ भी मारपीट भी की गई जिस घटना से जुड़ा वीडियो रेस्टोरेंट में लगे सीसीटीवी में कैद हो गया वीडियो में दरोगा जी रेस्टोरेंट संचालक को थप्पड़ बरसते हुए साफ साफ दिखाई दे रहा है वीडियो में दरोगा जी रेस्टोरेंट के संचालक से न सिर्फ गाली-गलौज कर रहे हैं, बल्कि एक के बाद एक कई थप्पड़ भी लगातार बरसाते हुए नजर आये। मामला हापुड़ नगर के केशव नगर चौकी पर तैनात दारोगा नफीस अहमद मोदीनगर रोड स्थित पिज्जा के रेस्टोरेंट में कपल के आने पर अपनी नाराजगी जाहिर कर रहे थे। उन्हें रेस्टोरेंट में पिज्जा खाने के लिए आने वालों से इतनी खुंदक हो गई कि उन्होंने रेस्टोरेंट के संचालक की तो थप्पड़ों की बरसात कर पिटाई की ही, साथ ही पिज्जा खा रहे युवकों से भी मारपीट की। दारोगा नफीस अहमद की मारपीट करने का यह वीडियो गुरूवार 18 जनवरी का ही नहीं है, बल्कि इससे पहले भी उन्होंने 11 जनवरी 2024 को यहां रेस्टोरेंट में आकर रेस्टोरेंट संचालक और वहां बैठे युवाओं के साथ थप्पड़ों से बौछार की थी।

सोशल मीडिया पर दरोगा द्वारा रेस्टोरेंट संचालक के साथ अभद्रता करने के वीडियो वायरल हुआ का संज्ञान लेत पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा द्वारा तत्काल प्रभाव से उ0नि0 नसीम अहमद चौकी इंचार्ज केशव नगर को निलंबित कर दिया और जांच सीओ को सौप दी है। और हापुड़ पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा द्वारा जनपद के समस्त पुलिस कर्मचारीगण वर्ष अधिकारीगण को निर्देशित किया गया है कि ऐसा कोई कृत्य न करें जो विधि के प्रतिकूल हो। विधि के प्रतिकूल कृत्य व तथ्य संज्ञान में आने पर सम्बन्धित के विरुद्ध कड़ी दण्डात्मक कार्यवाही की जाएगी।

ग्राम पंचायत के बेहतर विकास के लिए ग्राम प्रधान और स्वयं सहायता समूह की भूमिका आवश्यक : शिवानी वर्मा

अमित कुमार आजाद

शाहजहांपुर। विकासखंड सभागार भावलखेड़ा में प्रथम बैच के प्रथम दिवस के प्रशिक्षण पी आर आई और एस एच जी कन्वर्जेंस हेतु प्रशिक्षण पंचायती राज विभाग के प्रशिक्षक सोनी देवी और शिवानी वर्मा द्वारा दिया गया प्रशिक्षण की शुरुआत इतनी शक्ति हमें देना दाता प्रार्थना और ए.डी. ओ पंचायत श्री नरायन सिंह जी और ए.डी.ओ आई.एस.बी श्री आलोक अस्थाना जी के द्वारा मां सरस्वती के प्रतिमा पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलित के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सर्व प्रथम प्रतिभागियों का पंजीकरण किया गया। इस प्रशिक्षण का मुख्य उददेश्य ग्राम प्रधान एवं स्वयं सहायता समूह मिलकर जब कार्य करेंगे, तो ग्राम का विकास अवश्य ही होगा। पंचायती राज के मास्टर सोनी देवी एवं शिवानी वर्मा ने विस्तार से पंचायती राज व्यवस्था के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि ग्राम पंचायत और ग्राम सभा में क्या अंतर है। पंचायत कितने प्रकार की होती है। ट्रेनर शिवानी वर्मा ने बताया कि स्वयं सहायता समूह क्या है, कैसे गठन किया जाए, समूह का उद्देश्य, समूह के अधिकार ,समूह की जिम्मेदारी आदि के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस प्रशिक्षण प्रोजेक्ट के व्यवस्थापक श्री पी.सी.पटेल के द्वारा भोजन एवं नाश्ते की व्यवस्था की गई,जो कि बहुत ही गुणवत्तापूर्ण थी। लखनऊ से आए सहयोगी सौरभ चौरसिया जी का बहुत ही सराहनीय योगदान रहा इस मौके पर ग्राम प्रधान संभू दयाल, राधा देवी, ज्योति शर्मा, मोहम्मद अकरम, आरती देवी, जय प्रकाश गुप्ता, मैना देवी, समूहसखी प्रीति देवी,नेहा कश्यप, सीमा दीक्षित मीना सिंह, शिल्पी, अंजली, प्रीति, सीमा, ललिता,आदि लोग उपस्थित रहे।

सीएम योगी ने गन्ना किसानों से किया संवाद

बोले- पहले किसान कर्ज में डूबा था आज खुशहाल है

संवाददाता

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को गन्ना किसानों से संवाद किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि किसान पहले अनदेखी से आत्महत्या को मजबूर थे जबकि आज प्रदेश के विकास को गति दे रहे हैं। यूपी के 86 लाख किसानों का कर्ज माफ किया गया है जबकि वर्ष 2017 से पहले प्रदेश के किसान आत्महत्या करने को मजबूर थे। वह कर्ज में डूब हुए थे। खेती के लिए बिजली, खाद और सिंचाई की कोई व्यवस्था नहीं थी। पिछली सरकारों की अनदेखी से चीनी मील बंद हो रही थीं। हमारी सरकार सत्ता में आई तो मुश्किल से 110 चीनी मिलें चल रहीं थी। उन पर भी वर्ष 2010 से 2017 के बीच गन्ना मूल्य का बकाया था। हमने सबसे पहले गन्ना किसानों के बकाया का भुगतान किया और 120 चीनी मिलें को संचालन कराया। इतना ही नहीं कोरोना के दौरान जब देश के अन्य राज्यों में चीनी मीलें बंद हो रहीं थीं तो प्रदेश मजबूती के साथ चीनों मिलों को चला रहा था। पिछले साढ़े छह वर्षों में डबल इंजन की सरकार ने लगभग 7 लाख करोड़ की राशि सीधे अन्नदाता के खाते में भेजी है। ये बातें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को गन्ना किसान संवाद कार्यक्रम में कही। इस दौरान गन्ना किसानों ने योगी सरकार का गन्ने के एसएपी पर 20 रुपये प्रति कुंतल बढ़ोतरी पर खुशी जाहिर करते हुए उनका आभार प्रकट किया।

सीएम योगी ने प्रदेश के किसानों का बढ़ाया मान

कार्यक्रम के दौरान प्रदेश के विभिन्न जिलों से आए गन्ना किसानों से मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से संवाद भी किया। कार्यक्रम में किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष कामेश्वर सिंह ने सीएम योगी का गन्ना मूल्य के एसएपी के 20 रुपये प्रति कुंतल में बढ़ोत्तरी पर खुशी जाहिर की। उन्होंने कहा कि योगी सरकार का गन्ना मूल्य में बढ़ोत्तरी का फैसला ऐतिहासिक है। उन्होंने कहा कि जब देश-दुनिया रामलला प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर अति उत्साहित है तो इस दौरान योगी सरकार ने प्रदेश के गन्ना किसानों को गन्ना मूल्य में बढ़ोतरी की सौगात देकर यह साबित कर दिया है कि वह सरकार किसान हितों को लेकर हमारे साथ खड़ी है।

प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के दौरान गांव में जगह-जगह कराएं भंडारा

सीएम योगी ने कहा कि वर्तमान पीढ़ी सौभाग्यशाली है, जो 500 वर्षों के बाद 22 जनवरी को रामलला प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम की साक्षी बनेगी। ऐसे में प्रदेश के सभी अन्नादाता किसानों को टेलीविजन के माध्यम से जुड़ना चाहिये। गांव में जगह-जगह पर भंडारा कराएं और मंदिरों में हो रहे संकीर्तन में शामिल हों। वह सुबह मंदिरों की सफाई करें और शाम को घर के साथ मंदिरों में दीप प्रज्ज्वलित कर दीपोत्सव का भव्य आयोजन करें। यह हमारी विरासत को सम्मान देने के साथ हमारा दायित्व भी है। उन्होंने 22 जनवरी के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को गन्ना किसानें को बधाई और शुभकामनाएं दी।

गदगद हैं प्रदेश के किसान

मेरठ के ओमवीर चौधरी ने कहा कि योगी सरकार ने प्रदेश को नयी दिशा दी है। उन्होंने अयोध्या धाम में भगवान श्रीराम के भव्य-दिव्य मंदिर निर्माण पर बधाई दी। उन्होंने बड़े पैमाने पर यूपी पुलिस भर्ती और युवाओं को रोजगार देने पर दिल से शुक्रिया अदा किया। कहा कि प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम से पहले गन्ना मूल्य में बढ़ोतरी से प्रदेश के किसान काफी गदगद हैं। इसके अलावा मेरठ के गन्ना किसान अनिल चौधरी, कुशीनगर के धनंजय राम त्रिपाठी, मुजफ्फनगर के राहुल, गोंडा के शुभम त्रिपाठी, ओमकार सिंह ने गन्ना मूल्य में बढ़ोतरी पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का आभार प्रकट किया।

प्राण प्रतिष्ठा से पहले एसएपी में बढ़ोत्तरी का दिया उपहार

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि जब हमारी सरकार आई तो गन्ना किसानों को गन्ने का समर्थन मूल्य 315 रुपये प्रति कुंतल दिया जाता था, लेकिन वह पैसा भी उनको नहीं मिल पाता था। इस पर हमने काम शुरू किया और आज 120 चीनी मिलों में 105 चीनी मिलें 10 दिन के अंदर गन्ना मूल्य का भुगतान कर रहीं हैं। वहीं इसे शत प्रतिशत करने पर युद्धस्तर पर काम किया जा रहा है। आज गन्ना किसानों को गन्ने का समर्थन मूल्य 370 रुपये प्रति कुंतल दिया जा रहा है। सीएम योगी ने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने अयोध्या धाम में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम से पहले गन्ना किसानों को एसएपी में बढ़ोतरी का उपहार दिया है क्योंकि भगवान की पूजा से पहले अन्नपूर्णा देवता को भोग लगाया जाता है। इसी को ध्यान में रखते हुए हमने यह फैसला लिया। सीएम योगी ने किसानों को आश्वस्त करते हुए कहा कि डबल इंजन की सरकार पूरी ईमानदारी और प्रतिबद्धता के साथ उनके साथ खड़ी है। गत वर्ष हमने आम के 4 किसानों को मास्को भेजा था। यहां पर जो आम 40 से 50 रुपये किलो बिक रहा था, वहीं मास्को बाजार में पहुंचा तो 800 से लेकर 1000 प्रति किलो में बिका। इससे अन्नदातों की आय में बढ़ोतरी हो रही है और वह समृद्ध हो रहे हैं। यह डबल इंजन की सरकार की किसानों के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

एक नज़र

हाई अलर्ट पर अयोध्या- तैयारियों का जायजा लेने पहुंचे सीएम योगी, मंदिर परिसर का किया भ्रमण

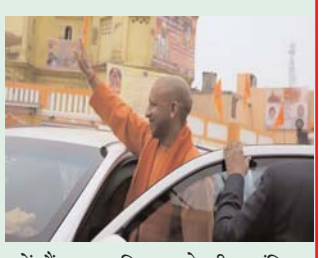

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्राण प्रतिष्ठा की तैयारियों की समीक्षा करने के लिए अयोध्या पहुंच गए हैं। इस दौरान उन्होंने राम मंदिर परिसर का भ्रमण भी किया। प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को होनी है। इसके लिए तैयारियां अपने अंतिम चरण में हैं। बृहस्पतिवार को तीन संदिग्ध आतंकी मिलने के बाद सुरक्षा व्यवस्था और भी चाक-चौबंद कर दी गई है। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आज अयोध्या पहुंच गए हैं। जहां उन्होंने सबसे पहले हनुमानगढ़ी के दर्शन किए और फिर रामलला के दरबार में हाजिरी लगाई। इस दौरान सीएम योगी ने राम मंदिर परिसर का भ्रमण भी किया। इस दौरान सीएम यहां रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह की तैयारियों को परखेंगे। साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यक्रम से जुड़ी व्यवस्थाओं को देखेंगे। विभिन्न विकास परियोजनाओं का निरीक्षण भी करेंगे। जिला प्रशासन ने मुख्यमंत्री के आगमन की तैयारी शुरू कर दी है। खालिस्तानी आतंकियों से जुड़े तीन संदिग्ध युवकों के पकड़े जाने के बाद एटीएस हाई अलर्ट मोड में आ गई है। बृहस्पतिवार को एटीएस के कमांडो ने वाहनों के काफिले के साथ रामनगरी की सुरक्षा परखी। नयाघाट से श्रीरामजन्मभूमि तक महत्वपूर्ण स्थानों पर निगरानी बढ़ा दी है। तीन संदिग्धों को हिरासत में लिए जाने के बाद खालिस्तान समर्थक गुरवंत सिंह पन्नू ने कई लोगों के फोन पर एक संदेश भेजा। इसमें वह खालिस्तान समर्थकों की गिरफ्तारी व टॉर्चर करने का दावा करते हुए धमकी दे रहा है। प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर स्वास्थ्य विभाग ने मोबाइल टीमें मुस्तैद कर दी हैं। इनमें शिफ्टवार विशेषज्ञ चिकित्सक, पैरामेडिकल स्टाफ की तैनाती की गई है। ये टीमें अलग-अलग स्थानों पर मौजूद रहेंगी। सूचना मिलते ही रवाना होंगी। नोडल अधिकारी डॉ. राममणि शुक्ला ने बताया कि सीएमओ कार्यालय व आवास, बूथ नंबर चार, रामकथा संग्रहालय पर ये टीमें तैनात रहेंगी। उधर, शहर और ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर इंतजाम करने के लिए 257 मजिस्ट्रेटों की तैनाती की गई है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह की तैयारी के लिए जिला प्रशासन ने कलेक्ट्रेट परिसर में निर्वाचन कार्यालय के पास नए भवन में कंट्रोल रूम बनाया है। इसमें प्रभारी के साथ जिले स्तर के अधिकारी और कर्मचारी लगाए गए हैं। सीडीओ अनीता यादव के नेतृत्व में यहां तैयारियों को लेकर कार्य किया जा रहा है। यहां से जानकारी देने और सूचनाएं प्राप्त करने का काम किया जा रहा है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह में सुरक्षा व्यवस्था संभालने के लिए बृहस्पतिवार को जवानों की आखिरी टुकड़ी भी पहुंच गई। इनमें प्रदेश के विभिन्न जिलों की पुलिस के अलावा, आरआरएफ, एसएसबी, आईटीबीपी, पीएसी आदि जवान शामिल हैं। अधिकारियों ने इन्हें कर्तव्यबोध कराते हुए तैनाती स्थल के लिए रवाना किया। प्राण प्रतिष्ठा समारोह के मद्देनजर विभिन्न जिलों से लगभग 10,000 से अधिक जवानों को बुलाया गया है। इनमें 100 से अधिक डीएसपी, 325 इंस्पेक्टर व 800 उपनिरीक्षक, वीआईपी सुरक्षा के लिए तीन डीआईजी, 17 एसपी, 40 एएसपी, 82 डीएसपी, 90 निरीक्षक आदि शामिल हैं। अर्द्धसैनिक बलों की चार कंपनी आरआरएफ, दो कंपनी एसएसबी, एक कंपनी आईटीबीपी व 26 कंपनी पीएसी के जवान भी पहुंचे हैं। बृहस्पतिवार को इन जवानों को अतिथियों के स्वागत-सत्कार व व्यवहार के प्रति सचेत करके विभिन्न स्थानों पर रवाना किया गया। एसएसपी राजकरन नय्यर ने बताया कि पर्याप्त संख्या में जवान पहुंच गए हैं। इन्हें विभन्न स्थानों पर तैनात किया गया है। बृहस्पतिवार की दोपहर करीब दो बजे एटीएस के कमांडो ने वाहनों के काफिले के साथ रिहर्सल किया। आगे-आगे बाइकों पर कमांडो, पीछे काली गाड़ियों में बैठे जवान आदि को देखने के लिए लोगों का जमावड़ा लग गया। नयाघाट से लेकर श्रीरामजन्मभूमि तक विभिन्न प्वाइंट पर रुककर जवानों ने सुरक्षा का एहसास दिलाया।

न्यूनतम तापमान में हुई मामूली बढ़त, गलन में कमी नहीं, इन जिलों के लिए जारी हुआ अलर्ट

लखनऊ। यूपी में गलन का दौर जारी है। गुरुवार को दोपहर के बाद प्रदेश के कुछ हिस्सों में हल्की धूप खुली लेकिन वह सर्दी कम करने में काफी साबित नहीं हुई। पूरे यूपी में शीतलहर का दौर चल रहा है। पुरवा हवा चलने के कारण तापमान में मामूली बढ़त देखी जा रही है। पर, गलन में कोई कमी महसूस नहीं की जा रही है। मौसम विभाग के विशेषज्ञों का कहना है कि 20 जनवरी से फिर से पारे में क्रमिक गिरावट आने लगेगी। बृहस्पतिवार को बाराबंकी, कानपुर, गोरखपुर, लखनऊ, वाराणसी, बलिया व चुर्क सहित कई इलाकों में न्यूनतम तापमान में दो डिग्री सेल्सियस तक बढ़ोतरी दर्ज की गई। बाराबंकी में बुधवार के आठ डिग्री सेल्सियस की तुलना में न्यूनतम तापमान 9 डिग्री, कानपुर में 5 से बढ़कर 7.1 और वाराणसी में 8 से बढ़कर 10 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड हुआ। इसी तरह दिन के पारे में भी दो डिग्री तक की क्रमिक वृद्धि हुई है। आंचलिक मौसम विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ मौसम वैज्ञानिक अतुल कुमार सिंह के मुताबिक कोहरा घटा है लेकिन अभी खत्म नहीं हुआ है। लखनऊ, हरदोई, कानपुर, लखीमपुर खीरी, वाराणसी, चुर्क, प्रयागराज, बरेली, नजीबाबाद, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, आगरा और अलीगढ़ में अत्यधिक गलन भरे दिन मौसम केंद्र पर रिकॉर्ड हुए हैं। यह स्थिति अभी बनी रहेगी। वहीं, कई इलाकों में घना कोहरा भी छाया रह सकता है। सहारनपुर, शामली, मुजफ्फरनगर, बागपत, मेरठ, गाजियाबाद, हापुड़, बिजनौर, अमरोहा, मुरादाबाद व आसपास घना कोहरा छाए रहने के आसार है। हालांकि प्रदेश में ज्यादातर इलाकों में कोहरा छाया रहेगा।

अयोध्या धाम में खत्म होगी पार्किंग और लॉजिंग की समस्या, ये है तैयारी

संवाददाता

लखनऊ। अयोध्या में विकास प्राधिकरण और नगर निगम की ओर से पांच मल्टीस्टोरी पार्किंग व्यवस्था शुरू कर दी गई है। इसमें पार्किंग के साथ ही श्रद्धालुओं के ठहरने के लिए डॉरमेट्री की भी सुविधा मिलेगी। अयोध्या धाम में 22 जनवरी को होने जा रहे श्रीरामलला विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा से पहले ही अवध में उत्सव का माहौल है। हजारों की संख्या में श्रद्धालु यहां पहुंच चुके हैं। लोकल के साथ ही नेशनल और इंटरनेशनल मीडिया का जमावड़ा लगा हुआ है। अनुमान है कि प्राण प्रतिष्ठा के बाद लाखों की संख्या में राम भक्त पूरे देश और दुनिया से यहां दर्शनों के लिए आएंगे। ऐसे में अयोध्या धाम में लोगों के रुकने और गाड़ियों की पार्किंग की व्यापक स्तर पर तैयारी की गई है। अयोध्या विकास प्राधिकरण और अयोध्या नगर निगम द्वारा मल्टी स्टोरी पार्किंग बनाई गई है, जहां पार्किंग के साथ-साथ फूड कोर्ट, डॉरमेट्री और बैंक्वेट हॉल की सुविधा भी दी गई है। इस तरह की 5 पार्किंग अब तक शुरू हो चुकी हैं। अयोध्या विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष और नगर आयुक्त विशाल सिंह के अनुसार प्राण प्रतिष्ठा के बाद बड़ी संख्या में आने वाले श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए मल्टीस्टोरी पार्किंग कॉम्प्लेक्स बनकर तैयार हैं। इनमें से 4 बिल्डिंग्स विकास प्राधिकरण ने तो एक नगर निगम ने बनाई है। हाल ही में एक पार्किंग कॉम्प्लेक्स का उद्घाटन किया गया है। इन मल्टीस्टोरी कॉम्प्लेक्स में पार्किंग के साथ-साथ अन्य सुविधाएं भी हैं। यहां बड़ी संख्या में लोगों के रुकने के लिए डॉरमेट्री की व्यवस्था की गई है। श्रद्धालुओं के लिए फूड कोर्ट, रेस्टोरेंट और बैंक्वेट हॉल की भी व्यवस्था की गई है। आने वाले दिनों में इन व्यवस्थाओं में और भी सुधार किए जाएंगे, ताकि अयोध्या धाम आने वाले श्रद्धालु यहां से सुखद अनुभव लेकर वापस जाएं।

1008 कुंडीय हनुमन महायज्ञ में शामिल हुए सीएम योगी

श्रीरामभद्राचार्य से की मुलाकात

एजेंसी

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को अयोध्या में तुलसी पीठाधीश्वर श्रीरामभद्राचार्य से मुलाकात की। इस दौरान वह 1008 कुंडीय हनुमन महायज्ञ में भी शामिल हुए। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शुक्रवार को अयोध्या दौरे पर पहुंचे। इस दौरान उन्होंने तुलसी पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीरामभद्राचार्य से भी मुलाकात की। पद्म पुरस्कार से सम्मानित श्रीरामभद्राचार्य के 75वें जन्मदिवस पर अयोध्या के काशीराम कॉलोनी के पास अमृत महोत्सव का आयोजन किया गया है। यह आयोजन 14 जनवरी से शुरू हुआ है, जो 22 जनवरी तक निरंतर चलेगा। आयोजन के छठवें दिन मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी यहां पहुंचे। आयोजन स्थल पर चल रही 1008 कुंडीय हनुमन महायज्ञ में शामिल हुए। योगी आदित्यनाथ ने आहुति देकर सुखी स्वस्थ व समृद्ध उत्तर प्रदेश की कामना की। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सबसे पहले जगदगुरु श्रीरामभद्राचार्य के पास पहुंचे। अंगवस्त्र ओढ़ाकर उनका सम्मान किया। यहां सीएम ने श्रीरामभद्राचार्य का हालचाल भी जाना। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ दर्शन-पूजन के उपरांत राम मंदिर भी पहुंचे। यहां मुख्यमंत्री ने प्राण-प्रतिष्ठा की तैयारियों का जायजा लिया। इसके बाद शुक्रवार को पूजन में भी शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने यहां दिव्य-भव्य मंदिर का अवलोकन किया। उन्होंने 22 जनवरी को होने वाले कार्यक्रम के मद्देनजर पूरे मंदिर परिसर का निरीक्षण किया। यहां विश्व हिंदू परिषद के संरक्षक दिनेश से व्यवस्था से जुड़ी जानकारी ली। फिर विहिप, ट्रस्ट के साथ ही स्थानीय प्रशासन-पुलिस के अफसरों को चुस्त-दुरुस्त व्यवस्था रखने का निर्देश दिया। अमृत महोत्सव पहुंचने पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का भी भव्य स्वागत किया गया। यहां विटेंज कार में बैठकर सीएम योगी आदित्यनाथ कथा स्थल के अंदर पहुंचे। इस दौरान श्रीरामभद्राचार्य जी के उत्तराधिकारी रामचंद्र दास, प्रदेश सरकार के मंत्री सूर्यप्रताप शाही, जयवीर सिंह, विधायक डॉ. अमित सिंह चौहान आदि अनेक जनप्रतिनिधि मौजूद रहे।

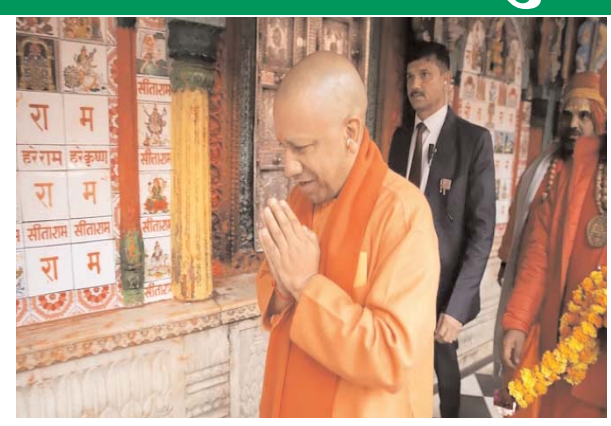

प्राण प्रतिष्ठा से पहले कीजिए प्रभु राम के दिव्य दर्शन 23 जनवरी से आम लोगों के लिए खुलेगा मंदिर

संवाददाता

लखनऊ। राम की दिव्य प्रतिमा के दर्शन कीजिए। इसे निहारिए। प्रणाम कीजिए। इसी प्रतिमा की 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा होनी है। इंतजार खत्म हुआ। प्रभु राम के दर्शन कीजिए। दिव्य प्रतिमा के दर्शन जिसका हम बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। यह तस्वीर गर्भगृह से आई है। इस तस्वीर में उनके पूरे स्वरूप को देखा जा सकता है। तस्वीर में रामलला माथे पर तिलक लगाए बेहद सौम्य मुद्रा में दिख रहे हैं। तस्वीर में उनके चेहरे पर भक्तों का मन मोह लेने वाली मुस्कान देखी जा सकती है। इसी प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को होनी है। रामनगरी आने वाले श्रद्धालुओं को शनिवार से तीन दिनों तक रामलला के दर्शन नहीं हो सकेंगे। 20 व 21 को अस्थायी राममंदिर में दर्शन बंद रहेगा। जबकि 22 जनवरी को नए मंदिर में रामलला की अचल मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की जानी है। इस दिन केवल प्राण प्रतिष्ठा समारोह में मौजूद अतिथियों को ही दर्शन मिलेगा। आम श्रद्धालु 23 जनवरी को नए मंदिर में रामलला के दर्शन कर पाएंगे। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभी तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने कहा कि सभी तैयारियां अंतिम चरण में हैं। सुरक्षा के पूरे इंतजाम किए जा रहे हैं। दर्शन के लिए लोगों से संयम बरतने के लिए कहा है। सीएम ने आगे कहा कि सभी के मन में उत्साह और उमंग है। यह मौका अयोध्या धाम में जश्न का है। मंडपपूजा के क्रम में मंदिर के तोरण, द्वार, ध्वज, आयुध, पताका, दिक्पाल, द्वारपाल की पूजा की गई। वहीं, पांच वैदिक आचार्यों ने अनुष्ठान की कड़ी में ही चारों वेदों का पारायण भी शुरू कर दिया है, जिनका पारायण 21 जनवरी को होगा।

अखिलेश-जयंत ने लोकसभा चुनाव के लिए की गठबंधन की घोषणा, जानें - कितनी सीटों पर लड़ेगी रालोद

संवाददाता

लखनऊ। सपा व रालोद के बीच लोकसभा चुनाव में सीटों को लेकर सहमति बन गई है। इसकी घोषण सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर की। समाजवादी पार्टी और राष्ट्रीय लोकदल ने लोकसभा चुनाव 2024 के लिए गठबंधन की घोषणा कर दी है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सोशल साइट पर रालोद अध्यक्ष जयंत चौधरी के साथ तस्वीर डाली और कहा कि राष्ट्रीय लोक दल और सपा के गठबंधन की सभी को बधाई! जीत के लिए सभी एकजुट हो जाएं, जुट जाएं! इसके जवाब में जयंत ने भी एक्स पर कहा कि राष्ट्रीय, संवैधानिक मूल्यों की रक्षा के लिए सदैव तत्पर, हमारे गठबंधन के सभी कार्यकर्ताओं से उम्मीद है कि अपने क्षेत्र के विकास और खुशहाली के लिए कदम मिलाकर आगे बढ़ें। दोनों नेताओं ने शुक्रवार को मुलाकात की। बताया जा रहा है कि सपा ने रालोद के लिए सात लोकसभा सीटें छोड़ी हैं। रालोद के राष्ट्रीय प्रवक्ता अनिल दुबे ने समझौते की पुष्टि की है।

विभागीय कार्यों में लापरवाही पर सीएमओ सिद्धार्थनगर निलंबित, ड्यूटी से गायब रहे अयोध्या के डॉक्टर भी बर्खास

संवाददाता

लखनऊ। विभागीय व चिकित्सकीय कार्यों में लापरवाही के चलते सिद्धार्थनगर के सीएमओ को निलंबित कर दिया गया है। वहीं, अयोध्या के चिकित्सक को बर्खास्त कर दिया गया है। विभागीय कार्यों में शिथिलता बरतने एवं चिकित्सा सेवाओं में लगातार लापरवाही के चलते सिद्धार्थनगर जिले के मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. नरेंद्र कुमार बाजपेयी को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। वहीं, अयोध्या के स्वशासीय राज्य चिकित्सा महाविद्यालय में कार्यरत सहायक आचार्य डॉ. मेराज अहमद को बर्खास्त कर दिया गया है। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक के निर्देश पर हुई इस कार्रवाई के बाद सिद्धार्थनगर के सीएमओ डॉ. नरेंद्र कुमार बाजपेयी को सहारनपुर मंडल के अपर निदेशक (स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण) के कार्यालय से संबद्ध कर दिया गया है। डॉ. बाजपेयी द्वारा चिकित्सकीय सेवाओं से संबंधित जनपद में संचालत राष्ट्रीय कार्यक्रमों के प्रति भी गंभीर लापरवाही बरतने एवं पद के दायित्वों का ठीक से निर्वाहन न करने संबंधित जांच के निर्देश जारी किए गए हैं। निदेशक, प्रशासन को जांच अधिकारी नियुक्त किया गया है। वहीं, रोगियों एवं सहकर्मियों से साथ खराब व्यवहार, चिकित्सकीय कार्यों में लापरवाही बरतने एवं बगैर जानकारी लगातार ड्यूटी से अनुपस्थित रहने के चलते सहायक आचार्य (सर्जरी) डॉ. अहमद को तत्काल प्रभार से बर्खास्त कर दिया गया है। डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक का कहना है कि चिकित्सकीय कार्यों में लापरवाही कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। आमजन को निःशुल्क एवं गुणवत्तापूर्ण उपचार उपलब्ध कराना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

शुक्रवार शाम सात बजे के बाद अस्थाई मंदिर में दर्शन नहीं कर सकेंगे आम श्रद्धालु

संवाददाता

लखनऊ। अयोध्या में होने वाले प्राण प्रतिष्ठा समारोह को देखते हुए रामलला का अस्थाई मंदिर शुक्रवार शाम से बंद कर दिया जाएगा। आम श्रद्धालु 23 जनवरी को सुबह 7 बजे से ही दर्शन-पूजन कर सकेंगे। प्राण प्रतिष्ठा समारोह में सुरक्षा व्यवस्था को देखते हुए आज से राम मंदिर आम श्रद्धालुओं के लिए बंद कर दिया जाएगा। शुक्रवार शाम सात बजे के बाद लोग अस्थाई राम मंदिर में दर्शन नहीं कर सकेंगे। राम मंदिर 20 से 22 जनवरी तक बंद रहेगा। प्राण प्रतिष्ठा समारोह के दिन मौजूद मुख्य अतिथि ही मंदिर में राललला का दर्शन कर सकेंगे। इसके बाद 23 जनवरी सुबह 7 बजे मंदिर अन्य श्रद्धालुओं के लिए खोल दिया जाएगा। प्राण प्रतिष्ठा समारोह की तैयारी के लिए जिला प्रशासन ने कलेक्ट्रेट परिसर में निर्वाचन कार्यालय के पास नए भवन में कंट्रोल रूम बनाया है। इसमें प्रभारी के साथ जिले स्तर के अधिकारी और कर्मचारी लगाए गए हैं। सीडीओ अनीता यादव के नेतृत्व में यहां तैयारियों को लेकर कार्य किया जा रहा है। यहां से जानकारी देने और सूचनाएं प्राप्त करने का काम किया जा रहा है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह में सुरक्षा व्यवस्था संभालने के लिए बृहस्पतिवार को जवानों की आखिरी टुकड़ी भी पहुंच गई। इनमें प्रदेश के विभिन्न जिलों की पुलिस के अलावा, आरआरएफ, एसएसबी, आईटीबीपी, पीएसी आदि जवान शामिल हैं। अधिकारियों ने इन्हें कर्तव्यबोध कराते हुए तैनाती स्थल के लिए रवाना किया। प्राण प्रतिष्ठा समारोह के मद्देनजर विभिन्न जिलों से लगभग 10,000 से अधिक जवानों को बुलाया गया है। इनमें 100 से अधिक डीएसपी, 325 इंस्पेक्टर व 800 उपनिरीक्षक, वीआईपी सुरक्षा के लिए तीन डीआईजी, 17 एसपी, 40 एएसपी, 82 डीएसपी, 90 निरीक्षक आदि शामिल हैं। अर्द्धसैनिक बलों की चार कंपनी आरआरएफ, दो कंपनी एसएसबी, एक कंपनी आईटीबीपी व 26 कंपनी पीएसी के जवान भी पहुंचे हैं।

सम्पादकीय

सिकुड़ते जनाधार के बीच अरमानों के पंख फैला कर क्या दर्शाना चाह रही है बसपा?

बात लोकसभा चुनाव की करें तो साल 2019 का चुनाव बसपा ने समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन में लड़ा था, बसपा को इस चुनाव में 10 सीटें मिली थीं और सपा का खाता पांच सीटों पर सिमट गया था। इस चुनाव के बाद सपा और बसपा का गठबंधन टूट गया। बसपा सुप्रीमो मायावती ने अपने जन्मदिन पर पर राजनैतिक धुंध पूरी साफ कर दी। बसपा अकेले चुनाव लड़ेगी, यह घोषणा करके मायावती ने उन लोगों की राह आसान कर दी है जो बसपा से गठबंधन की उम्मीद में एक कदम आगे तो दो कदम पीछे चलने को मजबूर हो रहे थे। मायावती के इस फैसले के निहितार्थ भी निकाले जायेंगे तो बसपा को बीजेपी की बी टीम बताने का सिलसिला भी तेज हो जायेगा। ऐसा इसलिए भी होगा क्योंकि बसपा के अकेले चुनाव लड़ने का सीधा फायदा भाजपा को मिलेगा। वहीं कांग्रेस का मायावती के इस फैसले से उत्तर प्रदेश में पैर पसारने का सपना टूट सकता है। कांग्रेस जानती है कि समाजवादी पार्टी के साथ 2017 के विधान सभा चुनाव में गठबंधन का उसे कोई फायदा नहीं मिला था, जिसके चलते लोकसभा चुनाव में भी कांग्रेस को अपना हश्र 2017 जैसा होता दिख रहा है। कांग्रेस के लिए बसपा की एकला चलो नीति इसलिए भी बड़ा झटका है क्योंकि राहुल गांधी लगातार इस बात की कोशिश में लगे थे कि बसपा भी इंडी गठबंधन का हिस्सा बन जाये। यदि ऐसा हो जाता तो निश्चित ही बीजेपी के लिए यूपी में राह मुश्किल हो सकती थी। वैसे मायावती ने चुनाव बाद गठबंधन की संभावनाओं को जिंदा रखा है। मायावती के पास करीब 18 फीसदी कोर वोटर हैं। मायावती जिस भी पार्टी से हाथ मिलाती हैं उसकी बल्ले-बल्ले हो जाती है, लेकिन दूसरी पार्टियों का वोट बसपा को ट्रांसफर नहीं होता है इसीलिये मायावती गठबंधन को लेकर ज्यादा उत्साहित नहीं रहती हैं। मायावती के सियासी सफर की बात की जाये तो वह चार बार उत्तर प्रदेश की सीएम बन चुकी हैं, जिसमें से तीन बार वह बीजेपी के गठबंधन के साथ मुख्यमंत्री बनीं तो 2007 के विधान सभा चुनाव में मायावती को अपने दम पर बहुमत मिला और चौथी बार राज्य की सीएम वो अकेले अपनी पार्टी के दम पर बनीं थीं लेकिन इसके बाद से ही मायावती की ताक़त घटने लगी। सबसे हालिया विधानसभा चुनाव में बसपा 403 विधासभा सीटों में से महज़ एक सीट जीत पायी। पार्टी का वोट शेयर 13 फ़ीसदी था। थोड़ा और पीछे जाएं तो 2017 के विधानसभा चुनाव में बसपा को 403 में से 19 सीटें मिली थीं। वोट शेयर 22 फ़ीसदी था। बात लोकसभा चुनाव की करें तो साल 2019 का चुनाव बसपा ने समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन में लड़ा था, बसपा को इस चुनाव में 10 सीटें मिली थीं और सपा का खाता पांच सीटों पर सिमट गया था। इस चुनाव के बाद सपा और बसपा का गठबंधन टूट गया। अखिलेश यादव ने कहा कि हमारा वोट तो बहन जी को ट्रांसफ़र हुआ लेकिन इसमें उनका नुकसान हो गया। वहीं मायावती ने भी चुनाव के बाद दिए गए बयान में कहा कि सपा के साथ जाकर उन्हें चुनाव में नुक़सान हुआ। एक अनुमान के मुताबिक़ उत्तर प्रदेश में दलितों में 65 उपजातियां हैं। इनमें सबसे बड़ी आबादी जाटव समुदाय की है। कुल दलित आबादी का 50 फ़ीसदी हिस्सा जाटव हैं। मायावती खुद इसी समुदाय से आती हैं। मायावती का अब दलितों के बीच वो प्रभाव नहीं रह गया जैसा पहले हुआ करता था। उनकी पार्टी जाटवों की पार्टी बन कर रह गई है। दलितों का एक अच्छा ख़ासा तबका बीजेपी के साथ चला गया है और ये पिछले लोकसभा चुनाव में स्पष्ट दिखाई दिया। जाटव और रैदास जैसी जातियां ही अब मायावती के कोर वोटर रह गई हैं। वाल्मीकि, पासी जातियां अब मायावती के साथ नहीं हैं। अब मायावती की वो सियासी ताक़त नहीं रही, जिसके लिए वो जानी जाती थीं। वो अब वोट काट तो सकती हैं लेकिन किंगमेकर नहीं बन सकतीं। मौजूदा हालात में तो कम से कम ऐसा ही लगता है। बहरहाल, मायवती को सबसे अधिक सियासी नुकसान भी भारतीय जनता पार्टी ने ही पहुंचाया है। साल 2014 के चुनाव के बाद उत्तर प्रदेश में बीजेपी की छवि बहुत बदली है। राज्य की राजनीति को क़रीब से समझने वाले लोग मानते हैं कि बीजेपी की छवि जिस तरह पहले ब्राह्मण और बनियों की पार्टी की थी आज वैसी छवि नहीं रही है। वो आज वैसी नहीं देखी जाती। अब बीजेपी का दायरा ऊंची जातियों की पार्टी से आगे बढ़ कर दलितों और पिछड़ों के बीच भी पहुंच गया है। दलितों में एक तबका बहन जी के सियासी रूप से कमजोर होने के बाद भाजपा की तरफ चला गया है। इसके अलावा बीते कुछ सालों में मायावती ने अपने पार्टी की स्थिति बेहतर करने के लिए कुछ नहीं किया है। उनकी पार्टी राजस्थान, पंजाब और मध्य प्रदेश में एक बड़ी खिलाड़ी हुआ करती थी लेकिन इन राज्यों को तो भूल जाइए वो अपने गृह राज्य यूपी में ही सिमटती जा रही है। आने वाला लोकसभा चुनाव मायावती और उनकी पार्टी के लिए अस्तित्व बचाने की लड़ाई होगी। बीते चुनावों में पार्टी का गिरता प्रदर्शन तो कम से कम इसी ओर इशारा करता है। पार्टी के घटते वोट शेयर और सीटें तो मायावती के लिए चुनौती हैं ही, उनके लिए एक बड़ी चुनौती ये भी है कि उनके बड़े नेता उनका साथ छोड़ चुके हैं या उन्हें पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया या है। स्वामी प्रसाद मौर्या, लालाजी वर्मा और इंद्रजीत जैसे बड़े क़द के नेता अब उनका साथ छोड़ चुके हैं। मौजूदा सांसद दानिश अली को बहनजी ने बाहर कर दिया है। ऐसे में अकेले पार्टी को ज़िंदा रखना मायावती के लिए आने वाले चुनाव में सबसे बड़ी चुनौती होगी क्योंकि उसका मुकाबला सपा और कांग्रेस के साथ-साथ मोदी की 'सेना' से भी होगा, जो लगातार दलित वोटरों को लुभाने में लगे हैं। बीजेपी लम्बे समय से दलित मतदाताओं को साधने की रणनीति पर काम कर रही है। पिछले दिनों हुए उपचुनाव में बसपा प्रत्याशी नहीं होने के बावजूद बीजेपी को सफलता नहीं मिली थी, जिससे बीजेपी को इस बात का अहसास अच्छी तरह से हो गया है कि 2024 की नैय्या दलित मतदाताओं को साधे बिना पार नहीं लगने वाली है। इसलिए बीजेपी का थिंकटैंक दलित बस्तियों में पैठ बनाने की योजना पर काम कर रहा है। बस्ती संपर्क एवं संवाद अभियान के जरिए दलित मतदाताओं में पैठ बनाने के लिए कार्यक्रम चलाया जा रहा है। बीजेपी अनुसूचित जाति मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष रामचंद्र कनौजिया ने बताया कि उत्तर प्रदेश के सभी संगठनात्मक जिलों में अध्यक्षों को दलित बस्तियों के बीच जाने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। बस्ती संपर्क एवं संवाद अभियान के जरिए बीजेपी की डबल इंजन की सरकार के कामों को बताया जा रहा है। बीजेपी कार्यकर्ता दलित बस्तियों में जाकर फीडबैक लेंगे। दलित बस्तियों से मिले फीडबैक को बीजेपी लोकसभा चुनाव में इस्तेमाल करेगी।

राहुल गांधी की पिछली यात्रा से भी कांग्रेस को कोई फायदा नहीं हुआ था

राहुल की यात्रा संकीर्ण एवं स्वार्थी उद्देश्यों से लिपटी है, जिसके दूरगामी परिणाम मिलना मुश्किल प्रतीत होता है। वैसे ऐसी यात्राओं से बहुत कुछ हासिल हो सकता है, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि पिछली यात्रा से न तो राहुल गांधी का कोई भला हुआ और न ही कांग्रेस का। कांग्रेस के नेता एवं सांसद राहुल गांधी अपने एवं कांग्रेस के राजनीतिक धरातल को मजबूती देने के लिये एक बार फिर यात्रा का सहारा ले रहे हैं। 4000 किलोमीटर की 'भारत जोड़ो यात्रा' के बाद अब वे 6700 किलोमीटर की 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' पर निकल चुके हैं। न्याय यात्रा के दौरान राहुल गांधी 14 राज्यों के 85 ज़िलों से गुजरेंगे, यात्रा मणिपुर से शुरू होकर नगालैंड, असम, मेघालय, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात से गुजरते महाराष्ट्र में मुंबई पर समाप्त होगी। कांग्रेस को जीवंतता देने एवं उसके पुनरुत्थान के लिए की जाने वाली इस यात्रा में इंडिया गठबंधन दलों एवं खुद कांग्रेस के कार्यकर्ताओं से भीड़ जुटाने और नारे लगाने भर के लिए भागीदारी की अपेक्षा राजनीतिक संवेदनशीलता और परिपक्वता की परिचायक नहीं है। मात्र 2024 के आम चुनाव के लिये निकाली गयी यह यात्रा संकीर्ण एवं स्वार्थी उद्देश्यों से लिपटी है, जिसके दूरगामी परिणाम मिलना मुश्किल प्रतीत होता है। वैसे ऐसी यात्राओं से बहुत कुछ हासिल हो सकता है, लेकिन इसकी अनदेखी नहीं की जा सकती कि पिछली यात्रा से न तो राहुल गांधी का कोई भला हुआ और न ही कांग्रेस का। यह किसी से छिपा नहीं कि कांग्रेस हिंदी पट्टी के तीन राज्यों- मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ में चुनाव जीतने में नाकाम रही। प्रश्न है कि इस बार ऐसा क्या अनोखा होने की आशा की जा सकती है? भारत की माटी में पदयात्राओं का अनूठा इतिहास रहा है। असत्य पर सत्य की विजय हेतु मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम द्वारा की हुई लंका की ऐतिहासिक यात्रा हो अथवा एक मुट्ठी भर नमक से पूरा ब्रिटिश साम्राज्य हिला देने वाला 1930 का डाण्डी कूच, बाबा आमटे की भारत जोड़ो यात्रा हो अथवा राष्ट्रीय अखण्डता, साम्प्रदायिक सद्भाव और अन्तर्राष्ट्रीय भ्रातृत्व भाव से समर्पित एकता यात्रा, यात्रा के महत्व को अस्वीकार नहीं किया जा सकता। भारतीय जीवन में पैदल यात्रा को जन-सम्पर्क एवं सशक्त जनाधार जुटाने का प्रभावी माध्यम स्वीकारा गया है। ये पैदल यात्राएं सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक यथार्थ से सीधा साक्षात्कार करती हैं। लोक चेतना को उद्बुद्ध कर उसे युगानुकूल मोड़ देती हैं। भगवान् महावीर ने अपने जीवनकाल में अनेक प्रदेशों में विहार कर वहां के जनमानस में अध्यात्म के बीज बोये थे। लेकिन इन यात्राओं की श्रृंखला में राहुल गांधी की यह राजनीतिक यात्रा नये राजनीतिक स्तस्तिक उकेरने में कितनी सफल होगी, यह भविष्य के गर्भ में हैं। मणिपुर से शुरू हुई भारत जोड़ो न्याय यात्रा राहुल गांधी की पिछली यात्रा का विस्तार ही है। अपने राजनीतिक कद को बढ़ाने के संकीर्ण एवं सीमित दायरों के कारण यात्रा का कोई चमत्कारी परिणाम मिलने में संदेह ही है। यात्राओं के जरिये राजनीतिक लाभ हासिल करने में कोई हर्ज नहीं लेकिन यदि भारत जोड़ो न्याय यात्रा कांग्रेस की है तो फिर उसका नेतृत्व सांसद राहुल गांधी के स्थान पर कांग्रेस

अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे क्यों नहीं कर रहे हैं? क्या यह एक तरह से परिवारवाद को नए सिरे से पोषण प्रदान करने के साथ इस बात को रेखांकित करने का प्रयास नहीं कि मल्लिकार्जुन खरगे बस नाम के अध्यक्ष हैं? कांग्रेस की दिक्कत यह है कि उसके पास ऐसा कोई चमत्कारिक नेतृत्व नहीं रह गया है जिसके पीछे तमाम पार्टियाँ चुनावी वैतरणी पार कर जाएँ, या जिसकी एक आवाज़ पर सभी राजनीतिक दल साथ आ जाएँ। बिना राजनीतिक लाभ के विपक्षी दल कितना इस यात्रा में सहभागिता करेंगे, यह भी एक प्रश्न है। 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' निकलने से पूर्व एवं निकलते ही कांग्रेस को बड़े झटके लग गये हैं। पहले महाराष्ट्र कांग्रेस के नेता मिलिंद देवड़ा ने इस्तीफा दे दिया और अब असम में अपूर्ब भट्टाचार्य ने कांग्रेस के सचिव पद से इस्तीफा दे दिया है। इसके साथ ही इंडिया गठबंधन में बिखराव एवं टूटन की स्थितियां सीटों के प्रश्न पर बनी हुई हैं। संयोजक पद की पेशकश नीतीश कुमार ने ठुकरा दी, जेडीयू का यह कदम भी एक टूटन का ही प्रतीक है। भले ही मल्लिकार्जुन खरगे को इंडिया का अध्यक्ष बनाकर इस टूटन को ढंकने की कोशिश हुई है। दूसरी ओर पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में बने मतभेद छुप नहीं पा रहे। समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव ने सार्वजनिक तौर पर कहा था कि यात्रा से पहले सीटों का बंटवारा हो जाना चाहिए। जाहिर है, सहयोगी दलों के मन में कही न कहीं यह भाव भी है कि यात्रा के जरिए अगर देश का माहौल कांग्रेस या राहुल गांधी के पक्ष में बना तो उसका लाभ विपक्षी दलों को कैसे मिलेगा? जाहिर है इंडिया गठबंधन के दल कांग्रेस की चालाकी एवं चतुरता को महसूस कर रहे हैं। सत्ता पक्ष एवं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कोई कमजोरी फ़िलहाल तो विपक्ष एवं कांग्रेस के पास नहीं है जिसे पकड़ कर इस यात्रा में हल्ला मचाया जाए, जनाधार बटोरा जाये। उल्टे अयोध्या और श्रीराम मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा के कारण सत्ता पक्ष मज़बूत होता जा रहा है और इसके निमंत्रण को ठुकरा कर कांग्रेस एवं विपक्षी दलों ने अपने पांवों पर खुद कुल्हाड़ी चला दी है। यदि कांग्रेस या विपक्षी दल इस समारोह में भाग लेते तो उन पर लगा श्रीराम-विरोध एवं हिन्दू-विरोध का तगमा नहीं लगता, भाजपा का जनाधार का विस्तार भी निश्चित ही कुछ कम होता। राजनीति तो ऐसे अवसरों को पकड़ लेने का ही खेल है। परिवार एवं व्यक्तिवादी सोच कांग्रेस की विडम्बना एवं विसंगति है। वास्तव में कांग्रेस में वही होना है, जो राहुल गांधी चाहेंगे। यह स्वाभाविक है कि भारत जोड़ो न्याय यात्रा के माध्यम से राहुल गांधी कांग्रेस के पक्ष में चुनावी माहौल बनाने की कोशिश करेंगे। इसमें वह कितना कामयाब होते हैं, यह बहुत कुछ इस पर निर्भर करेगा कि उनकी ओर से किन मुद्दों को उभारा जाता है और उन पर क्या कहा जाता है? यह तो तय है कि राहुल गांधी भाजपा और विशेष रूप से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को निशाने पर रखेंगे, लेकिन ऐसा करते हुए वह यदि जनता का ध्यान आकर्षित करने के साथ कोई नया विमर्श खड़ा नहीं कर पाते तो बात बनने की बजाय बिगड सकती है। राहुल गांधी की समस्या यह है कि वह मोदी सरकार की आलोचना तो खूब करते हैं, लेकिन देश के समक्ष उपस्थित समस्याओं के समाधान का कोई प्रभावी तरीका नहीं बता पाते। राहुल गांधी देश को क्या जोड़ेंगे जब उनका इंडिया गठबंधन ही एकजुट नहीं हो पा रहा है। कांग्रेस नेता मानें या न मानें भारत जोड़ो न्याय यात्रा की सफलता की सबसे बड़ी कसौटी विपक्ष की एकजुटता एवं चुनावी प्रदर्शन को ही माना जाएगा। इस लिहाज से न्याय यात्रा के साथ ही कांग्रेस को इंडिया गठबंधन के मोर्चे पर भी तेजी से अपने राजनीतिक कौशल को आगे बढ़ना होगा। सीटों के बंटवारे के साथ न्यूनतम साझा कार्यक्रम को अंतिम रूप देने का काम भी जितनी जल्दी निपटाया जाएगा, मतदाताओं को अपनी एकजुटता का यकीन दिलाने में उतनी आसानी होगी। ऐसा हो गया तो इस यात्रा की सबसे बड़ी सफलता होगी। कांग्रेस भले ही न्याय यात्रा को उद्देश्य देश में फासीवादी ताकतों को रोकने, लोकतंत्र, संविधान को बचाने और भावी पीढियों के जीवन और कैरियर के निर्माण के लिए बता रही है। यात्रा लोगों के लिए न्याय की मांग, रोजगार की कमी, बढ़ती कीमतों, अमीर-गरीब के बीच बढ़ती खाई, सरकारी कंपनियों को बंद करने और बेचने के खिलाफ है। वहीं किसानों को उचित मूल्य दिलाने तो महिला पहलवानों और अन्य लोगों को न्याय दिलाने के लिए है। मणिपुर की हिंसा को लेकर प्रधानमंत्री के उदासीन और असंवेदनशील होने की बात उठाते हुए कांग्रेस भूल रही है कि ये ऐसे मुद्दे हैं जिन पर मोदी सरकार ने ही सबसे ज्यादा ध्यान दिया है। लगता है राहुल गांधी मोदी विरोध एवं राष्ट्रीय ज्वलंत मुद्दों को उठाने के नाम पर देश के विरोध पर उतर जाते हैं। राहुल गांधी इस तरह का आचरण इसीलिए करते हैं, क्योंकि उन्हें शासन संचालन, राजनीतिक परिपक्वता के तौर-तरीकों का कोई अनुभव नहीं। पूरा विपक्ष यह नहीं समझ पा रहा है कि सत्ताधारी दल के विरोध और देश के विरोध के बीच फर्क है। सत्ताधारी दल का विरोध करना स्वाभाविक है, लेकिन उस लकीर को नहीं पार करना चाहिए, जिससे वह देश का विरोध बन जाए। राहुल गांधी के लिये सरकार और राष्ट्र के विरोध के बीच अंतर समझना आवश्यक है और अपनी इस यात्रा में वे इस तरह का विवेक एवं समझदारी प्रदर्शित कर पाये तो इससे कुछ हासिल हो सकता है।

हिंदी-अंग्रेजी का झगड़ा अब बेमानी

जिस तरह देश की विविध अनुसूचित भाषाओं के लोग यह सोचते हैं कि हिंदी की वजह से उनकी भाषा का प्रभाव कम हो रहा है, उसी तरह हिंदी सेवियों की एक बड़ी तादाद ऐसा मानती है कि अंग्रेजी के कारण हिंदी का प्रसार बाधित हो रहा है। लेकिन खुद अंग्रेजी का क्या हाल है? जब हम एक पूर्ण और सशक्त भाषा की बात सोचते हैं, तो हमारे जेहन में उसके कुछ निश्चित प्रतिमान उभरते हैं। जैसे, उसकी एक विकसित लिपि होगी, ध्वनि संसार होगा, शब्दों का विशाल भंडार होगा। शब्दों की वर्तनी, उनका उच्चारण और अर्थ सुनिश्चित होगा। व्याकरण होगा। उसका अपना साहित्य होगा, जिसे पढ़ने वाले लोग होंगे। और उसे सत्ता (आर्थिक-राजनीतिक) का समर्थन प्राप्त होगा। क्या इन पारंपरिक मानकों पर आज की कोई भी भाषा दावे से खरी उतरती है? अंग्रेजी का प्रयोग करने वाली नई पीढ़ी बहुत तेजी से इमोजी की तरफ बढ़ रही है। कोई बात अच्छी लगे तो एक पूरा वाक्य लिखने की जरूरत नहीं है। किसी बात की आलोचना करनी हो और इस तरह से करनी हो कि दूसरा पक्ष आहत न हो, तो उसके लिए कोई अच्छा शब्द ढूंढने की जरूरत नहीं है। यहां तक कि इमोजी से पूरे प्रेम पत्र लिखे जा सकते हैं। हम भाषा के संदर्भ में आर्थिक प्रभुत्व की चर्चा करते हैं। अब बहुराष्ट्रीय कंपनियों के कारोबारों और उत्पादों के साथ भी इमोजी इस्तेमाल होने लगे हैं। ऐपल, गूगल, माइक्रोसॉफ्ट, सैमसंग, ट्विटर, फेसबुक, एलजी, एचटीसी, बर्गर किंग और पेप्सीको जैसी तमाम कंपनियां इमोजी इस्तेमाल कर रही हैं, और उनके साथ उनके ग्राहक भी। उनके बीच एक नई भाषा विकसित हो रही है। यानी रोमन लिपि और शब्दों की सही वर्तनी का महत्व खत्म! जब भी कोई नई भाषा विकसित होती है, वह पारंपरिक भाषाओं का दायरा संकुचित करती है। समाज में ऐसे कई तरह के छोटे-मोटे संकेत विकसित होते हैं जो समय के साथ प्रचलन से बाहर हो जाते हैं- यह सोच कर हम इमोजी की भाषा को नजरअंदाज नहीं कर सकते। यह लोगों के बीच का भाषिक संवाद बदलने का एक नमूना है। इसके और भी पक्ष हैं। जब हम ऑक्सफोर्ड और वेब्स्टर के शब्दकोशों में सही वर्तनी और हिज्जे ढूंढ रहे होते हैं, तब इंटरनेट पर भेजे जा रहे संदेशों में उन शब्दों के संक्षिप्त रूपों का धड़ल्ले से इस्तेमाल हो रहा होता है। वहां सिर्फ 'आय लव यू' के लिए इलू (आयएलयू) और 'फियर ऑफ मिसिंग यू के लिए फोमू' (एफओएमयू) ही नहीं बन रहा है, एक पूरी शब्दावली विकसित हो रही है, जिसमें बीटुबी (बिजनेस टु बिजनेस), केपीआई (की-परफॉर्मेंस इंडीकेटर), सीपीएम (कॉस्ट पर थाउजैंड) और यूजीसी (यूजर जेनरेटेड कॉन्टेंट) जैसे प्रयोग भी शामिल हैं। ये नए संक्षिप्त शब्द पहले के अनेक शब्दों से बने पूरे फ्रेज को विस्थापित कर देते हैं। आज सिर्फ दोस्तों की अनौपचारिक मंडली में ही नहीं, कॉर्पोरेट की औपचारिक चिट्ठियों, व्यापारिक पत्राचार और तकनीक की दुनिया में भी इस भाषा में लिखित संवाद हो रहे हैं। इंटरनेट की दुनिया में इन संक्षिप्त रूपों को मान्यता प्राप्त है। इनमें से यदि कोई नवनिर्मित शब्द समझ में न आए तो उसे गूगल कर आसानी से देखा जा सकता है। आज से चार-पांच दशक बाद वाली पीढ़ी के लिए शायद यह जान पाना भी मुश्किल हो कि फोमू किन-किन शब्दों के संक्षेपीकरण से बना है। उसके लिए फोमू ही वह शब्द होगा, जिसके माध्यम से वह अपनी बात कहेगी। फेसबुक पर हर मिनट 50 लाख से ज्यादा लोग अपनी टिप्पणियां पोस्ट करते हैं और 30 लाख से ज्यादा लोग अपना स्टेटस अपडेट करते हैं। इंस्टाग्राम पर प्रति मिनट करोड़ों की तादाद में पोस्ट किए जाते हैं और मोबाइल से पचास लाख से ज्यादा ट्वीट भेजे जाते हैं। इसी एक मिनट में इंटरनेट की दुनिया में डेढ़ लाख से ज्यादा टेक्स्ट का आदान-प्रदान होता है। हिंग्लिश और चिंग्लिश जैसे नए भाषा रूपों ने अंग्रेजी के व्याकरण की अनिवार्यता को काफी संकुचित कर दिया है। यहां तक कि स्वीडन और फिनलैंड जैसे बाल्टिक देशों के लोग भी अपनी भाषाओं के दायरे से बाहर निकल कर जब कभी टूटी-फूटी अंग्रेजी में संवाद करने की कोशिश करते हैं, तो ज्यादातर वह व्याकरण के नियमों से परे ही होती है। हां, लिपि जरूर रोमन बनी हुई है। नई पीढ़ी तक अंग्रेजी की अपनी वर्तनी बचाने के लिए शिक्षक, संस्थाएं और सरकारें जी तोड़ कोशिशें कर रही हैं। इंग्लैंड, अमेरिका, न्यूजीलैंड, कनाडा, बहामा, जमैका, गुयाना, दक्षिणी अफ्रीका, यहां तक कि एशियाई देशों में भी युवा छात्रों के लिए स्पेलिंग और हिज्जे की प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं। उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए ट्रॉफियां दी जा रही हैं। लेकिन शब्दकोश, व्याकरण की पढ़ाई और भाषा संरक्षण के तमाम उपायों के बावजूद अंग्रेजी अपने को संभाल नहीं पा रही है। टेक्नॉलजी और वैश्वीकरण ने आज की सभी भाषाओं की जड़ें हिला दी हैं। भाषाओं के पारंपरिक ढांचे दरकते हुए नजर आ रहे हैं। ब्रिटेन में युवा छात्रों द्वारा अंग्रेजी शब्दों की सही वर्तनी की उपेक्षा और हिंदुस्तान में निरक्षरों द्वारा अपने मोबाइल फोन पर आए कॉलर नंबर को उनकी आकृति या विशिष्ट रिंग टोन से पहचानने की प्रवृत्ति को अभी तक हम दो अलग-अलग स्थानीय सामुदायिक व्यवहारों की तरह देख रहे हैं। शायद हम इन दोनों के बीच के संबंध को पहचान नहीं पा रहे। ये वैश्विक स्तर पर बहुत तेजी से अपना साम्राज्य बढ़ा रही अंग्रेजी भाषा के मानक रूप के क्षरण के कुछ उदाहरण हैं। लेकिन हमारे भाषाई व्यवहार में ऐसे और भी कई संकेत देखने को मिल रहे हैं। भाषाएं मरती नहीं, वे अपना रूप बदलती हैं, कुछ अवशेषों के साथ। अंग्रेजी भी अपनी लिपि और कुछ ध्वनियों के साथ दूसरी भाषाओं की तुलना में शायद कुछ ज्यादा लंबे समय तक बनी रहे, लेकिन वह अंग्रेजी यह अंग्रेजी नहीं होगी।

अंग्रेजी से फैलेगा दुनिया में भारत का तत्वज्ञान

बहुत छोटा था जब पुस्तकें मेरी दोस्त बन गई थीं। नाना, दादा, पिताजी अक्सर मेरे लिए छोटी-छोटी कहानियों की किताबें लेकर आते। मैं उन्हें बहुत चाव से पढ़ता। किसी में जंगल के जानवरों की, तो किसी में लोक-जीवन से जुड़ी सुंदर कथाएं होतीं। सभी में कुछ न कुछ संदेश होता। किसी में दोस्ती की ताकत का, किसी में सच की जीत का, किसी में घमंड, बेईमानी, बुराई और दुष्टता की हार का, तो किसी में प्रेम, आस्था, समर्पण, परोपकार, त्याग, तप, साधना और विवेक जैसे खुशनुमा स्वरों का संगीत लहराता। उनमें ऐसे सुंदर नैतिक गुण छुपे होते, जिन्हें हर कोई जीवन में गूंथ ले तो चारों ओर सुख ही सुख के सूरज खिल उठते। थोड़ा बड़ा हुआ, तो इन किताबों के अगल-बगल विश्व साहित्य की चुनिंदा कृतियों ने भी अपना स्थान बना लिया। रोज देर रात तक पढ़ता और उनमें खिंचीं दुनिया की रंग-बिरंगी तस्वीरों से रोमांचित होता। यह नशा ही कुछ अलग सा था। सागर में कोई जितना गहरा उतरता है, सागर का सौंदर्य उतना ही मनोरम, उतना ही अनुपम होता जाता है। बहुत जल्द मैं पिता के पुस्तक-संग्रह से पुस्तकें लेकर उनके भीतर डुबकी भरने लगा। पिता इंजिनियर थे, पर उन्हें अध्यात्म, जीवन दर्शन, नैतिकता, धर्म और तत्वज्ञान जैसे गूढ़ विषयों में गहरी

दिलचस्पी थी। वेद, पुराण, उपनिषद्, श्रीमदभगवदगीता, विवेकानंद और अरविंद साहित्य, बौद्ध धर्म, जैन धर्म से जुड़ी अनेक रचनाएं उनकी लाइब्रेरी में थीं। मैं उन्हें उठाता और अपने कमरे में ले आता। रात के खाने के बाद उनमें देर तक डूबा रहता। कुछ समझ में आता, कुछ नहीं। जो समझ न आता, उसे फिर से पढ़ता। जो समझ में आता, उसे भी दोबारा पढ़ता। हर बार कुछ नया मिलता। सच कहूं तो ये अजर-अमर कृतियां ज्ञान का सूरज हैं। जीवन यात्रा में सत-असत की पहचान, कर्तव्य और अधिकार का बोध, ज्ञान-विज्ञान का आलोक, आत्म साधना और जीवन को सुंदर बनाने का आध्यात्मिक प्रकाश उनमें ये सभी गुण अंतर्निहित हैं। बृहदारण्यक उपनिषद् हमें 'असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय' के ज्ञान-मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग भवेत' की सहस्रों साल पुरानी सर्वमंगलकारी सोच 1978 की विश्व समुदाय की 'हेल्थ फॉर ऑल' आल्मा आटा घोषणा से कहीं अधिक सुंदर और गहरी है। कार्यों और कारणों के संबंध को बताने वाला सच्चा ज्ञान, पूर्वजों और मनीषियों के मन की समाधि की सच्ची पूंजी, अज्ञेय से ज्ञेय की यात्रा जैसे अनन्य आत्म-तत्व इन आदि ग्रंथों में सुरक्षित हैं। हम इन तत्वों को ग्रहण करें, आत्मसात करें और उन पर आचरण करें, उनकी सार्थकता इसी में निहित है। उनका सच्चा लक्ष्य प्राण अमृत तत्व का साक्षात्कार है, न कि बौद्धिक कुतूहल जागृत करना। यह ज्ञान जन-जन के लिए साफ-सुथरी, सरल भाषा और सरल अभिव्यक्ति में उपलब्ध हो, तभी हर कोई उससे लाभ पा सकता है। मेंडारिन (चीनी) के बाद दुनिया में सबसे अधिक बोली, समझी, पढ़ी जाने वाली अंग्रेजी में भी यह आध्यात्मिक साहित्य उपलब्ध हो तो कितना अच्छा होगा। ऐसा नहीं कि यह साहित्य पहले अंग्रेजी में अनूदित नहीं हुआ, लेकिन जो हुआ है वह प्रायः आम बोलचाल की भाषा में नहीं, बल्कि अधिकांशतः विद्वतापूर्ण कृतियों के रूप में हुआ है। आवश्यकता उसे सरल रोचक ढंग से जीती-जागती तस्वीरों के साथ प्रस्तुत करने की है, जिससे अधिक से अधिक लोग उसका रस ले सकें, उसे आत्मसात् कर सकें और यह दुनिया सुंदर बन सके। जीवन का संपूर्ण सौंदर्य तभी खिलता है, जब हम उच्च कोटि का जीवन जीने की कला सीख लेते हैं।

विजयराघवगढ़ पुलिस ने किया अंधी हत्या का खुलासा पत्नी ने प्रेमी और मुंह बोले भाई के साथ मिलकर पति की कर दी थी हत्या

द, अचीवर टाइम्स से पप्पू उपाध्याय

मध्य प्रदेश,कटनी। पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन के निर्देशन व मनोज केडिया अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, एसडीओपी के.पी. सिंह, ख्याति मिश्रा नगर पुलिस अधीक्षक कटनी के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी विजयराघवगढ़ अनूप सिंह द्वारा अपने थाना स्टाफ की टीम के साथ मिलकर अंधी हत्या के तीन आरोपियों को गिरफ्तार करने में मिली सफलता ! कार्यवाही का विवरण - दिनांक 16 जनवरी 2024 को दोपहर थाना विजयराघवगढ़ मोबाईल से सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम बंजारी वन परिक्षेत्र के मेड़ पर एक अज्ञात पुरूष का शव मृत अवस्था में पड़ा है। सूचना पर थाना प्रभारी विजयराघवगढ़ अपने स्टाप के साथ घटना स्थल पहुचकर जांच प्रारंभ करते हुये अज्ञात पुरूष की पहचान हेतु वहां से निकलने वाले राहगीरों व आसपास के लोगों से पूछताछ फोटो दिखा कर पहचान शुरू किया किन्तु काफी मसक्कत करने के बाद धनवाही गांव के कुछ लोग शव को देखने पर उसकी पहचान रमाकांत पटेल पिता कृष्ण कुमार उम्र करीबन 23 वर्ष निवासी ग्राम धनवाही थाना बदेरा के रूप में हुई। मृतक के परिजनों को पहचानकर्ताओं के माध्यम से सूचित किया गया। अज्ञात मृतक व अज्ञात आरोपी की तलास करने हेतु एफ.एस.एल. टीम जबलपुर एवं फिंगर प्रिंट, डाग स्काट कटनी की टीम मौके पर पहुची तथा उक्त घटना स्थल पर मृतक के परिजन भी घटना स्थल पर उपस्थित आये। जिन्होंने रमाकांत को पहचानना बताया। मौके पर जांच कार्यवाही करने के दौरान मृतक के परिजन अत्यंत आक्रोशित होते हुये शव का पी.एम. शीघ्र न कराते हुये लाईन आडर की स्थिति निर्मित का भरसक प्रयास किया गया। जिसकी सूचना थाना प्रभारी ने पुलिस अधीक्षक कटनी को दिया। जिनके दिशा निर्देश पर नजदीकी थाना बरही एवं कैमोर का पुलिस बल भेजा गया व थाना प्रभारी के बारम्बार समझाईश और नियमानुसार कार्यवाही हेतु निरंतर प्रयास करते रहे। जिसके काफी समझाने के बाद आक्रोशित भीड़ पी.एम. कराने के लिये जारी हुई, किन्तु रात्रि का वक्त हो जाने के कारण समय पर पी.एम. नहीं हो सका। दिनांक 17 जनवरी 2024 को डाक्टर टीम डा. विनोद कुमार, डा. वर्षा बत्रा एवं डा. डेनियल सी.एच.सी. विजयराघवगढ़ द्वारा शव का पी.एम. किया गया। जिनके द्वारा मृतक रमाकांत पटेल की मृत्यु गला दबने से स्वास गति अवरूद्ध होने के कारण मृत्यु होना लेख किया गया। उक्त आधार पर पुलिस के द्वारा अज्ञात आरोपी के विरूद्ध अपराध धारा 302, 201 भादवि के तहत अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना कार्यवाही शुरू की गई। विवेचना कार्यवाही के दौरान मृतक के परिजनों से हर पहलू को ध्यान में रखते हुये पूछताछ शुरू की गई मृतक के परिजनों के द्वारा बताया गया कि दिनांक 15/01/2024 को रमाकांत पटेल ग्रह ग्राम धनवाही थाना बदेरा जिला मैहर (सतना) जो कि अपनी पत्नी से मिलने अपनी ससुराल ग्राम देवसरीइंदौर थाना क्षेत्र विजयराघवगढ़ जाने को कहकर घर से निकला था, जो अपने ससुराल देवसरीइंदौर नहीं पहुचा और न ही घर धनवाही वापस आया। इसके अलावा कोई तत्थ्यात्मक परिजनों के द्वारा नहीं दे पा रहे थे। जिससे मृतक की हत्या करने वाले आरोपी की तलास पता कर पाना और भी मुश्किल हो गया था। तभी पुलिस अधीक्षक कटनी के द्वारा तत्काल थाना प्रभारी विजयराघवगढ़ के नेतृत्व में पुलिस की तीन टीम तैयार की गई। जिसमें पुलिस तकनीकी टीम, मुखबिर तंत्र को मजबूत करते हुये संदेहियों से पूछताछ शुरू किया। जो पुलिस को काफी गुमराह का प्रयास किया गया। पुलिस द्वारा शख्ती से पूछताछ करने पर मृतक रमाकांत की पत्नी के नजदीकी व्यक्ति राजकुमार उर्फ राजा पटेल से पूछताछ शुरू किया तो उसने सारा घटनाक्रम बताते हुये बताया कि रमाकांत पटेल और राखी की शादी मई 2023 में हुई थी, तो उसका पति उसे मारपीट कर प्रताड़ित करता था, जिस कारण से वह अपने मायके आ गई थी। बीच-बीच में एक-दो बार गई है, लेकिन दोनों के बीच अनबन होने के कारण वह अपने मायके देवसरीइंदौर में ही रही थी। करीब एक सप्ताह पहले से राखी का पति मृतक रमाकांत लगातार राखी से मोबाईल पर बातचीत किया करते थे। यदि राखी से बात नहीं होती थी तब रमाकांत, राजकुमार उर्फ राजा के मोबाईल से बात किया करता था और मिलने व ससुराल ले जाने की बात को लेकर वह परेशान हो गई और अपने प्रेमी विनय यादव और उसके दोस्त राजकुमार उर्फ राजा पटेल जो कि राखी का मुंह बोला भाई है, उसको रमाकांत को विजयराघवगढ़ बुलवाकर उसकी हत्या करने का षड़यंत्र रच डाला और दोनों को राखी ने यह कहकर भेज दिया कि तुम लोग उसे जैसे भी उसे मार डालो मैं ससुराल नहीं जाना चाहती न ही रमाकांत से मिलना चाहती हूं। रमाकांत पटेल पूर्व से तयशुदा समय पर अपनी पत्नी से मिलने के लिये दिनांक 15/01/2024 को विजयराघवगढ़ आया और विनय यादव एवं उसका दोस्त राजकुमार उर्फ राजा से मुलाकात हुई। रमाकांत ने पूछा कि राखी कहां है तो दोनों ने कहा कि वह बस से आ रही है। फिर विनय और रमाकांत दोनों ने शराब पी, और दोनों का बिवाद शुरू हो गया। जैसा कि पूर्व से तय था कि रमाकांत की हत्या करना है, तो जब वह अपनी पत्नी राखी से मिलने के लिय मोटर साईकल में बैठकर जाने लगा तो शर्दी में पहनने वाली उनी कनपटी को पीछे से जोर से पकड़कर खींच लिया और उसके आंख में अंगूठी से वार किया जिससे उसके आंख में चोट आ गई जिससे वह गिर गया। फिर उसकी छाती में चढ़कर लात जूते से मारने लगा और राजकुमार उसके हांथ पकड़ लिये और रमाकांत के मरने तक मारते रहे। रमाकांत के मरने के बाद उसका मोबाईल एवं मोटर साईकल लेकर जाने लगे लेकिन मोटर साईकल चालू नहीं होने से वहीं पर छोड़कर अन्य वाहन से लिफ्ट लेकर भाग कर अपने घर देवसरीइंदौर जाते समय बीच में पड़ने वाली नदी में मृतक का मोबाईल तोड़कर फेक दिया। जिसे गोताखोर टीम की मदद से नदी में फेका गया मोबाईल को ढूढ निकाला और हत्या के अज्ञात आरोपियों को गिरफ्तार कर अंधे कत्ल का खुलासा करने में सफलता पाई गई। गिरफ्तार किये गये आरोपियों को न्यायालय पेश किया जा रहा है। सराहनीय भूमिका - निरीक्षक अनूप सिंह थाना प्रभारी विजयराघवगढ़, निरीक्षक कार्य. सुदेश समन थाना प्रभारी कैमोर, उप निरीक्षक योगेश मिश्रा, सउनि कार्य. जयराम साकेत, महिला सउनि मीना धुर्वे, प्रधान आरक्षक प्रेम पटेल, अरविंद गर्ग, मुकेश परस्ते, प्रशांत विश्वकर्मा, आरक्षक पप्पू प्रजापति, अंजनी झा, लालू यादव, अटल कुमार, हरिओम राजपूत, नीतेश सिंह, सुरेन्द्र ठाकुर, महिला आरक्षक नेहा राजपूत, आरक्षक चालक मज्जू कोल एवं ग्राम रक्षा समिति के सदस्य संजू कोल, रघुनाथ साहू, नेक सिंह की सराहनीय भूमिका रही है।

एक नज़र

विश्व हिंदू परिषद/बजरंग दल द्वारा मासिक बैठक का आयोजन

विश्व हिंदू परिषद/बजरंग दल द्वारा मासिक बैठक का आयोजन प्रखंड पहला के ग्रा0 महिमापुर में किया गया जिसमें दुर्गेश सिंह रामभक्त जिला स0 धर्माचार्य संपर्क प्रमुख जी ने ? के उच्चारण के साथ बैठक की शुरुआत कर राष्ट्रवाद, रामराज्य व धर्म के बारे में लोगों को बताया व 22 जनवरी को राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा के बारे में जानकारी व 22 जनवरी को उत्सव के रूप में मनाने के लिए आग्रह किया। बैठक में प्रखंड अध्यक्ष राजेंद्र जी, प्रखंड सह मंत्री वीपी जी,खण्ड उपाध्यक्ष राजेश जी खण्ड संयोजक प्रिन्स पांडेय जी न्याय पंचायत रामपुर उपाध्यक्ष सुशील कुमार व अन्य सैकड़ों कार्यकर्ता व हिन्दू समाज उपस्थित रहा।

श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के प्रकाशोत्सव पर निघासन नगर पंचायत में नगर कीर्तन निकाला गया

दअचीवर टाइम्स अमित कुमार बाजपेई

निघासन खीरी । मानवता के रक्षक श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के प्रकाशोत्सव पर निघासन नगर पंचायत में नगर कीर्तन निकाला गया। नगर कीर्तन की शुरुआत गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा से प्रारंभ हुई शोभायात्रा का स्वागत जगह जगह किया गया। शोभायात्रा में श्री गुरुद्वारा साहिब को आकर्षक ढंग से सजाया गया था।शोभायात्रा में चल रहे पंच प्यारे लोगों की श्रद्धा का केंद्र बने थे।सैकड़ों महिलाए व बालिकाए शोभायात्रा के आगे झाड़ू लगाकर सेवा कर रहे थे। उसके पीछे पंच प्यारे थे और गुरु ग्रंथ साहिब जी की पालकी।जिसमें गुरु की महिमा का गुणगान करते हुए भारी मात्रा में श्रद्धालु चल रहे थे। शोभायात्रा में गतका पार्टी ने हैरतअंगेज़ करतब दिखाते हुए लोगों को आकर्षित किया।

मजदूरी ईंट ढुलाई, तो कब होती है पढ़ाई

इंद्र कुमार पटेल

लखनऊ। मामला ढीमरखेड़ा ब्लाक के ग्राम पोंडी खुर्द सशकीय स्कूल का है। ताजा मामला तहसील छेत्र ढीमरखेड़ा के पोंडी खुर्द का है, जहां प्राथमिक विद्यालय के बालक स्कूल में शिक्षा ग्रहण करने आते हैं, द्यपर मजदूरी के साथ साथ झाड़ू पोंछा करते हैं, यह सासन मध्य प्रदेश सरकार पर कई सवाल खड़े करते हैं।

क्यों माता पिता बालकों को भेजते हैं प्राईवेट स्कूल।

राज्य सासन को वर्तमान परिदृश्य पर नजर डालते हुए,सशकीय विद्यालयों कि दयनीय स्थिति पर सख्त कार्रवाई करना चाहिए। आए दिन भत्स और वीभत्स रूप से जो तस्वीर सश्कीय विद्यालय की आ रही हैं वो अति निंदनीय है। चूंकि शिक्षा से स्वयं,राज्य, वा देश निर्माण होता है,पर अगर सक्षम उत्तर दायित्व पदों पर आसीन जनों ने विषय को गम्भीरता से नहीं लिया तो, इसके परिणाम हानिकारक ही होंगे।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में हुई सीएम डैशबोर्ड की बैठक

द अचीवर टाइम्स निशांत शुक्ला

हरदोई। कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में सीएम डैशबोर्ड की समीक्षा बैठक हुई। जिलाधिकारी ने कहा कि आईजीआरएस पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों का ससमय गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित किया जाए। विभागीय योजनाओं में प्रगति लाने के साथ-साथ ससमय पोर्टल पर फीडिंग भी सुनिश्चित की जाए। खराब रैंकिंग वाले अधिकारियों की जवाबदेही निर्धारित की जाएगी। मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना के अंतर्गत खराब रैंकिंग को लेकर जिलाधिकारी ने नाराजगी जतायी। बिजली विभाग की खराब प्रगति व बैठक में अनुपस्थिति पर जिलाधिकारी ने नाखुशी जाहिर की। जिलाधिकारी ने कहा कि निर्माण कार्यों की प्रगति लक्ष्य के अनुरूप सुनिश्चित करते हुए ससमय फीडिंग की जाए। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी सौम्या गुरुरानी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी रोहताश कुमार व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा, अनदेखी कर रहा तहसील प्रशासन

❖ श्रीनगर गांव की सरकारी जमीन पर दबंग कर रहे अवैध निर्माण, जिम्मेदार बेखबर।

❖ ग्राम प्रधान ने उपजिलाधिकारी सहित अन्य उच्चधिकारियों को दी लिखित सूचना, प्रशासन की चुप्पी संदिग्ध!

द अचीवर टाइम्स

फूलबेहड़-खीरी। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अवैध कब्जे पर किए गए निर्माण को बुलडोजर चलाकर गिरवा रहे हैं तो वहीं दूसरी तरफ भूमाफिया सरकारी जमीन पर अवैध कब्जा करते हुए अवैध निर्माण करने से बाज नहीं आ रहे हैं इसी तरह एक मामला फूलबेहड़ क्षेत्र के श्रीनगर का सामने आया है। जहां पर भूमाफियाओं ने सरकारी जमीन की भूमि पर अवैध कब्जा कर उस पर पक्का निर्माण कार्य करा रहा हैं महिला प्रधान मैसूरजहां पत्नी स्व0 साजिद अली निवासी श्रीनगर ने कहा कि शिकायत के बाद भी निर्माण कार्य नही रूक रहा है जिसको लेकर ग्राम प्रधान ने क्षेत्रीय लेखपाल व छुटभैय्ए नेताओ पर मिली-भगत व सरंक्षण में रहकर अवैध कब्जा करवाने का आरोप लगाया है। आपको बता दें कि पूरा मामला जनपद खीरी के थाना फूलबेहड़ क्षेत्र के अन्तर्गत श्रीनगर का है जहां पर भूमाफिया मनोज यादव व विनोद यादव पुत्रगण राजाराम यादव निवासी श्रीनगर थाना फूलबेहड जनपद खीरी ने श्रीनगर की सरकारी जमीन जिसका गाटा संख्या 802 पर जबरदस्ती अवैध निर्माण करवाया जा रहा हैं जिसको लेकर ग्राम प्रधान ने 112 नम्बर कॉल कर इवेंट आई डी- क्का 9012405595 भी बुलाया था लेकिन उक्त दबंगो ने निर्माण कार्य नही रोका बल्कि गाली-गलौच व फौजदारी पर आमदा हो गए। वहीं सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार अवैध कब्जा कर रहे लोग शातिर किस्म के व्यक्ति है और अवैध कब्जा धारक लेखपाल की प्राइवेट मुंशी भी है शायद इसीलिए लेखपाल साहब मूकदर्शक बने हुए हैं फिलहाल क्षेत्रीय लेखपाल पर भी अवैध निर्माण कराने व मिलीभगत का आरोप लगाया है। ग्राम प्रधान ने आहत होकर उपजिलाधिकारी लखीमपुर को लिखित प्रार्थना पत्र देकर अवैध निर्माण को रुकवाने व उक्त दबंग भूमाफियाओं पर कार्यवाही करने की गुहार लगाई है दिलचस्प बात यह है कि अब देखना है कि प्रशासन क्षेत्रीय लेखपाल श्रीनगर पर किसी प्रकार की कार्यवाही करता है या नही? स्थानीय लेखपाल राम किशोर से इस मामले को लेकर जानकारी चाही गई तो उन्होंने बताया कि मामला संज्ञान में है शायद शिकायतकर्ता को जानकारी नही है वह पक्का निर्माण आबादी मे हो रहा है। वही ग्राम प्रधान श्रीनगर मैसूर जहां से इस बाबत जानकारी ली गयी तो उन्होंने बताया कि इस सरकारी जमीन गाटा संख्या 802 पर मुझसे ही मनोज यादव व विनोद यादव पुत्रगण राजाराम यादव निवासी श्रीनगर थाना फूलबेहड जनपद खीरी ने हवा भरने की दुकान रखने के लिए पूछा था अब यह धीरे-धीरे टैक्टर ट्राली सहित अन्य सामान खड़ा करते हुए आज पक्का निर्माण कार्य शुरू कर दिया शिकायत करने पर मुझे भी धमकी दी जा रही है अवैध कब्जाधारी सरकारी जमीन गाटा संख्या 820 पर आलीशान मकान बनवाकर रह भी रहा है इसके बावजूद अब वो गाटा संख्या 802 पर भी अवैध निर्माण करा सरकारी जमीन पर दुकानें बनवाना शुरू कर दिया हैं उक्त अवैध निर्णय का विरोध किया तो मुझे भी धमकाया जा रहा है! फिलहाल मैंने सम्बंधित जिम्मेदारो को शिकायत पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई है!

(ग्राम प्रधान श्रीनगर, मैसूर जहां)

21 से 26 जनवरी तक सभी चौराहों व सार्वजनिक स्थानों को सजाया जाएः- जिलाधिकारी

द अचीवर टाइम्स निशांत शुक्ला

हरदोई। कलेक्ट्रेट सभागार में जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में आगामी गणतंत्र दिवस मनाए जाने के संबंध में बैठक हुई। जिलाधिकारी ने कहा कि 21 जनवरी से 26 जनवरी तक नगर के सभी चौराहों व प्रमुख सार्वजनिक स्थानों को सजाया जाए। व्यापक स्तर पर साफ-सफाई करायी जाए। 26 जनवरी को प्रभातफेरी निकाली जाए। सेनानियों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण किया जाए। विभिन्न विभागों की झांकी निकाली जाए। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक केशव चन्द्र गोस्वामी, मुख्य विकास अधिकारी सौम्या गुरुरानी, अपर जिलाधिकारी प्रियंका सिंह, नगर मजिस्ट्रेट प्रशान्त तिवारी, सम्बंधित अधिकारी व नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

थाना तिकुनिया पुलिस द्वारा, 01 नफर वारंटी अभियुक्त सुखवीर सिंह उर्फ कक्का पुत्र हरदीप सिंह को गिरफ्तार किया गया

संवाददाता

लखीमपुर-खीरी। पुलिस अधीक्षक महोदय खीरी, श्री गणेश प्रसाद साहा के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक महोदय खीरी के निकट पर्यवेक्षण में संपूर्ण जनपद में अपराध की रोकथाम व वांछित/वारंटी अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत आज दिनांक 19.01.2024 को थाना तिकुनिया पुलिस द्वारा एक नफर वारंटी अभियुक्त सुखवीर सिंह उर्फ कक्का पुत्र हरदीप सिंह निवासी खैरटिया थाना तिकुनियाँ जनपद खीरी सम्बन्धित वारण्ट अ0सं0 161/95 धारा- 379 भादवि व 26 स्र राज्य प्रति सुखवीर सिंह उर्फ कक्का धारा 379 भादवि थाना तिकोनिया सम्बन्धित न्यायालय श्रीमान न्यायिक मजिस्ट्रेट वाह्य न्यायालय निघासन लखीमपुर खीरी को ग्राम खैरटिया उसके घर पर दबिश देकर गिरफ्तार किया गया । अभियुक्त को माननीय न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जायेगा ।

गिरफ्तार वारंटी अभियुक्त का विवरण-

सुखवीर सिंह उर्फ कक्का पुत्र हरदीप सिंह निवासी खैरटिया थाना तिकुनियाँ जनपद खीरी

गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम-

1.उ0नि0 आलोक कुमार राय
2.हे0का0 सुभाष निषाद

2 बाल श्रमिकों को रेस्क्यू कर दुकानदार के विरूद्ध की कार्यवाही

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा के निर्देशन में थाना एएचटीयू, श्रम प्रवर्तन अधिकारी व वन स्टॉप सेंटर की संयुक्त टीम द्वारा बाल संरक्षण हेतु बालश्रम रोकथाम अभियान चलाया गया, जिसमें दुकानों, होटलों, कारखानों व वर्कशाप आदि की चैकिंग की गई। चैकिंग के दौरान थाना हापुड़ नगर क्षेत्र के पुराना बाजार में दुकानों पर काम कर रहे 02 बाल श्रमिकों को रेस्क्यू किया गया है एवं दुकान मालिक के विरूद्ध आवश्यक वैधानिक कार्यवाही की जा रही है।

गौरीफंटा पुलिस और एसएसबी ने भारत नेपाल बार्डर की पैदल गश्त परखी सुरक्षा व्यवस्था

दअचीवर टाइम्स एस के सिंह

लखीमपुर खीरी। अयोध्या में रामलाल की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर खीरी पुलिस अलर्ट मोड पर है। भारत नेपाल बॉर्डर पर लगातार पेट्रोलियम कर कवच पोस्टों का निरीक्षण करने के साथ-साथ बॉर्डर के गांव में लोगों को जागरूक किया और सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। अयोध्या में भगवान श्रीराम जन्म भूमि में बन रहे मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के दृष्टिगत आज दिनांक 19.01.2024 को श्रीमन पुलिस अधीक्षक खीरी गणेश प्रसाद साहा के निर्देशन में, श्री कार्तिकेय सिंह उप जिलाधिकारी पलिया, श्री अजेंद्र यादव क्षेत्राधिकारी पलिया द्वारा एसएसबी के डिप्टी कमांडेंट श्री बिजेंद्र कुमार गौरीफंटा के सहायक कमांडेंट श्री सतीश कुमार, प्रभारी निरीक्षक गौरीफंटा श्री अवधेश कुमार यादव, प्रभारी स्वाट/सर्विलांस श्री आलोक कुमार सिंह, शिव कुमार यादव व वनविभाग/ कस्टम के अधिकारियों सहित भारी पुलिस बल के साथ गौरीफंटा बॉर्डर चेकपोस्ट पर गहनता से चेकिंग की गई। तथा संयुक्त रूप से भारत नेपाल बॉर्डर एवं बनगवा बाजार में पैदल गस्त कर सघन चेकिंग की गई। आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए बॉर्डर पर आने जाने वालों की गहन चेकिंग करने के निर्देश दिए गए ताकि कोई भी संदिग्ध व्यक्ति बॉर्डर पार कर भारत की सीमा में प्रवेश ना कर सके।

जनता दर्शन में डीएम ने सुनी फरियाद, दी योजनाओं की सौगातें, लोगों के खिल उठे चेहरे

दअचीवर टाइम्स ब्यूरो

फरियादी रवि की दोनों बेटियों को मिलेगा स्पॉन्सरशिप योजना का लाभ।

लखीमपुर खीरी। शुक्रवार की सुबह गोला तहसील, ब्लॉक बिजुआ के ग्राम सहसपुर निवासी रवि वर्मा जिलाधिकारी जनता दर्शन में डीएम महेंद्र बहादुर सिंह के समक्ष प्रस्तुत होकर मदद की गुहार लगाई। इस पर डीएम ने कहा कि बिलकुल भी चिंता मत करिए। आपकी हर परेशानी दूर की जाएगी। अपनेपन के एहसास में सराबोर यह भरोसा जब खुद डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने दिया है तो उस भरोसे के अवश्यसंभावी परिणति की उम्मीद में गुहार करने वाले के चेहरे पर चमक और संतोष का भाव उभरना स्वाभाविक ही है। आत्मीय भरोसे और उस पर संतोष की तस्वीर शुक्रवार सुबह कलेक्ट्रेट में जिलाधिकारी के जनता दर्शन के दौरान देखने को मिली। डीएम के समक्ष उपस्थित होकर फरियादी रवि ने कहा कि साहब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक पर आप द्वारा पोस्ट की ÷स्पॉन्सरशिप योजना÷ के लाभ के बारे में आपसे हुई वार्ता के क्रम में आज मिलने आया हूं। हुजूर, हमारी पत्नी का माह जनवरी, वर्ष 2023 में निधन हो गया था। हमारे दो पुत्री वर्तिका (07 वर्ष) और अनिका (04 वर्ष) है। डीएम ने फॉरेन जिला प्रोबेशन अधिकारी संजय कुमार निगम को बुलाकर केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी स्पॉन्सरशिप योजना के लाभ दिए जाने के लिए निर्देशित किया। फरियादी रवि ने कहा कि उसकी पत्नी का मृत्यु प्रमाण पत्र ग्राम सचिव के यहां लंबित है। इस पर डीएम ने बीडीओ बिजुआ को तत्काल मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करने हेतु निर्देशित किया। महज चंद घंटे के अंदर फरियादी को उसका प्रमाण पत्र मिल गया। योजनाओ का लाभ के लिए आय प्रमाण पत्र जरूरी हैं, इसलिए डीएम ने एसडीएम गोला रत्नाकर मिश्रा से तत्काल फोन पर निर्देशित किया कि फरियादी का आय प्रमाण पत्र यथाशीघ्र जारी कर अवगत कराए। डीएम ने फरियादी की पुत्री कक्षा एक में अध्यनरत होने पर डीपीओ को मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना का लाभ दिए जाने हेतु निर्देशित किया। फरियादी ने बातचीत के दौरान बताया कि उसका श्रमिक (लेबर) कार्ड 04 वर्ष पूर्व बना था, जिसका नवीनीकरण नहीं करा पाया। डीएम ने फौरन श्रम प्रवर्तन अधिकारी संतोष त्रिपाठी को बुलाकर नवीनीकरण करवाया।

फॉलोअप - दिव्यांग राजेश को महज एक दिन में मिल गया आय प्रमाण पत्र

गुरुवार को जनता दर्शन में डीएम के समक्ष सदर तहसील, ब्लॉक फूलबेहड के ग्राम तेंदुआ निवासी दो हाथों और एक पैर से दिव्यांग राजेश कुमार को योजनाओं का लाभ देने के लिए जरूरी प्रपत्र आय प्रमाण पत्र जारी करने के लिए डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने तहसीलदार सुशील प्रताप सिंह को निर्देशित किया। उसी दिन तहसीलदार ने न केवल उसका आवेदन कराया बल्कि शाम तक दिव्यांग को आय प्रमाण पत्र उपलब्ध कराया। कृत कार्यवाही से डीएम को भी अवगत कराया।

प्रभारी मंत्री की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ विकसित भारत संकल्प यात्रा शिविर

100 जरूरतमन्द लोगों को वितरित किये गये कम्बल

संवाददाता

बहराइच। योजनाओं के संतृप्तीकरण के लिये आउटरीच गतिविधियों के माध्यम से आमजन में जागरुकता बढ़ाये जाने के उद्देश्य से 15 नवम्बर 2023 से 26 जनवरी 2024 तक संचालित होने वाले विकसित भारत संकल्प यात्रा अन्तर्गत विकास खण्ड तेजवापुर अन्तर्गत राम गांव, धोबिया में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए प्रदेश के मा. मंत्री, मत्स्य/प्रभारी मंत्री जनपद बहराइच डॉ. संजय कुमार निषाद ने कहा कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की प्रेरणा से देश के कोने-कोने में आयोजित कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य यही है कि सरकार की विभिन्न योजनाओं की पात्रता रखने वाला कोई भी असंतृप्त व्यक्ति छूटने न पाये। प्रभारी मंत्री ने कहा कि प्रदेश के मा. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में प्रदेश काफी तेज़ी के साथ विकास कर रहा है। डॉ. निषाद ने कहा कि कभी बीमारू राज्य की पहचान रखने वाला प्रदेश आज देश के नम्बर वन राज्य बनने की दिशा में मज़बूती के साथ आगे बढ़ रहा है। प्रभारी मंत्री ने कहा कि प्रदेश की कानून व्यवस्था चाक चौबन्द होने से निवेशकों की पहली पसन्द उत्तर प्रदेश बन गया है। पर्यटन विकास के क्षेत्र में विकास होने, रिकार्ड एयरपोर्टों तथा एक्सप्रेस-वे की स्थापना बड़ी संख्या में पर्यटक भी प्रदेश का रूख कर रहे हैं। प्रभारी मंत्री ने कहा कि शहरी क्षेत्रों के साथ प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों का विकास होने से आज हमारे युवा पलायन के बजाए गांव में ही रोज़गार हासिल कर प्रदेश के विकास में योगदान कर रहे हैं।

प्रभारी मंत्री ने कहा कि जन स्वास्थ्य भी केन्द्र व राज्य सरकार की शीर्ष प्राथमिकता है। लोगों को बेहतर इलाज मिल सके इसके लिए प्रत्येक जनपद में मेडिकल कालेज की स्थापना के साथ-साथ चिकित्सालयों का उच्चीकरण किया जा रहा है। गरीब नागरिक भी इलाज की सुविधा से वंचित न होने पाये इसके लिए देश में आयुष्मान भारत योजना संचालित कर सभी पात्र लोगों के गोल्डेन कार्ड बनाये जा रहे हैं ताकि ज़रूरत मन्द परिवार भी पांच लाख रूपये तक मुफ्त इलाज करा सकें। प्रभारी मंत्री ने कार्यक्रम में मौजूद लोगों का आहवान किया कि मत्स्य विभाग द्वारा संचालित योजनाओं का भरपूर उठाकर अपने जीवन स्तर में सुधार लाएं। कार्यक्रम को सांसद बहराइच अक्षयवर लाल गोंड, मुख्य विकास अधिकारी रम्या आर., क्षेत्र पंचायत प्रमुख तेजवापुर के प्रतिनिधि दिवाकर पाण्डेय, बीडीओ अजय सिंह, निषाद पार्टी के जिला अध्यक्ष मनोज कुमार निषाद सहित व अन्य वक्ताओं ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए विकसित भारत संकल्प यात्रा के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम स्थल पर मनरेगा, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण, स्वच्छ भारत मिशन, एनआरएलएम, शिक्षा, समाज कल्याण, कृषि, ग्राम्य विकास सहित अन्य विभागों द्वारा स्टाल लगाकर आये हुए लोगों को विभागीय योजनाओं की जानकारी प्रदान की गई। बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा लगाये गये शिविर में एमडीएम मेन्यू तथा उपयोग में आने वाले खाद्य पदार्थों, पुस्तकों, हस्तनिर्मित टी.एल.एम. मॉडल, बच्चों द्वारा तैयार किये गये मतदाता जागरूकता स्लोगन का प्रदर्शन किया गया।

प्रभारी मंत्री डॉ. निषाद ने सांसद बहराइच अक्षयवर लाल गोंड के साथ विभागीय स्टालों का निरीक्षण कर विकसित भारत संकल्प यात्रा शिविर के दौरान मनरेगा, बन नेशन वन राशनकार्ड, प्रधानमंत्री आवास योजना ग्रामीण, उज्ज्वला योजना, प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री मत्स्य सम्पदा योजना, मछुआ दुर्घटना योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, जनधन योजना, उजाला योजना, आयुष्मान भारत योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, प्रधानमंत्री पोषण अभियान सहित अन्य योजनाओं से लाभान्वित किया गर्भवती महिलाओं की गोद भराई की तथा बच्चों को अन्नप्रासन कराया। शिविर के दौरान लगभग 100 ज़रूरतमन्द लोगों को कम्बल तथा स्वामित्व अभिलेख घरौनी का भी वितरण किया गया। शिविर के अन्त में मौजूद लोगों को विकसित भारत संकल्प की शपथ भी दिलायी गयी।

इस अवसर पर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. एस.के. सिंह, एसडीएम महसी राकेश कुमार मौर्या, परियोजना निदेशक डीआरडीए राज कुमार, डीपीओ राज कपूर, तहसीलदार पीयूष श्रीवास्तव, जिला प्रोबेशन अधिकारी विनय कुमार सिंह, सहायक निदेशक मत्स्य डॉ. जितेन्द्र, एलडीएम जितेन्द्र नाथ श्रीवास्तव, जिला कृषि अधिकारी सतीश कुमार, जिला गन्ना अधिकारी आनन्द शुक्ला, जिला पूर्ति अधिकारी नरेन्द्र तिवारी सहित अन्य अधिकारी, क्षेत्रीय गणमान्य व संभ्रान्तजन व आमजन मौजूद रहे।

एक नज़र

गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के प्रकाशोत्सव पर निकली नगर कीर्तन यात्रा

निघासन खीरी। मानवता के रक्षक श्री गुरु गोविंद सिंह साहिब जी के प्रकाशोत्सव पर निघासन नगर पंचायत में नगर कीर्तन निकाला गया।नगर कीर्तन की शुरुआत गुरुद्वारा श्री गुरु सिंह सभा से प्रारंभ हुई शोभायात्रा का स्वागत जगह जगह किया गया। शोभायात्रा में श्री गुरुद्वारा साहिब को आकर्षक ढंग से सजाया गया था।शोभायात्रा में चल रहे पंच प्यारे लोगों की श्रद्धा का केंद्र बने थे।सैकड़ों महिलाए व बालिकाए शोभायात्रा के आगे झाड़ू लगाकर सेवा कर रहे थे। उसके पीछे पंच प्यारे थे और गुरु ग्रंथ साहिब जी की पालकी।जिसमें गुरु की महिमा का गुणगान करते हुए भारी मात्रा में श्रद्धालु चल रहे थे।शोभायात्रा में गतका पार्टी ने हैरतअंगेज़ करतब दिखाते हुए लोगों को आकर्षित किया।

स्वामी विवेकानन्द एवं सुभाष चन्द्र बोस जयन्ति पर एक युद्ध नशे के विरुद्ध अभियान चलाया

लखनऊ। स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती 12/1/2024 से 23/1/2024 सुभाष चंद्र बोस जी की जयंती के शुभ अवसर पर बाल अधिकार संरक्षण आयोग की ओर से प्रदेश के समस्त विद्यालय में एक युद्ध नशे के विरुद्ध अभियान चलाया जा रहा है अभियान को आज दिनाक 19/1/2024 लखनऊ में राजकीय जुबली इंटर कॉलेज लखनऊ माननीय अनीता अग्रवाल जी सदस्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग द्वारा बच्चों को नशे के विरुद्ध शपथ ग्रहण कराया गया । माननीय अनीता अग्रवाल महोदया द्वारा प्रत्येक विद्यालय में एक युद्ध नशे के विरुद्ध अभियान चला कर विद्यार्थियों एवं शिक्षको को जीवन रक्षक प्रतिज्ञा दिलाने के लिए निर्देशित किया है।

प्राण प्रतिष्ठा के लिए भारत वर्ष के 75 तीर्थस्थलों के जल,मिट्टी को अयोध्या ले जाते समय लखनऊ दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर पर हुआ भव्य स्वागत

लखनऊ। जगतगुरु स्वामी रामभद्राचार्य ने प्रभु रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिए भारत वर्ष के 75 तीर्थस्थलों के जल,मिट्टी और भक्तों के एक चुटकी अक्षत का संकलन कर अयोध्या धाम ले जाना के लिए बीकानेर से शुरू की गई भव्य रथ यात्रा का दक्षिण मुखी हनुमान मंदिर में महंत जी एवं भक्त गणों द्वारा भव्य स्वागत किया गया।

सुनील सिंह ने अपने निजी आवास डीह लालूपुर में समरसता खीचड़ी भोज का किया आयोजन

रायबरेली। भारतीय जनता पार्टी अमांवा मण्डल के सभी कार्यकर्ताओं की बैठक 22 जनवरी को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम को लेकर संपन्न हुई जिसमे मण्डल अध्यक्ष वीरेन्द्र सिंह ने आगामी कार्यक्रमो के बारे में अपने बूथ अध्यक्ष व मण्डल की टीम से चर्चा की और स्वच्छता कार्यक्रम और 22 जनवरी को मंदिरों व सार्वजनिक स्थानों पर रामचरित मानस व सुन्दर काण्ड करने का सभी कार्यकर्ता से निवेदन किया गया। नए वर्ष व मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर राज्य मंत्री आदरणीय दिनेश प्रताप सिंह जी के द्वारा पूरी मण्डल टीम को बूथ अध्यक्ष सहित सप्रेम भेंट भेजा गया जिसके लिए सभी पार्टी के कार्यकर्ताओं ने आदरणीय राज्य मंत्री दिनेश प्रताप जी का आभार प्रकट कर शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम शक्ति केन्द्र प्रभारी सुनील सिंह जी के यहां समरसता भोज संपन्न हुआ और इस मौके पर मण्डल अध्यक्ष वीरेन्द्र सिंह, सुशील मिश्रा, पूर्व मण्डल अध्यक्ष सुशील सिंह , भोलई सिंह ,मंजेश सिंह, दिनेश सिंह, इंद्रदेव जी , योगेन्द्र सिंह,अंकित सैनी, संजय जी आदि सभी बूथ स्तर तक के कार्यकर्ता मौजूद रहे।

प्राण प्रतिष्ठा के दिन घर-घर दीपोत्सव मनाने के लिये किया जागरुक

चंदौसी/संभल। भारतीय मानव कल्याण समिति ने अयोध्या धाम में 22 जनवरी को होने जा रही श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष में घर - घर भव्य दीपोत्सव मनाने के लिए रामभक्तों को जागरूक किया और मंदिरों में भजन-कीर्तन के साथ ऐतिहासिक दीपावली मनाने का आग्रह किया।भारतीय मानव कल्याण समिति के प्रबन्धक डॉ टीएस पाल ने बताया घर - घर जनसम्पर्क अभियान के तीसरे दिन खुर्जा गेट स्थित डॉ अम्बेडकर पार्क से निकलकर आज तीसरी दिन खुर्जा गेट एवम लोधियान मोहल्ला के एक सौ दस परिवारों में ग्यारह दीपक,बाती एवम राममन्दिर का चित्र उपलब्ध कराया।

जनता दर्शन डीएम ने सुनी फरियाद, दी योजनाओं की सौगातें, खिला चेहरा

❖ फरियादी रवि की दोनों बेटियों को मिलेगा स्पॉन्सरशिप योजना का लाभ।

संवाददाता

लखीमपुर खीरी। शुक्रवार की सुबह गोला तहसील, ब्लॉक बिजुआ के ग्राम सहसपुर निवासी रवि वर्मा जिलाधिकारी जनता दर्शन में डीएम महेंद्र बहादुर सिंह के समक्ष प्रस्तुत होकर मदद की गुहार लगाई। इस पर डीएम ने कहा कि बिलकुल भी चिंता मत करिए। आपकी हर परेशानी दूर की जाएगी। अपनेपन के एहसास में सराबोर यह भरोसा जब खुद डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने दिया है तो उस भरोसे के अवश्यसंभावी परिणति की उम्मीद में गुहार करने वाले के चेहरे पर चमक और संतोष का भाव उभरना स्वाभाविक ही है। आत्मीय भरोसे और उस पर संतोष की तस्वीर शुक्रवार सुबह कलेक्ट्रेट में जिलाधिकारी के जनता दर्शन के दौरान देखने को मिली। डीएम के समक्ष उपस्थित होकर फरियादी रवि ने कहा कि साहब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म फेसबुक पर आप द्वारा पोस्ट की ÷स्पॉन्सरशिप योजना÷ के लाभ के बारे में आपसे हुई वार्ता के क्रम में आज मिलने आया हूं। हुजूर, हमारी पत्नी का माह जनवरी, वर्ष 2023 में निधन हो गया था। हमारे दो पुत्री वर्तिका (07 वर्ष) और अनिका (04 वर्ष) है। डीएम ने फॉरेन जिला प्रोबेशन अधिकारी संजय कुमार निगम को बुलाकर केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी स्पॉन्सरशिप योजना के लाभ दिए जाने के लिए निर्देशित किया। फरियादी रवि ने कहा कि उसकी पत्नी का मृत्यु प्रमाण पत्र ग्राम सचिव के यहां लंबित है। इस पर डीएम ने बीडीओ बिजुआ को तत्काल मृत्यु प्रमाण पत्र जारी करने हेतु निर्देशित किया। महज चंद घंटे

के अंदर फरियादी को उसका प्रमाण पत्र मिल गया। योजनाओ का लाभ के लिए आय प्रमाण पत्र जरूरी हैं, इसलिए डीएम ने एसडीएम गोला रत्नाकर मिश्रा से तत्काल फोन पर निर्देशित किया कि फरियादी का आय प्रमाण पत्र यथाशीघ्र जारी कर अवगत कराए। डीएम ने फरियादी की पुत्री कक्षा एक में अध्यनरत होने पर डीपीओ को मुख्यमंत्री कन्या सुमंगला योजना का लाभ दिए जाने हेतु निर्देशित किया। फरियादी ने बातचीत के दौरान बताया कि उसका श्रमिक (लेबर) कार्ड 04 वर्ष पूर्व बना था, जिसका नवीनीकरण नहीं करा पाया। डीएम ने फौरन श्रम प्रवर्तन अधिकारी संतोष त्रिपाठी को बुलाकर नवीनीकरण करवाया।

फॉलोअप: दिव्यांग राजेश को महज एक दिन में मिल गया आय प्रमाण पत्र

गुरुवार को जनता दर्शन में डीएम के समक्ष सदर तहसील, ब्लॉक फूलबेहड के ग्राम तेंदुआ निवासी दो हाथों और एक पैर से दिव्यांग राजेश कुमार को योजनाओं का लाभ देने के लिए जरूरी प्रपत्र आय प्रमाण पत्र जारी करने के लिए डीएम महेंद्र बहादुर सिंह ने तहसीलदार सुशील प्रताप सिंह को निर्देशित किया। उसी दिन तहसीलदार ने न केवल उसका आवेदन कराया बल्कि शाम तक दिव्यांग को आय प्रमाण पत्र उपलब्ध कराया। कृत कार्यवाही से डीएम को भी अवगत कराया।

गढ़ी पोखरनी में भारत संकल्प यात्रा का आयोजन किया गया

❖ प्रधान प्रतिनिधि द्वारा कंबल वितरण एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

संवाददाता

रायबरेली। महराजगंज विकासखण्ड क्षेत्र की ग्राम सभा गढ़ी मजरे पोखरनी में भारत संकल्प यात्रा का आयोजन किया गया। प्रधान प्रतिनिधि अखिलेश कुमार उर्फ बबलू शुक्ला ने आए हुए अतिथियों को अंग वस्त्र एवं पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया। प्रधान प्रतिनिधि अखिलेश कुमार उर्फ बबलू शुक्ला द्वारा निर्धन, दिव्यांग,असहाय ग्रामीणों को ठंड से बचाव के लिए कंबल वितरण किया। मुख्य अतिथि पूर्व जिला पंचायत अध्यक्ष अवधेश प्रताप सिंह ने केंद्र व राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न प्रकार की योजना के बारे में विस्तृत जानकारी ग्रामीणों को बताई, जैसे आयुष्मान कार्ड, उज्ज्वला योजना, पीएम किसान, प्रधानमंत्री आवास ,मुख्यमंत्री आवास,व अन्य योजनाओं के अंतर्गत आने वाले लाभार्थियों को प्रमाण पत्र भी वितरित किए। और कहा कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक जन कल्याणकारी योजनाएं ग्रामीण स्थल पर पहुंच रही है। इस मौके पर, मंडल अध्यक्ष सूर्य प्रकाश वर्मा, सरोज गौतम, दिलीप तिवारी, प्रधान हिलहा अमन चौरसिया, अनु त्रिपाठी, राजेश मौर्य, सहित सैकड़ो ग्रामीण उपस्थित रहे।

आईजीआरएस शिकायतों का निस्तारण गुणवत्ता परक एवं निष्पक्ष रूप से करें:-जिलाधिकारी

❖ शिकायतों का समय से एवं गुणवत्ता परक निस्तारण न करने वाले बीडीओ के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जायेगीः मंगला प्रसाद सिंह

द अचीवर टाइम्स निशांत शुक्ला

हरदोई। कलेक्टेज्ट कार्यालय में खण्ड विकास अधिकारियों की आईजीआरएस पोर्टल पर लम्बित शिकायतों के सम्बन्ध में सख्त नाराजगी व्यक्त करते हुए जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने सभी बीडीओ को निर्देश दिये कि मा0 मुख्यमंत्री कार्यालय, आईजीआरएस पोर्टल एवं अन्य माध्यम से प्राप्त समस्त शिकायतों का निस्तारण दोनो पक्षों को बुलाकर गुणवत्ता परक, मानक के अनुसार एवं निष्पक्ष रूप से करें और शिकायतों का समय से एवं गुणवत्ता परक निस्तारण न करने वाले बीडीओ के खिलाफ सख्त कार्यवाही की जायेगी। गांवों में निराश्रित पशुओं द्वारा छुट्टा घूमने एवं फसल बरबाद करने की शिकायतों पर जिलाधिकारी ने कहा कि जिन गांवों में निराश्रित पशु घूम रहे है, बीडीओ उन पशुओं को जिला पंचायत राज एवं पशु विभाग के अधिकारियों के साथ समन्वय बनाकर पकड़वायें और अगर उनके ब्लाक की ग्राम पंचायत की गौशाला में पशुओं को रखने की जगह नहीं है तो ऐसे पशुओं को दूसरे ब्लाक की गौशालाओं में संरक्षित करायें। जिलाधिकारी ने खण्ड विकास अधिकारियों को निर्देश दिय कि अपने क्षेत्र के निराश्रित पशुओं को एक सप्ताह मे गौशालाओं में संरक्षित कराने के साथ गौशालाओं का निर्माण तेजी से करायें तथा गांव की भूमि विवाद आदि से सम्बन्धित शिकायतों का निस्तारण गांव में जाकर प्रधान एवं गणमान्य व्यक्तियों के सामने करायें। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी सौम्या गुरूरानी एवं खण्ड विकास अधिकारी उपस्थित रहें।

प्रभु श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा व गणतंत्र दिवस के दृष्टिगत अपर पुलिस अधीक्षक नगर रामानंद कुशवाहा व राजीव कुमार सिसोदिया द्वारा धर्मगुरुओं/सम्भ्रान्त व्यक्तियों के साथ पीस कमेटी मीटिंग की गयी

संवाददाता

बहराइच। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक नगर व क्षेत्राधिकारी नगर द्वारा प्रभु श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा समारोह व गणतंत्र दिवस को सकुशल संम्पन्न कराने तथा जनपद में शांति एवं सुरक्षा व्यवस्था कायम रखने हेतु थाना कोतवाली नगर व थाना दरगाह शरीफ पर धर्मगुरुओं/संभ्रांत व्यक्तियों के साथ पीस कमेटी मीटिंग आयोजित की गयी मीटिंग के दौरान बहराइच शहर में होने वाले आयोजनों के संबंध में सभी ने पूर्व में हुए त्योहारों यथा होली, ईद, दिवाली, बारा वफ़ात, बक़रीद, मोहर्रम तथा दुर्गा पूजा इत्यादि की भाँति ही शांति एवं सौहार्द पूर्ण वातावरण में इस दिन को भी मनाने का संकल्प दोहराया। सभी संभ्रान्तजनों से शरारती तत्वों पर नज़र रखने हेतु, किसी भी प्रकार की अफ़वाहों पर ध्यान न देने के लिए तथा किसी भी अफ़वाह/घटना की स्तिथि में सबसे पहले पुलिस को सूचना देने हेतु बताया गया। आयोजनों में किसी भी प्रकार के अश्लील गाने न बजाने व ध्वनि सीमा के अनुरूप ही ध्वनि विस्तारक यंत्रों का उपयोग करने हेतु भी बताया गया। साथ ही सभी को ये भी बताया गया कि आसपास सभी जनों तक यह भी सूचना पहुँचाये कि 22 जनवरी के बाद ही अयोध्या दर्शन हेतु जायें उससे पहले उधर जाने पर प्रतिबंध है। बहराइच पुलिस जनपद में शांति, सौहार्द एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए कटिबद्ध है ।

श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर पुलिस और एसएसबी भारत नेपाल बार्डर पर मुस्तैद

संवाददाता

लखीमपुर खीरी। अयोध्या में भगवान श्रीराम जन्म भूमि में बन रहे मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के दृष्टिगत आज दिनांक 19.01.2024 को पुलिस अधीक्षक खीरी गणेश प्रसाद साहा के निर्देशन में कार्तिकेय सिंह उप जिलाधिकारी पलिया, अजेंद्र यादव क्षेत्राधिकारी पलिया द्वारा एसएसबी के डिप्टी कमांडेंट बिजेंद्र कुमार गौरीफंटा के सहायक कमांडेंट सतीश कुमार, प्रभारी निरीक्षक गौरीफंटा अवधेश कुमार यादव, प्रभारी स्वाट/सर्विलांस आलोक कुमार सिंह, शिव कुमार यादव व वनविभाग/ कस्टम के अधिकारियों सहित भारी पुलिस बल के साथ गौरीफंटा बॉर्डर चेकपोस्ट पर गहनता से चेकिंग की गई। तथा संयुक्त रूप से भारत नेपाल बॉर्डर एवं बनगवा बाजार में पैदल गस्त कर सघन चेकिंग की गई। आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए बॉर्डर पर आने जाने वालों की गहन चेकिंग करने के निर्देश दिए गए ताकि कोई भी संदिग्ध व्यक्ति बॉर्डर पार कर भारत की सीमा में प्रवेश ना कर सके। वहीं उप जिलाधिकारी निघासन/ क्षेत्राधिकार निघासन/ एसएसबी/ पुलिस फोर्स की संयुक्त टीम के साथ भारत नेपाल सीमा गुलरिया पत्थरसाह तथा सुबह घाट डाक्टर घाट आदि स्थानों पर पेट्रोलिंग की।

गौ पूजन के साथ किया गया पशु आरोग्य मेले का आयोजन

संवाददाता

लखीमपुर खीरी। ब्लॉक रमियाबेहड के अंतर्गत ग्राम भटपुरवा कला में पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य मेले का आयोजन किया गया। आज दिनांक 19जनवरी 2024 ग्राम पंचायत भटपुरवा कला ब्लाक रमियाबेहड में सरकार की मंशा के अनुरूप एवं मुख्य पशुचिकित्साधिकारी लखीमपुर डॉ0 सोमदेव सिंह चौहान के दिशा निर्देशन में पंडित दीनदयाल उपाध्याय पशु आरोग्य शिविर का आयोजन किया गया शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि श्रीमति रानी वर्मा ग्राम प्रधान एवम प्रधान प्रतिनिधि जीत राम वर्मा ने गौ पूजन कर तथा पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की फोटो पर माल्यार्पण कर शुभारंभ किया मेले में आए हुए उप मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ राकेश कुमार ने पशुओं के टीकाकरण व क्रमिनाशक दवा पान के बारे में जानकारी दी, डॉ प्रदीप ईशानगर ने किसान क्रेडिट कार्ड , टैगिंग का महत्व बीमा के बारे में जानकारी दी, डा. अवधेश सिगाही ने ठंड से बचाव हरा चारा के बारे मे जानकारी दी ,डॉ0अनिल दुबे, पशुधन प्रसार अधिकारी ने पशुपालकों को बीमा योजना एवम सेक्स सीमेन द्वारा कृत्रिम गर्वधान के बारे में विस्तृत जानकारी दी। मेले में आए हुए 35किसानों के 517 पशुओं का इलाज किया गया। मेले को सफल बनाने में पशु औषधिक राजेश बहुगुणा, पशुधन प्रसार अधिकारी वीरेंद्र वर्मा तथा संतोष कुमार, जय प्रकाश , शिव मोहन , अजय पैरावेट ने विशेष योगदान दिया मेले को सफल बनाने के लिए डॉक्टर राकेश गौड़ ने मेले में आए हुए सभी विभागीय अधिकारी कर्मचारी व सभी किसान भाइयों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

राम प्राण प्रतिष्ठा के बाद 25 को पीएम मोदी बुलंदशहर से मिशन 2024 का फूकेंगे बिगुल, 2014 वाली रणनीति दोहराएंगे

संवाददाता

बुलंदशहर। पीएम नरेंद्र मोदी लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारी को लेकर पहली चुनावी सभा की बुलंदशहर में 25 जनवरी को संबोधित करेंगे। 2014 में भी यही से शुरूआत की गई थी। वहीं पीएम मोदी की रैली को लेकर तैयारियों में प्रशासन और भाजपा के दिग्गज जुट गए हैं। 23 जनवरी को जनसभा की तैयारी की समीक्षा करने सीएम योगी आएंगे। कौशिक, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार का आगाज 25 जनवरी को बुलंदशहर से करेंगे। अयोध्या में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद मिशन-2024 के लिए पीएम मोदी की पहली चुनावी सभा की तैयारियों में प्रशासन और भाजपा के दिग्गज जुट गए हैं। सभा में पश्चिमी यूपी से बड़ी संख्या में लोगों के पहुंचने की उम्मीद है। अधिकारियों ने सभा स्थल का भी चयन कर लिया है। कार्यक्रम की तैयारियों का जायजा लेने के लिए सीएम योगी आदित्यनाथ कार्यक्रम से दो दिन पहले जिले में आएंगे। बुलंदशहर की सभी सातों विधानसभा सीटों और लोकसभा सीट सहित जिला पंचायत पर भाजपा का कब्जा है। अयोध्या में 22 जनवरी होने वाले प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद पीएम मोदी मिशन 2024 का बिगुल बुलंदशहर से बजाएंगे। भाजपा जिला अध्यक्ष विकास चौहान ने बताया कि प्रधानमंत्री का 25 जनवरी को बुलंदशहर में पश्चिमी यूपी की विशाल जनसभा करने का कार्यक्रम है। इससे पूर्व 23 जनवरी को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी जनसभा की तैयारी की समीक्षा करने बुलंदशहर आएंगे। सूत्रों की माने तो पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भाजपा के 14 में से 8 सांसद हैं। 6 लोकसभा सीटों पर भाजपा को हार का मुंह देखना पड़ा था। सहारनपुर, बिजनौर, नगीना, संभल अमरोहा और मुरादाबाद में गैर भाजपाई प्रत्याशियों ने भाजपा प्रत्याशियों को शिकस्त दी थी। माना जा रहा है कि इन सभी सीटों पर भाजपा 2024 में भगवा लहराने की तैयारी में है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुलंदशहर से चुनावी आगाज कर पूर्व में हारी सीटों के मतदाताओं और कार्यकर्ताओं को साधेंगे तथा जीत का मंत्र देंगे। दरअसल 2014 में हुए लोकसभा चुनाव का आगाज भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बुलंदशहर से किया था और भाजपा पूर्ण बहुमत से सत्ता में आई थी। इसीलिए भाजपा 2024 के लोक सभा चुनावों का भी आगाज बुलंदशहर से कर 2024 फतह करने की रणनीति बना चुकी है। जिलाध्यक्ष ने बताया कि सभा में पश्चिमी जिलों के कार्यकर्ता हिस्सा लेंगे। यहां लाखों कार्यकर्ताओं के आने की उम्मीद है। मिशन 2024 को फतह करने के लिए भाजपा ने देश को क्लस्टर में विभाजित कर उनके प्रभारी बनाए हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री आदित्यनाथ योगी के कार्यक्रम की तैयारी को लेकर जिला प्रशासन जुट गया है। रैली के लिए स्थान का चयन किया जा चुका है। डीएम और एसएसपी व सीडीओ समेत भाजपा के कई नेता मौजूद थे। जिला अध्यक्ष विकास चौहान ने बताया कि बुलंदशहर ककोड़ मार्ग पर चांदमारी मैदान यानि पुलिस शूटिंग रेंज में पीएम नरेंद्र मोदी की विशाल जन सभा होगी।

बदरीनाथ के साधु-संतों को मिला प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण स्वयं सेवक ने गुफाओं में जाकर सौंपा

एजेंसी

गोपेश्वर (चमोली)। अयोध्या में 22 जनवरी को होने वाले रामलला की प्राण प्रतिष्ठा महाउत्सव की तैयारियां जोरो पर हैं। हर कोई इस पल का साक्षी बनने के लिए उत्साहित है। वहीं बदरीनाथ धाम में मौजूदा समय में 16 साधु-संत साधनारत हैं। उन्हें न्योता देने के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक बदरीनाथ धाम पहुंचे। बर्फबारी के बीच बदरीनाथ धाम की गुफाओं में साधनारत साधु-संतों तक भी अयोध्या में श्रीराम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में शामिल होने का निमंत्रण पहुंचाया गया है। साधु-संतों को अयोध्या से आए पूजित अक्षत प्रसाद, राममंदिर का चित्र भी भेंट किया गया। धाम में मौजूदा समय में 16 साधु-संत साधनारत हैं। उन्हें न्योता देने के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक मंगलवार को देर शाम बदरीनाथ धाम पहुंचे। उन्होंने साधु-संतों की कुटिया और गुफाओं में जाकर उन्हें अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का निमंत्रण सौंपा। जनपद के अभियान प्रमुख अतुल शाह ने बताया कि जब उनकी टोली बदरीनाथ धाम पहुंची और अयोध्या से पूजित अक्षत को बदरीनाथ धाम के सिंहद्वार पर अर्पित किया गया, उसके बाद धाम में बर्फबारी शुरू हो गई। जिससे चारों ओर बर्फ की सफेद चादर बिछ गई। पूजित अक्षत को धाम की सुरक्षा में तैनात आईटीबीपी और सेना के जवानों व अधिकारियों को वितरित किए गए। इस मौके पर आरएसएस के जिला प्रचारक राहुल, जिला कार्यवाह विक्रम सिंह नेगी, अभियान प्रमुख अतुल शाह, सुशील यादव, ताजवर सती आदि मौजूद रहे।

एक नज़र

बिहार में नए जमाने के चोर! 15 लाख की गाड़ी से गांव-गांव घूम रहे बदमाश, सोना-चांदी नहीं चुरा रहे

छपरा। सोना-चांदी या अन्य सामानों की चोरी की घटना सुनी होगी, लेकिन बिहार के छपरा में बदमाश 15 लाख की गाड़ी से बकरी चुरा रहे हैं। ये चोर रात के अंधेरे में स्कॉर्पियो लेकर निकलते हैं और मौका देखते ही बकरियां चोरी कर लेते हैं। छपरा में एक स्कॉर्पियों से दो दर्जन बकरियां बरामद हुई हैं। बिहार के छपरा में ऐसे चोर गिरोह का खुलासा हुआ है, जो वीआईपी बनकर चोरी की घटना को अंजाम दे रहे थे। बताया जा रहा है कि चोर स्कॉर्पियो से घूम-घूमकर वारदात को अंजाम दे रहे हैं। हैरान करने वाली बात ये है कि ये सभी ठंड के मौसम में बकरी की चोरी कर रहे हैं। इसका खुलासा मशरक में हुआ है। मशरक में बकरी चोरी कर भाग रहे स्कोर्पियो गाड़ी से 2 दर्जन से अधिक बकरियां मिली हैं। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। दरअसल, मशरक के हनुमानगंज गांव में अज्ञात चोरों के द्वारा छोड़े गए एक स्कॉर्पियो में पुलिस ने 2 दर्जन बकरियां बरामद किए हैं। बरामद बकरियों में 5 मृत मिली हैं। ग्रामीणों ने बताया कि गुरुवार की सुबह वे टहलने को छपरा मशरक एसएच-90 पर निकले थे। उसी दौरान हनुमानगंज गांव में कोल्ड स्टोरेज के पास एक स्कार्पियो लावारिस हालत में खड़ी थी जो दुर्घटनाग्रस्त थी। स्कॉर्पियों में जब देखा गया तो उसमें 2 दर्जन बकरियां थी। बकरी का मुंह टेप से बंद कर दिया गया था। घटना की जानकारी पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही स्थानीय थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल की। ग्रामीणों ने बताया कि बकरी की चोरी करने वाले इस गिरोह के सदस्य स्कॉर्पियो से गांवों में जाते हैं और बकरी चुराकर स्कॉर्पियो में रख लेते हैं। स्कॉर्पियो देख कर कोई भी इस बात का अंदाजा नहीं लगा सकता था कि 15 लाख की गाड़ी से बकरी की चोरी हो सकती है। ग्रामीणों के अनुसार, बकरी चिल्लाए नहीं और किसी को पता नहीं चले, इसके लिए बकरी के मुंह पर टेप लगा देते हैं। गाड़ी के शीशे को काला या धूल और कीचड़ लगा देते थे, ताकि गाड़ी के अंदर कोई देख न सके कि उसमें क्या रखा हुआ है।

मोमोज खाने की बात पर दो गुटों में हुई झड़प, बवाल के बाद पुलिस ने आरोपियों को हिरासत में लिया

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा के अल्फा-2 सेक्टर में मोमोज खाने को लेकर युवाओं के दो ग्रुप आपस में भिड़ गए। देखते ही देखते छात्रों में जमकर मारपीट शुरू हो गई। सूचना पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने 2 छात्रों को हिरासत में लिया है और आगे की कार्यवाही में जुट गई है। उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा के अल्फा-2 सेक्टर में मोमोज खाने को लेकर युवाओं के दो ग्रुप आपस में भिड़ गए। देखते ही देखते छात्रों में जमकर मारपीट शुरू हो गई। सूचना पर पहुंची स्थानीय पुलिस ने 2 छात्रों को हिरासत में लिया है और आगे की कार्यवाही में जुट गई है। जानकारी के मुताबिक, थाना बीटा-2 क्षेत्र के अंतर्गत एक मार्केट में बुधवार की रात युवाओं के दो गुटों में झड़प हो गयी। दुकानदार से पहले मोमोज लेने की बात को लेकर कहासुनी हुई। मामूली विवाद आगे बढ़कर मारपीट में तब्दील हो गयी। दोनों पक्षों की ओर से भयंकर लात-घूंसों चले। छात्रों में जमकर मारपीट हुई। मौके पर मौजूद किसी शख्स ने इस घटना की वीडियो बना लिया। जो अब इंटरनेट मीडिया पर वायरल हो रहा है। दोनों छात्र गलगोटिया यूनिवर्सिटी के है। जांच और आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। गौतमबुद्ध नगर कमिश्नरेट पुलिस के प्रवक्ता ने इस घटना के बारे में बताया कि मोमोज खाने को लेकर छात्रों में विवाद हो गया था। इसमें थाना बीटा-2 पुलिस ने 2 छात्रों को हिरासत में लिया गया है।

तनाब बढ़ाया कग्रेस् बिधायक् अधिराज पानीग्राही

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर। अधिराज ने उद्घाटन समारोह में जाकर कांग्रेस को भ्रमित किया। विधायक अधिराज मणिग्रही के महोत्सव में जाने से पार्टी में असंतोष । अधिराज ने समारोह में भाग लिया और परियोजना की प्रशंसा की। सूर रौताराय ने कहा कि अधिराज का ऐसा कहना ठीक नहीं है । पीसीसी अध्यक्ष और पर्यवेक्षकों को पता है खबर; वे फैसला करेंगे.अधिराज ने कहा कि उन्हें पार्टी की ओर से वहां जाने के लिए नहीं कहा गया था । पार्टी को परियोजना से दूर रहने या इसका विरोध करने के लिए नहीं कहा गया था। अधिराज ने कहा कि लोकापेंर में शामिल होकर उन्होंने पार्टी का अनुशासन नहीं तोड़ा है ।

पहाड़ में खिल रही धूप, मैदान में सता रही कोहरे की ठंड...जानें कब बदलेगा मौसम का मिजाज

एजेंसी

देहरादून। मैदानी इलाकों में सुबह-शाम कोहरा छाने से सूखी ठंड परेशान कर रही है। वहीं देहरादून एयरपोर्ट सहित देश के तमाम दूसरे शहरों में कोहरे के कारण उड़ानों पर बुरा असर पड़ रहा है। बिन बारिश और बर्फबारी के मौसम अपने तेवर दिखा रहा है। सर्दियों के मौसम में जहां पहाड़ों में धूप खिल रही हैं वहीं मैदानी इलाकों में कोहरा छाने से ठंड सता रही है। मौसम वैज्ञानिकों की माने तो अभी फिलहाल तीन-चार दिन बारिश के आसार नहीं हैं। मौसम विज्ञान केंद्र की ओर से जारी पूर्वानुमान के अनुसार मैदानी इलाकों में कोहरा छाया रहेगा, जबकि पर्वतीय जिलों में मौसम शुष्क रहेगा। केंद्र के निदेशक बिक्रम सिंह ने कहा, सर्दियों में बारिश न होने की वजह से सूखी ठंड परेशान कर रही है। अगले तीन-चार दिन भी प्रदेश भर में मौसम कुछ ऐसा ही रहेगा। जनवरी के चौथे सप्ताह से मौसम बदलने के आसार हैं। देहरादून एयरपोर्ट सहित देश के तमाम दूसरे शहरों में कोहरे के कारण उड़ानों पर बुरा असर पड़ रहा है। दिल्ली एयरपोर्ट सहित देश के कई दूसरे बड़े एयरपोर्ट पर एडवाइजरी जारी कर यात्रियों की मदद के लिए वॉर रूम भी स्थापित किए गए हैं। देहरादून एयरपोर्ट पर भी हवाई यात्रियों की मदद के लिए पांच सदस्यीय संयुक्त कमेटी का गठन किया गया है, जो एयरपोर्ट निदेशक के दिशा निर्देशों के अनुसार कार्य करेगी। देहरादून एयरपोर्ट पर पिछले 15 दिनों से खराब मौसम के कारण प्रतिदिन करीब चार उड़ानें विलंब से एयरपोर्ट पहुंच रही हैं। वहीं, दूसरे शहरों में खराब मौसम के कारण भी फ्लाइट विलंब से देहरादून एयरपोर्ट आ रही हैं। जिससे देहरादून एयरपोर्ट पर आने वाले और देहरादून से जाने वाले यात्रियों को घंटों विलंब से यात्रा करनी पड़ रही है। यात्रियों की सुविधा के लिए देहरादून एयरपोर्ट पर कमेटी का गठन किया गया है। पांच सदस्यीय कमेटी में विमानन कंपनी इंडिगो, विस्तारा, एटीसी, सीआईएसएफ ओर एयरपोर्ट अथॉरिटी के अधिकारियों को शामिल किया गया है, जो देहरादून एयरपोर्ट निदेशक की निगरानी में कार्य करेगी। देहरादून एयरपोर्ट पर फ्लाइट विलंब, डायवर्ट या कैंसिल होने पर यह कमेटी हवाई यात्रियों की मदद करेगी।

मंत्री रेखा आर्य के निर्देश, उत्तराखंड में 500 कोच तैयार करेंगे 2500 मेडलिस्ट खिलाड़ी

संवाददाता

देहरादून। मंत्री रेखा आर्य ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जो भी निर्माण कार्य शेष रह गए हैं उन्हें तय समय पर उच्च गुणवत्ता के साथ पूरा करा लिया जाए। खेल एवं युवा कल्याण मंत्री रेखा आर्य ने खेल निदेशालय में विभागीय अधिकारियों के साथ इस वर्ष प्रस्तावित राष्ट्रीय खेल और सीएम धामी की घोषणाओं के संबंध में बैठक ली। बैठक में विभागीय अधिकारियों से राष्ट्रीय खेलों के खेल मैदानों के निर्माण व अवस्थापना के बारे में जानकारी ली। कहा कि राष्ट्रीय खेल की मेजबानी मिलना राज्य के लिए खुशी की बात है। हम राष्ट्रीय खेलों की मेजबानी के लिए पूरी तरह तैयार हैं। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जो भी निर्माण कार्य शेष रह गए हैं उन्हें तय समय पर उच्च गुणवत्ता के साथ पूरा करा लिया जाए। हौसले से भरी उड़ान- पहनने को जूते और दौड़ने को मैदान नहीं...फिर भी 35 मेडल जीत साहिब ने नाम किया रोशन खेल मंत्री ने कहा कि राज्य में कार्यरत करीब 500 कोच पांच-पांच मेडलिस्ट को राष्ट्रीय खेलों के लिए तैयार करेंगे। ऐसे में राज्य के प्रतिभावान खिलाड़ियों की प्रतिभा सामने निखर कर आएगी और हम उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकेंगे। इस अवसर पर विशेष प्रमुख सचिव खेल अमित सिन्हा, निदेशक खेल जितेंद्र सोनकर, एडिशनल डायरेक्टर अजय अग्रवाल , प्राचार्य राजेश ममगाई सहित विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

हिमाचल में छह दिनों तक मौसम साफ रहने के आसार, मैदानी क्षेत्रों में कोहरे और शीतलहर का अलर्ट

संवाददाता

मंडी। प्रदेश के सभी भागों में छह दिनों तक मौसम साफ रहने के आसार हैं। मैदानी जिलों के कुछ भागों में दो दिनों तक कोहरा व शीतलहर का अलर्ट जारी हुआ है। हिमाचल प्रदेश के सभी भागों में छह दिनों तक मौसम साफ रहने के आसार हैं। वहीं, मैदानी जिलों के कुछ भागों में दो दिनों तक कोहरा व शीतलहर का अलर्ट जारी हुआ है। मौसम विज्ञान केंद्र शिमला के अनुसार राज्य के सभी भागों में 24 जनवरी तक मौसम साफ रहने का पूर्वानुमान है। जबकि 20 जनवरी तक ऊना और कांगड़ा, बिलासपुर और मंडी जिले के अलग-अलग स्थानों पर शीतलहर व जमीन पर पाला पड़ने की स्थिति जारी रहने के आसार हैं। वहीं, अगले दो दिनों के दौरान बिलासपुर, ऊना, कांगड़ा (नूरपुर), सिरमौर (पांवटा साहिब व धौलाकुआं) और सोलन (बद्दी) और नालागढ़) के अलग-अलग हिस्सों में सुबह के समय घना कोहरा छाने की संभावना है। ऐसे में सावधानी से यात्रा करने की सलाह दी गई है। हालांकि, गुरुवार को मैदानी जिलों में कोहरे व ठंड से कुछ राहत मिली और धूप खिली। औद्योगिक क्षेत्र बद्दी, बरोटीवाला, नालागढ़ में दो सप्ताह के बाद गुरुवार सुबह से धूप खिली। सुबह से लोगों को सूर्य देव के दर्शन हुए। धूप खिलने से लोगों को ठंड से राहत मिली है। लोगों को भारी ठंड और कोहरे से छुटकारा मिला है। इससे पहले यहां पर दोपहर को मात्र एक घंटे के लिए ही धूप निकल रही थी। सबसे ज्यादा प्रभावित यहां के उद्योग हो रहे थे। क्योंकि उनका कच्चा और तैयार माल पहुंचने में देरी हो रहे थी। मौसम विभाग की ओर से 1901 के बाद से सबसे कम वर्षा वाले शीर्ष 10 सालों का आंकड़ा जारी किया गया है। जिला दंडाधिकारी मंडी अरिंदम चौधरी ने मंडी जिला के कुछ मैदानी क्षेत्रों में सुबह के समय घने कोहरे के कारण बच्चों की स्वास्थ्य सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए बल्ह, सलवाहन तथा औट शिक्षा खंडों के सभी निजी व सरकारी स्कूलों की समय सारिणी में बदलाव किया है। जिसके तहत इन शिक्षा खंडों के सभी निजी व सरकारी स्कूल सुबह 9:30 बजे से 3:30 बजे तक खुले रहेंगे। आदेश के अनुसार हालांकि, संबंधित प्रारंभिक व उच्च शिक्षा उप निदेशक द्वारा उपरोक्त स्कूलों के बंद होने के समय को बाद में बढ़ाया जा सकता है। प्रारंभिक व उच्च शिक्षा उपनिदेशक व संबंधित क्षेत्र के स्कूलों के प्रधानाचार्य को इन आदेशों की कड़ाई से पालना करने को कहा गया है। यह आदेश तुरंत प्रभाव से लागू हो गए हैं। 31 जनवरी तक या आगामी आदेशों तक जारी रहेंगे। 26 जनवरी से 1 फरवरी के बीच हो सकती है बारिश-बर्फबारी मौसम विभाग के विस्तारित रेंज मौसम पूर्वानुमान के अनुसार ऊपर दिए गए मानचित्र के अनुसार 26 जनवरी से 1 फरवरी के बीच राज्य के कई भागों में बारिश-बर्फबारी हो सकती है। इस दौरान लाहौल-स्पीति, किन्नौर, शिमला, सिरमौर, सोलन, ऊना, हमीरपुर, बिलासपुर, मंडी और कुल्लू के कुछ हिस्सों के लिए औसत वर्षा की सामान्य बताई गई है। राज्य के बाकी हिस्सों के लिए भी सामान्य है। शिमला में न्यूनतम तापमान 3.1, सुंदरनगर 1.3 , भुंतर 0.4 , कल्पा -3.6, धर्मशाला 5.2, ऊना 2.2, नाहन 6.1, पालमपुर 3.0, सोलन 2.2, मनाली 0.2, कांगड़ा 3.8, मंडी 1.1, चंबा 3.2, डलहौजी 2.8 , जुब्बड़हट्टी 4.8, कुफरी 1.2, नारकंडा -1.2, रिकांगपिओ -0.6, सेऊबाग 0.5, धौलाकुआं 4.6, बरठीं 1.7, समदो -5.8, पांवटा साहिब 5.0, सराहन 1.5 और देहरागोपीपुर में 7.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

साल बारिश 2024 (18 जनवरी 2024 तक) -99.7

1966	-99.6
2007	-98.5
1902	-92.4
1986	-91.4
2018	-90.5
1916	-87.8
1936	-86.5
1963	-83.5
1998	-83.4
1914	-81.4

सरकार ने कमाए 2 अरब से ज्यादा रुपए, यूपी पुलिस भर्ती के लिए रिकॉर्ड आवेदन

संवाददाता

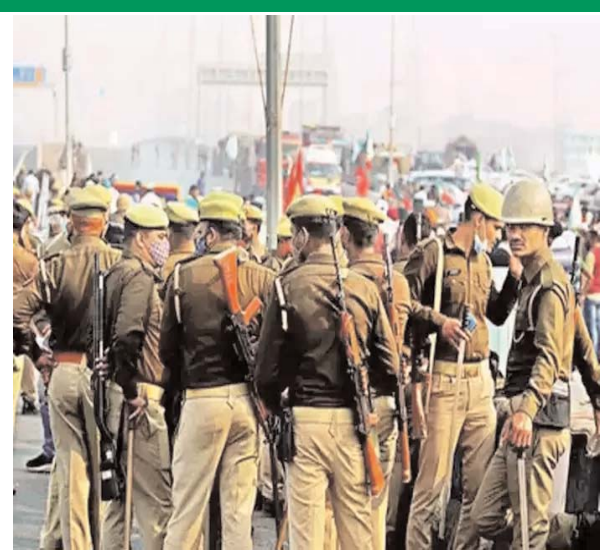

लखनऊ। यूपी पुलिस भर्ती के लिए रिकॉर्ड आवेदन किए गए हैं। इस बार महिलाओं ने भी बड़ी संख्या में आवेदन किया है। 20 जनवरी तक संशोधन किया जा सकता है। उत्तर प्रदेश सरकार ने यूपी पुलिस भर्ती के लिए 60,244 पदों के लिए सीधी भर्ती निकाली है। यूपी पुलिस भर्ती का नोटिफिकेशन 23 दिसंबर 2023 को आया था। 27 दिसंबर से यूपी पुलिस भर्ती के आवेदन शुरू हुए थे और 16 जनवरी 2024 आवेदन की आखिरी तारीख थी। 20 जनवरी तक शुल्क समायोजन एवं आवेदन में संशोधन किया जा सकता है। विंडो लॉक करते समय तक 50,14,924 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है, जिसमें 15 लाख महिलाओं ने भी आवेदन किया है। यूपी पुलिस भर्ती की उम्र सीमा 18-25 साल पुरुष और महिलाओं के लिए 28 साल रखी गई है। सामान्य के लिए 24102, ओबीसी 16264, ईडब्ल्यूएस 6024 और एससी 1204 पद आरक्षित किए गए हैं। सभी अभ्यर्थियों के लिए आवेदन की फीस 400 रुपए रखी गई है। विंडो लॉक होने तक कुल 50,14,924 अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। अगर कुल आवेदन फीस की बात करें तो 2,005,969,600 रुपए की कमाई सरकार को हुई है। यूपी पुलिस भर्ती की लिखित परीक्षा 18 फरवरी को होनी है। परीक्षा तीन पालियों में कराने की योजना है। एक पद के लिए 83 उम्मीदवार हैं। पहली बार है, जब इतनी भारी संख्या में महिलाओं ने आवेदन किया है। सरकार के लिए पुलिस भर्ती की लिखित परीक्षा कराना चुनौती बन गई है। सबसे ज्यादा परीक्षा केंद्र लखनऊ में बनाए गए हैं।

जाट आरक्षण को लेकर रेलवे का विशेष प्लान, पटरियां उखाड़ने की धमकी पर ऐसे निपटेगा विभाग

संवाददाता

भरतपुर/ जयपुर। राजस्थान में जाट समाज ने राज्य और केंद्र सरकार से ओबीसी आरक्षण की मांग की है। समाज ने सरकार को 22 जनवरी तक का अल्टीमेटम दिया और चेतावनी दी है कि अगर मांग पूरी नहीं होती है तो रेल की पटरिया उखाड़ दी जाएगी। इसके बाद रेलवे प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था को बढ़ाया है और जाट समाज की चेतावनी के बाद राजस्थान में जाट समाज ने केंद्र की नौकरियों में ओबीसी वर्ग के आरक्षण को लेकर हुंकार भर दी है। इसको लेकर अब समाज ने सरकार को 22 जनवरी तक का अल्टीमेटम दिया है। इसमें कहा है कि यदि उनकी मांग नहीं मानी गई तो 22 जनवरी के बाद रेल की पटरिया उखाड़ दी जाएंगी। इसी के साथ रेल रोकने और सड़क पर चक्का जाम लगाने का अभियान शुरू हो जाएगा। जाट समाज की इस चेतावनी के बाद रेलवे प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी है। इसको लेकर जयचोली रेलवे स्टेशन की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। इसके लिए अतिरिक्त जाब्ता भी लगाया गया है। जाट समाज के आरक्षण को लेकर अब रेलवे प्रशासन भी सतर्क हो गया है। बुधवार को महापड़ाव में 22 जनवरी से रेल की पटरिया उखाड़ने की चेतावनी के बाद रेलवे प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी है। इसको लेकर अतिरिक्त जाब्ता भी तैनात कर दिया है। जाट समाज की चेतावनी के बाद रेलवे प्रशासन ने जयचोली रेलवे स्टेशन के पास सुरक्षा की दृष्टि से आरपीएफ और जीआरपीएफ का जाब्ता तैनात कर दिया है। इसके अलावा दिल्ली मुंबई रेलवे ट्रैक की सुरक्षा भी बढ़ा दी गई है। रेलवे ट्रैक की सुरक्षा को लेकर 130 जवानों को तैनात किया गया है। रेलवे प्रशासन का कहना है कि आवश्यकता पड़ने पर और अधिक पुलिस बल बुलाया जाएगा। वहीं रेलवे इंटेलिजेंस ब्यूरो आंदोलन को लेकर पाल-पाल की नजर बनाए रखे हैं। धौलपुर जाट आरक्षण संघर्ष समिति के संयोजक नेम सिंह फौजदार का कहना है की केंद्र में भरतपुर और धौलपुर के जाट समाज को ओबीसी के आरक्षण का लाभ दिया जाये। इस मांग को लेकर विगत 17 जनवरी से महापड़ाव शुरू किया है। आज महापड़ाव का दूसरा दिन है। संघर्ष समिति ने रामलला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को देखते हुए 22 जनवरी तक गांधीवादी तरीके से आंदोलन करने का निर्णय लिया है। अभी तक सरकार द्वारा कोई भी सकारात्मक कदम नहीं उठाया है। उनका कहना था की 22 जनवरी तक हम शांति से बैठेंगे और 22 के बाद आंदोलन उग्र होगा उसके लिए सरकार जिम्मेदार होगी। भरतपुर-धौलपुर जाटों की ओर से आरक्षण की मांग साल 1998 से हो रही है। साल 2013 में जब केंद्र में मनमोहन सिंह की सरकार (क्र2) थी तो, उस वक्त भरतपुर और धौलपुर के जाटों सहित अन्य 9 राज्यों के जाटों को केंद्र में ओबीसी आरक्षण दिया गया। साल 2014 में बीजेपी की मोदी सरकार आई तो, सुप्रीम कोर्ट का सहारा लेते हुए 10 अगस्त 2015 को भरतपुर और धौलपुर की जाटों का केंद्र और राज्य दोनों ही जगह ओबीसी आरक्षण समाप्त कर दिया गया। इसके बाद जाटों ने फिर आरक्षण की मांग को लेकर आंदोलन का रास्ता अपनाया। तब लंबी लड़ाई के बाद 3 अगस्त 2017 को वसुंधरा सरकार ने भरतपुर और धौलपुर के जाटों को प्रदेश में ओबीसी आरक्षण का लाभ दिया था।

विश्व कप खेलेंगे रोहित शर्मा

विराट-संजू को लेकर दिया यह बयान

कोहली के बल्ले से रन नहीं निकलने से भले ही पूर्व क्रिकेटर खुश न हों, लेकिन कप्तान रोहित उनके इरादे ने निश्चित रूप से प्रभावित हैं। विराट कोहली और रोहित शर्मा दोनों ने अफगानिस्तान के खिलाफ तीन मैचों की सीरीज में टी20 प्रारूप में वापसी की। इससे उन्होंने यह संकेत दे दिया है कि टी20 विश्व कप की दौड़ में वह शामिल हैं। रोहित ने तो तीसरे टी20 में शतक लगाकर विपक्षी टीमों को चेतावनी भी दे दी है। पहले दो मैचों में खाता नहीं खोल पाने के बाद रोहित ने तीसरे टी20 में 121 रन की नाबाद पारी खेली और टीम इंडिया की जीत में अहम योगदान दिया। लोग उनकी फिटनेस पर सवाल करते हैं, लेकिन पूरे 20 ओवर तक बल्लेबाजी करने और 20 ओवर तक फील्डिंग करने के बाद हिटमैन ने सुपरओवर में दो बार बल्लेबाजी भी की थी। इतना ही नहीं विराट ने दूसरे टी20 में आत्मविश्वास से भरी छोटी मगर उपयोगी पारी खेलने के बाद तीसरे मैच में शून्य पर आउट हुए थे। दूसरे मैच में विराट ने 16 गेंदों में 29 रन बनाए थे। कोहली के बल्ले से रन नहीं निकलने से भले ही पूर्व क्रिकेटर खुश न हों, लेकिन कप्तान रोहित उनके इरादे ने निश्चित रूप से प्रभावित हैं। बेंगलुरु में तीसरे टी20 के बाद ब्रॉडकास्टर्स के साथ बातचीत में रोहित ने इस बात पर प्रकाश डाला कि कोहली और संजू सैमसन का इरादा कितना महत्वपूर्ण था। भले ही वे दोनों खाता नहीं खोल सके। विराट ने तीसरे टी20 में बल्ले से तो कमाल नहीं दिखाया, लेकिन फील्डिंग में उन्होंने कमाल कर दिया। विराट ने बाउंड्री पर हवा में उड़कर छह रन बचाए और फिर एक महत्वपूर्ण कैच भी लिया, जिसमें वह करीब 38 मीटर दौड़े थे। यह मैच में निर्णायक साबित हुआ था। रोहित ने मैच के बाद कहा, %हमें खिलाड़ियों को केवल उनकी स्थिति और क्रिकेट के तरीके के बारे में स्पष्ट करने की जरूरत है। उनको पता है कि जब वे मैदान पर उतरेंगे तो क्या उम्मीद करनी है। जैसा कि आपने देखा कोहली ने आते ही बड़े शॉट की कोशिश की। वह आम तौर पर ऐसा नहीं करते हैं, लेकिन उन्होंने इरादा दिखाया। सैमसन के साथ भी वह पहली गेंद पर आउट हो गए थे, लेकिन इरादा जाहिर किया था। भारतीय कप्तान से वनडे विश्व कप में दिल टूटने से लेकर उस मुकाम तक के सफर के बारे में भी पूछा गया जहां वह अभी खड़े हैं। रोहित ने कहा कि 50 ओवर का विश्व कप उनके लिए शिखर है, लेकिन वह टी20 विश्व कप ट्रॉफी हासिल करने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने कहा, %मैं अभी इस बारे में सोचना नहीं चाहता। 50 ओवर का विश्व कप मेरे लिए सर्वोच्च पुरस्कार है। ऐसा नहीं है कि मैं टी20 विश्व कप और टेस्ट चैम्पियनशिप को महत्वपूर्ण टूर्नामेंट के रूप में नहीं देखता। मैं वनडे विश्व कप देखते हुए बड़ा हुआ हूं और जब यह भारत में होता है तो इसका कोई मुकाबला नहीं हो पाता है। हमने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की, लेकिन दुर्भाग्य से हम जीत नहीं सके। पूरी टीम परेशान थी और मुझे यकीन है कि लोग भी काफी गुस्से में थे। अब हमारे पास टी20 विश्व कप जीतने का मौका है और उम्मीद है कि हम इसे जीतेंगे।

अजिंक्य रहाणे का रणजी ट्रॉफी में शर्मनाक प्रदर्शन

दो पारियों में हुए गोल्डन डक का शिकार

अजिंक्य रहाणे भारत के लिए 100 टेस्ट मैच खेलना चाहते हैं। रणजी ट्रॉफी में उनके प्रदर्शन को देखकर ऐसा लग रहा है कि उन्हें वापसी के लिए लंबा इंतजार करना पड़ सकता है। रहाणे मुंबई के लिए लगातार दो पारियों में खाता नहीं खोल पाए। भारत के अनुभवी बल्लेबाज अजिंक्य रहाणे पिछले कुछ महीनों से टेस्ट टीम से बाहर चल रहे हैं। रहाणे को इंग्लैंड के खिलाफ पांच टेस्ट मैचों की सीरीज के शुरुआती दो मुकाबले में नहीं चुना गया है। उन्होंने हाल ही में कहा था कि वह भारत के लिए 100 टेस्ट मैच खेलना चाहते हैं। रणजी ट्रॉफी में उनके प्रदर्शन को देखकर ऐसा लग रहा है कि उन्हें वापसी के लिए लंबा इंतजार करना पड़ सकता है। रहाणे मुंबई के लिए लगातार दो पारियों में खाता नहीं खोल पाए। रहाणे रणजी सीजन के पहले मैच में बिहार के खिलाफ नहीं खेल पाए थे। उसके बाद दूसरे मुकाबले में आंध्र प्रदेश के खिलाफ उन्हें एक पारी में बल्लेबाजी का मौका मिला था। वह पहली पारी में खाता खोले बगैर पवेलियन लौट गए थे। नीतीश रेड्डी ने उन्हें पहली ही गेंद पर आउट कर दिया था। मुंबई ने मैच को 10 विकेट से जीत लिया। ऐसे में उन्हें दूसरी पारी में बल्लेबाजी का मौका नहीं मिला। इस बात की उम्मीद जताई जा रही थी कि रहाणे आंध्र के खिलाफ अपने प्रदर्शन को भुलाकर तीसरे मुकाबले में बड़ी पारी खेल पाएंगे। हालांकि, ऐसा नहीं हुआ। वह सीजन के तीसरे मुकाबले में केरल के खिलाफ पहली पारी में शून्य पर पवेलियन लौट गए। इस बार बासिल थम्पी ने उन्हें पहली ही गेंद पर पवेलियन भेज दिया। लगातार दो गोल्डन डक के बाद उनकी वापसी की उम्मीदें भी धूमिल हो गई हैं। रहाणे ने तीसरे मुकाबले में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया। मुंबई के लिए जय गोकुल बिष्ट और भूपेन लालवानी पारी की शुरुआत करने उतरे। केरल के बासिल थम्पी ने पारी की पहली ही गेंद पर गोकुल बिष्ट को एलबीडब्ल्यू कर दिया। इसके बाद रहाणे बल्लेबाजी के लिए उतरे। थम्पी की गेंद उनके बल्ले से लगकर केरल के कप्तान और विकेटकीपर संजू सैमसन के हाथों में चली गई। इससे पहले रहाणे को इंग्लैंड के खिलाफ पहले दो टेस्ट के लिए भारत की टीम में नहीं चुना गया था। लगातार शून्य पर आउट होने के बाद इस बात की बहुत कम संभावना है कि उन्हें आखिरी तीन टेस्ट मैचों के लिए राष्ट्रीय टीम में वापस बुलाया जाएगा। पिछले साल भारत के वेस्टइंडीज दौरे के बाद से रहाणे ने कोई टेस्ट नहीं खेला है। वह दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ भारत की दो मैचों की टेस्ट सीरीज में भी नहीं खेले। रहाणे ने अब तक 85 टेस्ट मैचों में 38.46 की औसत से 5077 रन बनाए हैं। इस दौरान पूर्व भारतीय कप्तान के बल्ले से 12 शतक और 26 अर्द्धशतक निकले हैं।

एक साथ आ रहे कई नए फीचर्स, बदल जाएगा यूजर एक्सपेरियंस

नई दिल्ली। में वॉयस नोटस, मस्टीपल एडमिन के अलावा स्टेटस शेयरिंग और पोल जैसे फीचर्स आने वाले हैं। नए फीचर्स के आने के बाद WhatsApp चैनल का यूज लोग पहले के मुकाबले बेहतर तरीके से कर सकेंगे। WhatsApp ने पिछले साल चैनल फीचर पेश किया है जो कि ब्रॉडकास्टिंग टूल का ही एक नया अवतार है। लॉन्चिंग के बाद से WhatsApp चैनल के लिए कई सारे नए फीचर्स लॉन्च हुए हैं। अब WhatsApp अपने चैनल के लिए कई और नए टूल पेश कर रहा है। इसकी जानकारी मेटा के सीईओ मार्क जकरबर्ग ने दी है। WhatsApp में वॉयस नोटस, मस्टीपल एडमिन के अलावा स्टेटस शेयरिंग और पोल जैसे फीचर्स आने वाले हैं। नए फीचर्स के आने के बाद WhatsApp चैनल का यूज लोग पहले के मुकाबले बेहतर तरीके से कर सकेंगे।

Voice Updates: इस फीचर की मांग चैनल के लिए लंबे समय से हो रही थी। इस फीचर के आने के बाद व्हाट्सएप चैनल के एडमिन वॉयस नोट भेज सकेंगे। WhatsApp ने दावा किया है कि हर रोज उसके प्लेटफॉर्म से 7 बिलियन वॉयस नोट भेजे जा रहे हैं।

Polls: व्हाट्सएप के रेगुलर चैट के लिए पोल फीचर तो लंबे समय से है, लेकिन अब इसे चैनल पर भी लाया जा रहा है। इस फीचर के आने के बाद चैनल से जुड़े सभी फॉलोअर्स से किसी मुद्दे पर वोटिंग कराई जा सकेगी।

Share to Status: इस फीचर के आने के बाद फॉलोअर्स अपने फेवरेट चैनल के स्टेटस को अपनी स्टेटस पर शेयर कर सकेंगे।

Multiple Admins: नए फीचर के आने के बाद एक ही WhatsApp Channel के लिए कई लोगों को एडमिन बनाया जा सकेगा। इसका फायदा यह होगा कि बड़े चैनल को मैनेज करना आसान होगा। कहा जा रहा है कि एक चैनल के लिए 16 एडमिन बनाए जा सकेंगे।

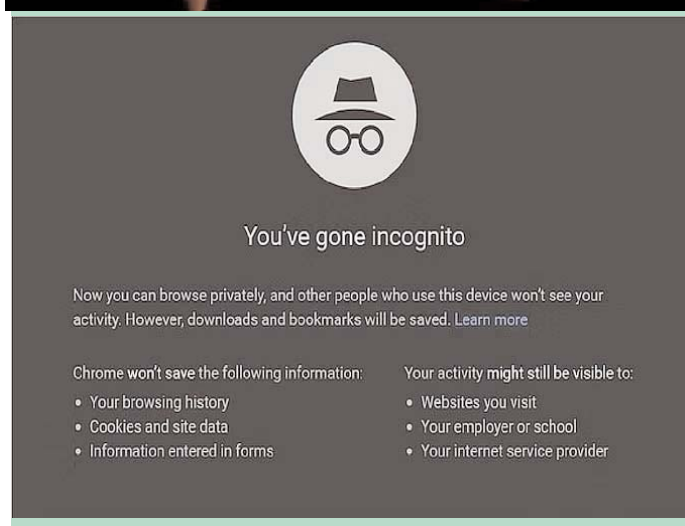

जवान का फोन हैक कर साइबर अपराधी ने लगाई चार लाख रुपये की चपत, बिना मांगे लोन देकर ऐसे की ठगी

आजकल बिना मांगे लोन देना और उसके बाद खाता खाली कर देना, ऐसे मामलों में बढ़ोतरी देखी गई है। पिछले दिनों, देश के सबसे बड़े केंद्रीय अर्धसैनिक बल %सीआरपीएफ% में एक ऐसा ही मामला देखने को मिला है... देश में साइबर अपराध के जरिए ठगी होने की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। सरकारी एवं निजी संस्थानों को टारगेट करने के अलावा आम व खास लोगों को भी साइबर अपराधी निशाना बना रहे हैं। आजकल बिना मांगे लोन देना और उसके बाद खाता खाली कर देना, ऐसे मामलों में बढ़ोतरी देखी गई है। पिछले दिनों, देश के सबसे बड़े केंद्रीय अर्धसैनिक बल %सीआरपीएफ% में एक ऐसा ही मामला देखने को मिला है। 181 बटालियन के हवलदार राजू पाल (बदला हुआ नाम) के साथ ऑनलाइन ठगी हो गई। कुछ ही मिनट में हवलदार पाल का 240000 रुपये का लोन स्वीकृत हो गया। खास बात है कि उसने ऐसा कोई आवेदन ही नहीं किया था। पैसे खाते में आ गए, लेकिन तभी चार बार में 385512 रुपये निकल गए। मामले की शिकायत 222.ष्4ड्डद्गह्म्द्बद्वद्ग.द्दश1.द्बठ्ठ पर की गई है। शिकायत के मुताबिक, दस जनवरी को सहायक उपनिरीक्षक %जीडी% ने इंटरनेट के माध्यम से अपनी गृह शाखा, भारतीय स्टेट बैंक का मोबाइल नंबर निकाला। उसकी खोज में 1965231104 व 2222742431 नंबर सामने आया। सहायक उपनिरीक्षक ने उक्त नंबरों पर कॉल करने का प्रयास किया, लेकिन कॉल नहीं लगी। तभी उसके पास एक अंजान मोबाइल नंबर, 7545064035 से कॉल आया। उसने कहा, आपने अभी भारतीय स्टेट बैंक में कॉल किया था। मैं भारतीय स्टेट बैंक का मैनेजर बोल रहा हूं। मैं आपकी क्या सहायता कर सकता हूं। सहायक उपनिरीक्षक ने उस व्यक्ति से कहा, मेरे लोन की किस्त हर माह की 15 तारीख को कटती है।

आया बड़े ही काम का अपडेट रात में यूज करने वाले बच्चे हुए परेशान

नई दिल्ली। इंस्टाग्राम ने इस फीचर को लॉन्च करते हुए कहा है कि सोना बच्चों के लिए बेहद जरूरी है। चाहे वह बड़ा हो या बच्चा हो सभी के लिए अच्छी नींद जरूरी है। Meta ने nighttime nudges नाम से एक नया फीचर्स लॉन्च किया है। मेटा का यह फीचर उन बच्चों के लिए है जो इंस्टाग्राम का अधिक इस्तेमाल करते हैं। इंस्टाग्राम का यह फीचर देर रात को बच्चों को फोन इस्तेमाल करने से रोकेगा। इस फीचर के ऑन होने के बाद यह रात में बच्चों को 10 मिनट से अधिक समय तक इंस्टाग्राम का इस्तेमाल नहीं करने देगा। प्रत्येक 10 मिनट पर यह रिमाइंडर देगा। इंस्टाग्राम ने इस फीचर को लॉन्च करते हुए कहा है कि सोना बच्चों के लिए बेहद जरूरी है। चाहे वह बड़ा हो या बच्चा हो सभी के लिए अच्छी नींद जरूरी है। इस फीचर को इसलिए लॉन्च किया गया है ताकि बच्चे देर रात तक फोन का इस्तेमाल ना करें और समय पर सो जाएं। इसके अलावा मेटा ने यह भी कहा है कि वह बच्चों की टाइमलाइन पर कंटेंट को पहले के मुकाबले बेहतर तरीके से फिल्टर भी करेगा।

Google खुद बताएगा कब हो रही आपकी ट्रैकिंग, अरबों रुपये फाइन देने के बाद आई अक्ल

नई दिल्ली। इन्कॉग्निटो मोड में यूजर इसलिए इंटरनेट सर्फिंग करता है, ताकि उसकी ट्रैकिंग ना हो और जिस वेबसाइट पर वह विजिट करता है वहां उसकी कूकीज स्टोर ना हो लेकिन गूगल ने यूजर्स को धोखा दिया। गूगल पर हाल ही में 5 बिलियन डॉलर का जुर्माना लगा है। गूगल पर यह जुर्माना क्रोम ब्राउजर के इन्कॉग्निटो मोड में यूजर्स की ट्रैकिंग को लेकर लगा है। इन्कॉग्निटो मोड में यूजर इसलिए इंटरनेट सर्फिंग करता है, ताकि उसकी ट्रैकिंग ना हो और जिस वेबसाइट पर वह विजिट करता है वहां उसकी कूकीज स्टोर ना हो लेकिन गूगल ने यूजर्स को धोखा दिया। रूस्क्क्2द्गह्यद्गह्ल की एक रिपोर्ट में दावा किया गया है कि गूगल ने फाइन देने के बाद अपनी पॉलिसी में बदलाव किया है। अब यदि इन्कॉग्निटो मोड में किसी यूजर्स की ट्रैकिंग होती है तो गूगल उन सभी यूजर्स को अलर्ट जारी करेगा। फिलहाल इस फीचर की टेस्टिंग हो रही है। गूगल ने बीटा टेस्टर को डिस्क्लेमर अपडेट किया है जिसमें लिखा है अब आप निजी तौर पर ब्राउजिंग कर सकते हैं और दूसरे लोग आपकी एक्टिविटी नहीं देख सकेंगे, हालांकि डाउनलोड्स, बुकमार्क और रिडींग लिस्ट सेव होंगी। फाइन लगने से पहले वाले डिस्क्लेमर में लिखा था कि कुछ वेबसाइट आपकी ट्रैकिंग कर सकती हैं। इन्कॉग्निटो मोड में यूजर्स की ट्रैकिंग को लेकर गूगल पर 2020 में मुकदमा हुआ था जिस पर आखिरी फैसला फरवरी 2024 में आने वाला है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई क्रियेषन्स, आषा काम्प्लवे स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एवं पहला तल, निधि काम्प्लेक्स, विकास नगर लखनऊ (उ0प्र0) से प्रकाषित।
RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं0- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा।